E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 121 | प्रयागराज, शुक्रवार 21 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

21 भारतीयों वाले जहाज पर ईरानी हमला, होर्मुज में आई.आर.जी.सी बोट्स ने फायरिंग की, शीशे टूटे सामान बिखरा क्रू ने छिपकर जान बचाई

तेहरान/नयी दिल्ली।होर्मुज स्ट्रेट में 21 भारतीय नाविकों वाले एक कंटेनर जहाज पर ईरानी नौकाओं ने फायरिंग की थी। यह घटना 22 अप्रैल को हुई थी। भारतीय नाविकों के संगठन (एफएसयूआई) ने अब इस घटना का वीडियो जारी किया है। वीडियो में ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (आई.आर.जी.सी) से जुड़ी नौकाओं को जहाज के आसपास देखा जा सकता है। जहाज पर फायरिंग के बाद शीशे टूटे और सामान बिखरा दिखाई देता है। एक जगह रॉकेट-प्रोपेल्ड ग्रेनेड दागे जाने का सीन भी दिखता है। हमले के दौरान जहाज का क्रू अपनी जान बचाने के लिए अंदर छिप गया। जहाज पर 21 भारतीय नाविक सवार थे और सभी सुरक्षित रहे। होर्मुज में भारतीय नाविकों की तैनाती पर रोक लगा चुकी सरकार-खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते सुरक्षा खतरे के बीच भारत ने 16 जुलाई को होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले जहाजों पर भारतीय नाविकों की नई तैनाती पर रोक लगा दी थी। यह रोक अगले आदेश तक लागू है। यह फैसला ऐसे समय लिया गया था, जब होर्मुज स्ट्रेट और आसपास के इलाकों में हुए हमलों में भारतीय नाविकों

की मौत हुई थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 28 फरवरी से अब तक इस क्षेत्र में हुए हमलों में कम से कम 14 भारतीय नाविकों की जान जा चुकी है। भारत ने जहाज मालिकों, जहाज मैनेजमेंट कंपनियों और नाविकों की भर्ती करने वालीं इ्रएथ कंपनियों को अरब की खाड़ी, होर्मुज स्ट्रेट और आसपास के समुद्री इलाकों में अतिरिक्त सतर्कता बरतने के निर्देश दिए थे। यह रोक भारतीय नाविकों की नई तैनाती पर है। भारत के बाहर से विदेशी शिपिंग कंपनियों द्वारा भर्ती किए गए नाविकों पर यह आदेश सीधे लागू नहीं होगा। यमन-सोमालिया के पास 2 जहाज हाईजैक, 22 भारतीय मौजूद-यमन और सोमालिया के पास समुद्री लुटेरों ने दो जहाजों को हाईजैक कर लिया है। दोनों जहाजों पर कुल 22 भारतीय नागरिक सवार हैं। अधिकारियों के मुताबिक, सभी भारतीय फिलहाल सुरक्षित हैं। यमन के पास 16 भारतीयः 20 अगस्त को यमन के तट से करीब 30 नॉटिकल मील दूर गल्फ ऑफ एडन में एमटी सिबू-1 को हथियारबंद समुद्री लुटेरों ने कब्जे में ले लिया। इरिट्रिया के झंडे वाले इस तेल टैंकर पर 20 क्रू मेंबर थे, जिनमें 16 भारतीय शामिल हैं।सोमालिया के पास 6 भारतीयः 17 अगस्त को सोमालिया के पुंटलैंड तट के पास कैमरून के झंडे वाले एक कार्गो जहाज को हाईजैक किया गया। जहाज पर 10 क्रू मेंबर थे, जिनमें 6 भारतीय शामिल हैं। हूती हमले में मारे गए 2 पाकिस्तानी नाविकों के शव कराची पहुंचे-हूती हमले में मारे गए 2 पाकिस्तानी नाविकों के शव गुरुवार को कराची पहुंच गए। हमले में घायल हुए 6 पाकिस्तानी नाविक भी सुरक्षित पाकिस्तान लौट आए हैं।

11 अगस्त को तंजानिया के झंडे वाले 'तिहामा' जहाज पर बाब-अल-मंदेब स्ट्रेट में हूतियों ने हमला किया था। इसमें 3 पाकिस्तानी और 1 इंडोनेशियाई नाविक की मौत हुई थी। दो घायल नाविक और दोनों मृत नाविकों के शव सऊदी एयरलाइंस की फ्लाइट से कराची पहुंचे, जबकि बाकी 4 घायल पीआईए की फ्लाइट से लौटे।

अमेरिका गल्फ देशों से सैनिकों को कम कर सकता है,ईरान जंग के चलते फैसला

वॉशिंगटन। ईरान के साथ युद्ध के बाद अमेरिका फारस की खाड़ी (गल्फ) में अपनी सैन्य मौजूदगी कम करने पर विचार कर रहा है। वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, पेंटागन समीक्षा कर रहा है कि क्या अब गल्फ देशों में पहले जितने अमेरिकी सैनिक रखने की जरूरत है। इसकी बड़ी वजह युद्ध में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को हुआ भारी नुकसान है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस दौरान 200 से ज्यादा अमेरिकी सैन्य सुविधाएं क्षतिग्रस्त या तबाह हुई हैं। फिलहाल अमेरिका जॉर्डन से लेकर ओमान तक फैले करीब 20 सैन्य ठिकानों पर लगभग 40 हजार सैनिक तैनात रखता है। हालांकि, इस पर अभी कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ है। पेंटागन, ज्वाइंट स्टाफ और अमेरिकी सेंट्रल कमांड मिलकर यह आकलन कर रहे हैं कि युद्ध के बाद मध्य पूर्व में अमेरिकी सैन्य तैनाती कैसी होनी चाहिए। बहरीन में अमेरिकी नौसेना के फिफ्थ फ्लीट का मुख्यालय है। वहीं कुवैत, कतर, संयुक्त अरब अमीरात और दूसरे गल्फ देशों में अमेरिका के बड़े सैन्य ठिकाने हैं।

इमरान खान अस्पताल से फिर जेल भेजे गए, देर रात हॉस्पिटल में भर्ती किया था, पूर्व पीएम को जेल में रखना सुरक्षित-डॉक्टर

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को मेडिकल जांच के बाद शुक्रवार

को शिफा इंटरनेशनल हॉस्पिटल से वापस अडियाला जेल भेज दिया गया है। जियो न्यूज के मुताबिक अस्पताल पहुंचने के बाद 6 डॉक्टरों की टीम ने इमरान की मेडिकल जांच की। जांच के बाद डॉक्टरों ने कहा कि खान को अस्पताल में भर्ती रखने की जरूरत नहीं है। वह जेल में ही सुरक्षित हैं। इसके बाद इमरान को वापस अडियाला जेल ले जाया गया और उनकी सेल में भेज दिया गया। इमरान को गुरुवार देर रात रावलपिंडी की अडियाला जेल से कड़ी सुरक्षा के बीच इस्लामाबाद के शिफा हॉस्पिटल लाया गया था। उनके अस्पताल पहुंचते ही सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। अस्पताल की सभी लाइटें बंद कर दी गईं, स्टाफ के मोबाइल फोन जमा करा लिए गए और बाहर मौजूद मीडिया को भी हटा दिया गया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ सरकार ने फिर रीव्यू पिटीशन दाखिल की-पाकिस्तान सरकार ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में दोबारा रीव्यू पिटीशन दाखिल की है। इसमें मांग की गई है कि इमरान खान को इलाज के लिए प्राइवेट अस्पताल भेजने के आदेश को बदला जाए। इससे पहले भी सरकार ने इसी मांग को लेकर रीव्यू पिटीशन दाखिल की थी। कोर्ट के रजिस्ट्रार ऑफिस ने जरूरी दस्तावेज पूरे नहीं होने की वजह से इसे लौटा दिया था। इमरान के वकील बोले- जेल प्रशासन ने पूर्व पीएम से मिलने नहीं दिया-सुप्रीम कोर्ट की तय समय सीमा बीतने के बाद इमरान खान के वकील खालिद यूसुफ चौधरी ने कहा कि वे अडियाला जेल के बाहर मौजूद थे, लेकिन उन्हें इमरान से मिलने नहीं दिया गया।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

अमेरिकन वॉरशिप जॉर्ज वॉशिंगटन की अरब सागर में तैनाती, 250 दिन से तैनात लिंकन की जगह ली, अब चीन के पास कोई अमेरिकी एयरक्राफ्ट नहीं

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी वॉरशिप यूएसएस जॉर्ज वॉशिंगटन ने गुरुवार से पश्चिम एशिया में ऑपरेशन शुरू कर दिया है। यह 250 दिन से क्षेत्र में तैनात यूएसएस अब्राहम लिंकन की जगह पहुंचा है। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने इसकी जानकारी दी है। लिंकन पर तैनात अमेरिकी सैनिक लंबे समय से ड्यूटी पर थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक सैनिकों ने जहाज पर खराब शौचालय, फफूंद लगे शॉवर, दूषित पानी

जैसी परेशानियों की शिकायत की थी। कुछ सैनिकों की तबीयत भी खराब हो गई थी जिसके बाद उनके परिवारों ने उनकी हालत को लेकर चिंता जताई थी। यूएसएस जॉर्ज वॉशिंगटन की तैनाती ऐसे समय हुई है जब ईरान को लेकर क्षेत्र में तनाव बना हुआ है। इससे पहले यह साउथ चाइना सी में तैनात था। अब वहां कोई अमेरिकी एयरक्राफ्ट मौजूद नहीं है। साउथ चाइना सी में अमेरिकी मौजूदगी घटने से नुकसान-यूएसएस जॉर्ज वॉशिंगटन के अरब सागर चले जाने से अब साउथ चाइना सी में अमेरिका का एक भी एयरक्राफ्ट कैरियर नहीं है। यह अमेरिका के लिए बेहद अहम इलाका है। यहां चीन, ताइवान, फिलीपींस, वियतनाम जैसे देश हैं। यहां से दुनिया के बड़े व्यापारिक समुद्री रास्ते गुजरते हैं और चीन इस इलाके के बड़े हिस्से पर अपना दावा करता है। अब जॉर्ज वॉशिंगटन के हटने से इस इलाके में अमेरिका की सैन्य ताकत कम हो गई है। ऐसे में किसी अचानक संकट या चीन के साथ तनाव बढ़ने पर अमेरिका को जवाब देने में थोड़ा ज्यादा वक्त लग सकता है। दो अमेरिकी वॉरशिप अरब सागर में तैनात-अमेरिका के पास 11 परमाणु एयरक्राफ्ट कैरियर हैं। इसमें से 2 एयरक्राफ्ट कैरियर जॉर्ज वॉशिंगटन और जॉर्ज बुश अरब सागर में तैनात हैं। वहीं, वॉरशिप लिंकन अरब सागर से लौट रहा है। यह पहली बार नहीं है, जब जॉर्ज वॉशिंगटन अरब सागर में पहुंचा है। 1990 के दशक और 2000 के शुरुआती वर्षों में भी इसने फारस की खाड़ी में कई ऑपरेशन किए थे। इनमें इराक के कुवैत पर हमले के दौरान की गई तैनाती, 1994 का ऑपरेशन विजिलेंट वॉरियर, 1998 का ऑपरेशन डेजर्ट थंडर और 2002 में अफगान युद्ध के दौरान ऑपरेशन एंड्योरिंग फ्रीडम शामिल हैं। दावा- अब्राहम लिंकन से नौसैनिकों ने कूदने की कोशिश की थी-अमेरिकी वॉरशिप यूएसएस अब्राहम लिंकन पर तैनात अमेरिकी नौसैनिक मानसिक और शारीरिक तनाव से गुजर रहे हैं। नेवी टाइम्स की रिपोर्ट में दावा किया गया था कि जहाज पर तैनात 6 अमेरिकी सैन्यकर्मियों ने जहाज से समुद्र में कूदने की कोशिश की थी। यूएसएस अब्राहम लिंकन करीब 9 महीने से समुद्र में है। ये वॉरशिप ईरान जंग के दौरान बिना किसी पोर्ट पर रुके समुद्र में था। इस पर करीब 5,000 अमेरिकी मरीन तैनात हैं।

मानसिक तनाव के साथ-साथ जहाज पर रहने की खराब होती सुविधाओं को लेकर भी शिकायतें सामने आई थी। कैलिफोर्निया के सांसद माइक लेविन के मुताबिक, एक समय खाने में सिर्फ आधा कप चावल दिए गए और लंबे समय तक गर्म पानी भी नहीं मिला।

पेरू में 6.7 तीव्रता का भूकंप,कई इलाकों में झटके हुए महसूस,नुकसान की खबर नहीं

पेरू। पेरू के दक्षिणी हिस्से में गुरुवार को 6.7 तीव्रता का शामिल हैं।पेरू प्रशांत महासागर के रिंग ऑफ फायर

भूकंप आया। भूकंप से नुकसान की कोई खबर नहीं मिली। भूकंप स्थानीय समय के अनुसार दोपहर 1 बजे (भारतीय समयानुसार रात 11:30 बजे) आया। इसका केंद्र आयाकूचो क्षेत्र के पैरिनाकोचास प्रांत में उपाहुआचो शहर से 38 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में था। भूकंप का केंद्र जमीन से 66.7 किलोमीटर गहराई में था। दक्षिणी पेरू के कई इलाकों में इसके झटके महसूस किए गए, जिनमें इंका और अरेकिपा भी का हिस्सा है। यह इलाका भूकंपीय गतिविधियों के लिए जाना जाता है, इसलिए यहां अक्सर भूकंप आते हैं। साल 2007 में इंका क्षेत्र के एक प्रांत में 7.9 तीव्रता का भूकंप आया था। इसमें करीब 600 लोगों की मौत हुई थी। इस साल वेनेजुएला में सबसे बड़ा भूकंप आया। 24 जून को 7.2 की तीव्रता से आए भूकंप में 6 हजार से ज्यादा मौतें हुईं थीं। इसके अलावा कोलंबिया में 10 अगस्त को आए भूकंप में 70 से ज्यादा जानें गईं थीं।

जिन्ना की बीमारी छिपाने वाले डॉक्टरों को पाकिस्तान सम्मानित करेगा,मुंबई के दो डॉक्टरों ने 1946 में बताया था-जिन्ना को गंभीर टीबी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान अपने संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना की गंभीर बीमारी की जानकारी गुप्त रखने वाले मुंबई के दो डॉक्टरों को देश के बड़े नागरिक सम्मानों में से एक निशान-ए-इम्तियाज देगा। दोनों डॉक्टरों ने 1946 में जिन्ना के एक्स-रे की जांच कर उन्हें गंभीर टीबी होने की जानकारी दी थी। पाकिस्तान के योजना मंत्री और अवॉर्ड्स कमेटी के अध्यक्ष अहसन

इकबाल ने सोशल मीडिया पर बताया कि दोनों डॉक्टरों को सम्मान दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि डॉक्टरों ने जिन्ना की बीमारी की बात किसी को नहीं बताई और उस समय 'चुपचाप लेकिन बहुत बड़ी जिम्मेदारी निभाई।' मुंबई के पारसी समुदाय से दोनों डॉक्टर-जिन्ना की बीमारी छिपाने वाले दोनों डॉक्टर मुंबई के पारसी समुदाय से थे। डॉ. जेआर पटेल और डॉ. जेए धायभो-कू ने 1946 में जिन्ना के एक्स-रे की जांच की थी। इसमें पता चला कि जिन्ना को गंभीर टीबी है। फ्रीडम एट मिडनाइट किताब के मुताबिक, डॉक्टरों को लगा था कि जिन्ना के पास सिर्फ 1 से 2 साल का समय बचा है। उनकी बीमारी के बारे में बहुत कम लोगों को पता था। इनमें उनकी बहन फातिमा जिन्ना और दोनों डॉक्टर शामिल थे।'जिन्ना की बीमारी सामने आती तो नहीं बनता पाकिस्तान' जिन्ना की बीमारी की बात छिपाए जाने को अक्सर भारत के बंटवारे और पाकिस्तान बनने से जोड़कर देखा जाता है। पाकिस्तान के मंत्री अहसन इकबाल ने बताया कि पूर्व ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने कहा था कि अगर उन्हें उस समय पता होता कि जिन्ना गंभीर रूप से बीमार हैं, तो वे भारत की आजादी कुछ महीने टाल सकते थे। उनके मुताबिक, ऐसा होता तो शायद पाकिस्तान नहीं बनता। हालांकि यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि जिन्ना की बीमारी सामने आने पर पाकिस्तान का बनना रुक ही जाता। पाकिस्तान बनने के करीब एक साल बाद जिन्ना की मौत 11 सितंबर 1948 को हुई थी । अब पाकिस्तान इन दोनों डॉक्टरों को मरणोपरांत सम्मान देने जा रहा है।

चीन बोला-जापान के पास 5500 परमाणु बम बनाने जितना प्लूटोनियम, कभी भी परमाणु हथियार बना सकता है

चीन ने जापान की परमाणु क्षमता को लेकर चिंता जताई है। रूस में चीन के राजदूत झांग हानहुई ने दावा किया कि जापान के पास करीब 44.4 टन अलग किया हुआ प्लूटोनियम है। उनके मुताबिक, इतनी मात्रा से सैद्धांतिक तौर पर करीब 5,500 परमाणु हथियार बनाए जा सकते हैं। झांग ने रूसी सरकारी समाचार एजेंसी तास से बातचीत में कहा कि जापान के पास इस्तेमाल किए गए परमाणु ईंधन को दोबारा प्रोसेस करके उसमें से प्लूटोनियम निकालने की तकनीक भी है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि जापान के पास 5,500 परमाणु हथियार हैं। यह चीन की ओर से प्लूटोनियम की मात्रा के आधार पर लगाया गया अनुमान है। जापान ने परमाणु हथियार रखने या बनाने की नीति नहीं अपनाई है। प्लूटोनियम क्या होता है और जापान के पास इतना कैसे आया? प्लूटोनियम एक रेडियोऐक्टिव तत्व है। यह परमाणु रिएक्टर में यूरेनियम के इस्तेमाल के दौरान बनता है। इस्तेमाल किए गए परमाणु ईंधन को दोबारा प्रोसेस करके इसमें से प्लूटोनियम अलग किया जा सकता है। जापान के पास इस्तेमाल किए गए परमाणु ईंधन को दोबारा प्रोसेस करने की तकनीक है। वह परमाणु ऊर्जा के लिए इस्तेमाल किए गए ईंधन को

दोबारा संसाधित करके उसमें से प्लूटोनियम निकालता रहा है। इसी वजह से कई दशकों में जापान के पास प्लूटोनियम का बड़ा भंडार जमा हुआ है। जापान के पास कुल कितना प्लूटोनियम है? झांग हानहुई के मुताबिक, 2024 के अंत तक जापान के पास करीब 44.4 टन अलग किया हुआ प्लूटोनियम था। इसके अलावा करीब 191 टन ऐसा प्लूटोनियम भी बताया गया है, जो अभी इस्तेमाल किए गए परमाणु ईंधन से अलग नहीं किया गया है। दोनों आंकड़ों में अंतर समझना जरूरी है। 44.4 टन वह प्लूटोनियम है जिसे ईंधन से अलग किया जा चुका है, जबकि 191 टन अभी ईंधन में मौजूद बताया गया है। चीन का 5,500 परमाणु हथियारों वाला दावा 44.4 टन अलग किए गए प्लूटोनियम की मात्रा पर आधारित है। इसे जापान के पास मौजूद तैयार परमाणु हथियारों की संख्या नहीं माना जा सकता। चीन जापान को लेकर चिंतित क्यों है? चीन के राजदूत ने कहा कि जापान परमाणु अप्रसार संधि यानी एनपीटी का मेंबर है और उसके पास परमाणु हथियार नहीं हैं। लेकिन जापान के पास इस्तेमाल किए गए परमाणु ईंधन को दोबारा प्रोसेस करके प्लूटोनियम निकालने की तकनीक है। झांग के मुताबिक, अगर जापान कभी परमाणु हथियार बनाने का फैसला करता है और उसके पास इसके लिए जरूरी क्षमता होती है, तो उसके लिए परमाणु हथियार बनाने की संभावना सिर्फ कल्पना नहीं रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि अगर टोक्यो परमाणु हथियार बनाने का फैसला करता है तो इससे पूर्वोत्तर एशिया में शक्ति संतुलन बिगड़ सकता है और इलाके में परमाणु हथियारों की होड़ शुरू होने का खतरा बढ़ सकता है।

बांग्लादेश को मिला नया राष्ट्रपति,बीएनपी के फखरुल जीते,विपक्षी उम्मीदवार को 167 वोटों से हराया, पीएम ने लाल गुलाब देकर नए राष्ट्रपति को बधाई दी

ढाका। बांग्लादेश में राष्ट्रपति चुनाव का नतीजा आ गया है। सत्ताधारी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (ँइ) के उम्मीदवार मिर्जा फखरुल इस्लाम आलमगीर देश के 23वें राष्ट्रपति चुने गए हैं। उन्हें संसद में 255 वोट मिले, जबकि विपक्षी गठबंधन के उम्मीदवार कर्नल (रिटायर्ड) ओली अहमद को 88 वोट मिले। नतीजे घोषित होने के बाद बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने लाल गुलाब देकर नए राष्ट्रपति को बधाई दी। बाद में दोनों एक दूसरे के गले भी

लगे।राष्ट्रपति चुनाव के लिए गुरुवार को संसद भवन में दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक मतदान हुआ। इस चुनाव में कुल 349 सांसदों ने मतदान किया। ओली अहमद बोले- सांसदों को वोट की आजादी नहीं- बांग्लादेश के राष्ट्रपति चुनाव में हार के बाद 11 दलों के गठबंधन के उम्मीदवार कर्नल (रिटायर्ड) ओली अहमद ने चुनाव पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव का नतीजा पहले से तय था और बांग्लादेश में लोकतंत्र नियंत्रित है। ढाका में गुरुवार को पत्रकारों से बात करते हुए ओली ने कहा कि किसी भी सांसद को अपनी मर्जी से वोट देने की आजादी नहीं है। पार्टी जिस उम्मीदवार को वोट देने को कहती है, सांसद को उसी के पक्ष में वोट देना पड़ता है। उन्होंने संविधान के आर्टिकल 70 का जिक्र करते हुए कहा कि अगर कोई सांसद अपनी पार्टी के फैसले के खिलाफ वोट करता है, तो उसकी संसद की सदस्यता जा सकती है। कर्नल (रिटायर्ड) ओली अहमद विपक्षी उम्मीदवारः- 'जनता का समर्थन मेरे साथ था. अलग-अलग सर्वे में 68-70फीसदी लोगों ने मेरा साथ दिया. जबकि मिर्जा फखरुल को सिर्फ 28 से 30फीसदी लोगों का सहयोग मिला था'.21 अगस्त को राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई जाएगी। बीएनपी ने ऐलान किया है कि मिर्जा फखरुल इस्लाम आलमगीर राष्ट्रपति चुने जाने के बाद 21 अगस्त की शाम को बंगभवन में राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे। पार्टी के मुख्य सचेतक नुरुल इस्लाम मोनी ने इसकी पुष्टि की है। अगर चुनाव परिणाम उम्मीद के मुताबिक रहे, तो आलमगीर बांग्लादेश के 24वें राष्ट्रपति बन जाएंगे। बीएनपी के खिलाफ 11 दलों का गठबंधन-350 सीटों वाली संसद में बीएनपी के पास 247 सांसद हैं। वहीं, मुख्य विपक्षी दल जमात-ए-इस्लामी की अगुआई वाले 11 दलों के गठबंधन के पास 81 सांसद हैं। राष्ट्रपति चुनाव में 349 सांसद वोट डालेंगे। चटगांव-4 सीट फिलहाल खाली है। अदालत के आदेश के बाद इस सीट से निर्वाचित उम्मीदवार की सदस्यता रद्द कर दी गई थी। आखिरी बार 1991 में चुनाव में मुकाबला हुआ था-बांग्लादेश में अब तक 12 राष्ट्रपति चुनाव हुए हैं। इनमें 8 बार राष्ट्रपति निर्विरोध चुने गए। संविधान लागू होने के बाद पहला राष्ट्रपति चुनाव 1974 में हुआ, जिसमें सांसदों ने वोट देकर मोहम्मद मोहम्मदुल्लाह को चुना। 1975 में संविधान संशोधन के बाद राष्ट्रपति का चुनाव सीधे

होर्मुज में अमेरिका पर ईरान भारी पड़ रहा,ट्रम्प की धमकी के बावजूद जहाज ईरानी रूट से जा रहे

तेहरान। होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले ज्यादातर जहाज अपनी पहचान या रास्ता छिपा रहे हैं। अल जजीरा की रिपोर्ट के

मुताबिक, 1 से 19 अगस्त के बीच 236 जहाज यहां से गुजरे, लेकिन 148 जहाजों की राह साफ तौर पर पता नहीं चल सकी। इन आंकड़ों से संकेत मिलता है कि ट्रम्प की धमकियों के बावजूद कई जहाज ईरानी रास्ते का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे यह सवाल उठता है कि होर्मुज स्ट्रेट में इस समय अमेरिका का दबदबा ज्यादा है या ईरान का।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का दावा है कि होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले समुद्री यातायात पर अमेरिकी सेना का नियंत्रण है। उन्होंने यह भी संकेत दिया है कि अमेरिका इस इलाके की जिम्मेदारी अपने हाथ में लेने की कोशिश कर सकता है। वहीं, ईरान का कहना है कि तेहरान की मंजूरी के बिना कोई जहाज होर्मुज स्ट्रेट से नहीं गुजर सकता। ऐसे में दोनों देशों के दावों के बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि वास्तव में इस रास्ते पर किसका कंट्रोल है। ईरान और अमेरिका के अलग-अलग दावे-ट्रम्प ने ओमान पर बमबारी की धमकी भी दी है। ओमान अमेरिका का सहयोगी है और होर्मुज स्ट्रेट के दूसरी तरफ ईरान के सामने स्थित है। स्ट्रेट का समुद्री इलाका ईरान और ओमान दोनों के अधिकार क्षेत्र में आता है। ट्रम्प की धमकी का मकसद मस्कट को तेहरान के साथ होर्मुज स्ट्रेट का संयुक्त संचालन करने के समझौते से रोकना बताया गया है। युद्ध के बाद दो रास्तों में बंटा होर्मुज-युद्ध शुरू होने से पहले होर्मुज को एक ही समुद्री रास्ता माना जाता था। जहाज तय रास्ते से गुजरते थे। उनका रास्ता बंदरगाह, जहाज के समझौते और सुरक्षा को देखकर तय होता था। लेकिन अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ने के बाद यहां दो अलग रास्तों की बात होने लगी। ईरानी रास्ताः यह होर्मुज के उत्तरी हिस्से में ईरान के तट के पास है। यह लारक और किश्म द्वीपों के करीब से गुजरता है और ईरान के बंदरगाहों और तेल टर्मिनलों तक जाता है।

नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर ने कौशल विकास के क्षेत्र में 22 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा पूरी की

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर (Naini Industrial Training Centre) ने वर्ष 2004 से अब तक की अपनी 22 वर्षों की यात्रा में अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। संस्थान की ओर से आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में संस्थान के विकास, सरकारी मान्यताओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और रोजगार उपलब्ध कराने की उपलब्धियों की जानकारी दी गई।संस्थान की स्थापना वर्ष 2004 में हुई थी। प्रारंभिक दौर में संस्थान द्वारा कंप्यूटर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम उपलब्ध कराया जाता था। इसके बाद वर्ष 2008 में NCVT/DGET, भारत सरकार से COPA ट्रेड की संबद्धता प्राप्त हुई। वर्ष 2009 में ऌघ्घ्, भारत सरकार के माध्यम से ऊघ्घ् की स्थापना की गई। संस्थान की तकनीकी शिक्षा की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि वर्ष 2012 में NCVT/DGET, भारत सरकार से Fitter ट्रेड की संबद्धता रही। वर्ष 2013 में NIOS से मान्यता प्राप्त Government of India authorised AVI के रूप में संस्थान को नई पहचान मिली। गुणवत्ता के क्षेत्र में संस्थान ने वर्ष 2014 में ISO प्रमाणन प्राप्त किया। इसके बाद वर्ष 2016 म Quality Council of India (QCI), भारत सरकार द्वारा Star Grading से संस्थान को सम्मानित किया गया। संस्थान की सामाजिक एवं शैक्षिक सेवाओं को भी विभिन्न संस्थाओं द्वारा सराहा गया। वर्ष 2021 में Lions Club International द्वारा संस्थान के कार्यों की सराहना की गई। वर्ष 2022 में विभिन्न मंत्रालयों तथा औद्योगिक संस्थानों से अनेक प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए। डिजिटल एवं कौशल शिक्षा के विस्तार की दिशा में वर्ष 2023 में NIELIT, भारत सरकार से BCC Centre के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। वर्ष 2024 में MSME mes Training Centre के रूप में संस्थान को मान्यता/प्रशिक्षण संबंधी अवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 2025 में Ministry of Defence mes Defence Persons के लिए Authorised Training Centre के रूप में संस्थान को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2026 में Fashion Design Course की शुरुआत की गई है, जिससे युवाओं को पारंपरिक तकनीकी ट्रेड के साथ आधुनिक एवं रचनात्मक क्षेत्र में भी प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर मिल सकें। संस्थान का मुख्य उद्देश्य युवाओं को गुणवत्तापूर्ण, व्यावहारिक और रोजगारपरक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। संस्थान के अनुसार यहां प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है और संस्थान का 100 प्रतिशत प्लेसमेंट का दावा है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में संस्थान के प्रतिनिधियों ने कहा कि पिछले 22 वर्षों में प्राप्त उपलब्धियां केवल संस्थान की सफलता नहीं, बल्कि विद्यार्थियों, प्रशिक्षकों, अभिभावकों, औद्योगिक संस्थानों तथा सहयोगी सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं के विश्वास का परिणाम हैं। संस्थान भविष्य में भी युवाओं को आधुनिक तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर ने इस अवसर पर विद्यार्थियों एवं युवाओं से अपील की कि वे बदलते रोजगार बाजार की जरूरतों के अनुसार कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करें और अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ें।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज नवागन्तुक पुलिस उपायुक्त नगर श्री सागर जैन, आईपीएस द्वारा आज दिनांक-21.08.2026 को पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई कर फरियादियों की शिकायतें सुनी गयीं तथा उनके समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज में बारिश के बाद शहर में 5 फीट तक हुए जलभराव को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को सख्त रुख अपनाया। कोर्ट ने नगर आयुक्त सीलम साईं तेजा को निर्देश दिया कि अगले 24 घंटे में शहर के निचले इलाकों से जलभराव खत्म कराएं। जहां भी पानी भरा है, वहां पर्याप्त संख्या में वाटर पंप लगाकर तत्काल पानी निकाला जाए।

'सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत' पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रसार निदेशालय, शुआट्स, प्रयागराज में कृषि विभाग, भदोही द्वारा प्रायोजित 'सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर

एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत' पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन आज दिनांक 21.08.2026 को प्रसार निदेशालय में सम्पन्न हुआ।समापन अवसर पर निदेशक प्रसार डा0 प्रवीन चरन ने कृषकों को बताया कि खेती के साथ-साथ कृषि वानिकी का प्रयोग करने से कृषकों को अतिरिक्त आय हो सकती है। उन्होनें कहा कि यदि कोई किसान अपने खेत में कृषि वानिकी के सिद्धान्तों का अनुपालन करे तो उसे वानिकी के साथ-साथ बीच की भूमि में खेती करने का भी अवसर प्राप्त हो सकता है जिसमें किसान औषधीय फसलों, हल्दी, सरसों, तुलसी एवं फूलों तथा सब्जियों की खेती करके अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कृषकों को संबोधित करते हुए बताया कि विगत् कुछ वर्षों से रासायनिक उर्वरकों की आसानी से उपलब्धता के कारण किसानों ने देशी खाद जैसे कम्पोस्ट एवं हरी खाद का प्रयोग करना लगभग बन्द कर दिया है जिससे भूमि में कार्बनिक पदार्थों की उपलब्धता कम हो गयी है एवं इसी कारण रासायनिक उर्वरक भी भूमि में तत्वों की उपलब्धता में अपना सम्पूर्ण योगदान नहीं कर पा रहे हैं इसी कारण प्रचुर मात्रा में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के उपरांत भी कृषकों की उत्पादकता में वृद्धि नहीं हो पा रही है। रासायनिक उर्वरक भी तभी काम करते हैं जब भूमि में कार्बनिक पदार्थो की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में हो। अतः किसानों को चाहिए कि खेती में कम्पोस्ट खाद, नाडेप कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट इत्यादि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग करें जिससे भूमि में कार्बनिक पदार्थो की आपूर्ति हो सके। उन्होनें कृषकों को पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करने के लिए बधाई दी व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। निदेशक प्रसार डा0 प्रवीन चरन ने प्रशिक्षण में प्रतिभागी कृषकों को प्रमाण-पत्र एवं प्रशिक्षण साहित्य प्रदान किया। समापन कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक प्रसार प्रो0 (डा0) ए0के0 चौरसिया ने किसानों को बीज उत्पादन तकनीक पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। वैज्ञानिक डा0 मनीष कुमार केसरवानी ने किसानों को कम लागत में अधिक उत्पादन कैसे प्राप्त करें के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिवस पर डा0 योगेश चन्द्र श्रीवास्तव ने कृषकों को मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी एवं डा0 मनीष कुमार केसरवानी ने कृषकों को मूल्य संवर्द्धन एवं प्रसंस्करण की विभिन्न तकनीकियों से परिचित कराया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डा0 शैलेन्द्र कुमार सिंह, डा0 टी. डी. मिश्रा, डा0 सरवेन्द्र कुमार एवं डा0 योगेश चन्द्र श्रीवास्तव उपस्थित रहे। प्रशिक्षण समन्वयक डा0 शिशिर कुमार के द्वारा निदेशक प्रसार, कृषि वैज्ञानिकों एवं प्रशिक्षणार्थी कृषकों को धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

UPSIA के तत्वावधान में औद्योगिक बैठक, पुराने आर.एम.यू बदलने और ब्रेकर-वायर सुधार के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर प्रदेश स्टेट इंडस्टियल एसोसिएशन

चर्चा हुई। विशेष रूप से पुराने आर.एम.यू (Ring Main Unit) को बदलकर नए आर.एम.यू लगाए जाने तथा जर्जर ब्रेकर और विद्युत वायर को बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। बैठक में अधिकारियों को पुराने एवं खराब आर.एम.यू को चिन्हित कर नए आर.एम.यू लगाने तथा आवश्यकता के सहित विद्युत विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। वहीं ऌइऋ के अध्यक्ष अरविंद राय, राजीव नायर, नीरज कुमार, के. खान, अनंत चंद्र एवं एमडी इजराइल, अनुज तिवारी, प्रिंस जायसवाल, राजीव कुंद्रा तथा अद्वैत मोहन डॉ. पुनीत अरोरा सहित अन्य औद्योगिक प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। औद्योगिक प्रतिनिधियों ने विद्युत विभाग के समक्ष उद्योगों की समस्याओं को रखते हुए उनके त्वरित समाधान और विभाग एवं उद्योग जगत के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता बताई। अधिकारियों ने समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया। बैठक को औद्योगिक क्षेत्रों में विद्युत व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

पुराने आर.एम.यू, ब्रेकर और वायर बदलने के निर्देशों से औद्योगिक इकाइयों में विद्युत आपूर्ति की विश्वसनीयता और सुरक्षा बेहतर होने की उम्मीद है।

ऊंचाहार देहात ग्राम पंचायत में रु6.88 लाख की वित्तीय अनियमितता, अंतिम जांच में तत्कालीन प्रधान एवं सचिव दोषी

दोषी पाए गए निवर्तमान प्रधान को प्रशासक पद से हटाया गया, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) होंगे नए प्रशासक

रायबरेली। शुक्रवार को जिला मैजिस्ट्रेट सरनीत कौर ब्रोका ने बताया है कि उत्तर प्रदेश विधान सभा की मा0 याचिका समिति के निर्देशों के क्रम में ग्राम पंचायत ऊंचाहार देहात, विकास खण्ड ऊंचाहार से संबंधित शिकायत/याचिका संख्या-1011/2019 की विस्तृत जांच कराई गई। प्रकरण में संयुक्त आयुक्त, मनरेगा, ग्राम्य विकास, उत्तर प्रदेश द्वारा 07 फरवरी 2025 को गठित जांच समिति तथा मा0 उच्च न्यायालय, लखनऊ खण्डपीठ के 06 जनवरी 2026 के आदेश के अनुपालन में गठित अंतिम जांच समिति द्वारा उपलब्ध अभिलेखों, स्थलीय निरीक्षण एवं तकनीकी परीक्षण के आधार पर जांच की गई।जांच में ग्राम पंचायत द्वारा लगभग 104 कार्यों से संबंधित पत्रावलियां उपलब्ध नहीं कराए जाने के कारण इन कार्यों की जांच नहीं हो सकी। उपलब्ध अभिलेखों एवं स्थलीय सत्यापन में विभिन्न इंटरलॉकिंग एवं खड़ंजा निर्माण कार्यों में माप पुस्तिका तथा मौके पर पाए गए निर्माण के बीच अंतर पाया गया। छह निर्माण कार्यों में कुल रु1,99,532.24 का अधिक भुगतान/वित्तीय अनियमितता पाई गई। इसके अतिरिक्त ह्यूम पाइप स्थापना, इंडिया मार्का हैंडपंपों के रीबोर एवं प्लेटफार्म निर्माण तथा स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत से संबंधित कार्यों में भी अनियमितताएं सामने आईं। जांच के अनुसार इन कार्यों में कुल रु4,88,679.16 का अधिक भुगतान/दुरुपयोग पाया गया। इस प्रकार अंतिम जांच आख्या के अनुसार ग्राम पंचायत ऊंचाहार देहात में कुल

रु6,88,211.40 की वित्तीय अनियमितता पाई गई। अंतिम जांच में तत्कालीन ग्राम प्रधान/प्रशासक धनराज यादव तथा ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम विकास अधिकारी रूद्र प्रताप सिंह को वित्तीय अनियमितताओं के लिए उत्तरदायी पाया गया। ग्राम प्रधान को अपना पक्ष रखने का पर्याप्त अवसर दिए जाने के बावजूद उनके द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण में आरोपों के निराकरण के लिए ठोस साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए गए। जांच में यह भी पाया गया कि राज्य वित्त आयोग एवं 15वें वित्त आयोग से संबंधित कार्यों के अभिलेख समय से उपलब्ध नहीं कराए गए। संबंधित सचिव के विरुद्ध नियमानुसार प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई है तथा वित्तीय अनियमितता की धनराशि की वसूली के लिए उत्तर प्रदेश पंचायत राज अधिनियम की सुसंगत धाराओं के अंतर्गत कार्रवाई की गई है। अंतिम जांच में कुल रु6,88,211.40 की वित्तीय अनियमितता के लिए ग्राम प्रधान एवं सचिव को दोषी पाए जाने के बाद उत्तर प्रदेश पंचायत राज अधिनियम, 1947 की धारा 27(2) के प्रावधानों के अनुसार धनराशि की आधी-आधी वसूली किए जाने की कार्रवाई की गई है। इसके तहत रु3,44,105/- सचिव से तथा रु3,44,105/- निवर्तमान ग्राम प्रधान/प्रशासक से वसूल किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। संबंधित धनराशि ग्रामनिधि में जमा कर उसकी रसीद जिला पंचायत राज अधिकारी कार्यालय में प्रस्तुत की जानी है।उत्तर प्रदेश पंचायत राज अधिनियम एवं संबंधित जांच नियमावली के प्रावधानों के अनुसार अंतिम जांच में वित्तीय एवं अन्य अनियमितताओं के लिए दोषी पाए गए प्रधान द्वारा वित्तीय एवं प्रशासनिक शक्तियों का प्रयोग किया जाना अनुमन्य नहीं है। ग्राम पंचायत का कार्यकाल समाप्त होने के बाद धनराज यादव को ग्राम पंचायत ऊंचाहार देहात में प्रशासक के रूप में नियुक्त किया गया था। अंतिम जांच में धनराज यादव को दोषी पाए जाने तथा उनके विरुद्ध वित्तीय अनियमितताओं की कार्रवाई लंबित/प्रचलित होने के दृष्टिगत शासन के प्रावधानों के अनुसार उन्हें प्रशासक पद से हटाने का निर्णय लिया गया है। धनराज यादव के स्थान पर सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), ऊंचाहार को ग्राम पंचायत ऊंचाहार देहात का प्रशासक नियुक्त किया गया है।

विश्व उद्यमी दिवस पर राष्ट्रीय ग्राम शिल्प महोत्सव-2026 के पोस्टर का विमोचन-

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। लोक संस्कृति, पारंपरिक शिल्प एवं ग्रामोद्योग के संरक्षण और प्रोत्साहन के उद्देश्य से एक दशक से निरंतर आयोजित हो रहे राष्ट्रीय ग्राम शिल्प महोत्सव-2026 के पोस्टर का विमोचन विश्व उद्यमी दिवस के अवसर पर किया गया। पीयूष ग्रामोद्योग सेवा समिति, प्रतापगढ़ एवं सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाला यह महोत्सव 23 अक्टूबर से 06 नवंबर 2026 तक एन.एस.आई.सी. परिसर, उद्योग नगर, नैनी, प्रयागराज में आयोजित किया जाएगा। महोत्सव का उद्देश्य देश की समृद्ध लोक परंपराओं, लोककलाओं, हस्तशिल्प, स्वदेशी उत्पादों एवं ग्रामोद्योग को व्यापक मंच उपलब्ध कराना तथा शिल्पकारों और ग्रामीण उद्यमियों को बाजार से जोड़ना है। विगत दस वर्षों में यह आयोजन लोक कलाकारों, दस्तकारों, शिल्पकारों एवं ग्रामोद्योग से जुड़े उद्यमियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। इस अवसर पर महोत्सव के मुख्य संरक्षक एवं उत्तर प्रदेश सरकार के अपर शासकीय अधिवक्ता शशांक शेखर पाण्डेय ने कहा कि हमारी लोक कलाएं और पारंपरिक शिल्प केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण समाज की आर्थिक शक्ति और आत्मनिर्भरता का आधार भी हैं। राष्ट्रीय ग्राम शिल्प महोत्सव जैसे आयोजन इस विरासत के संरक्षण के साथ-साथ शिल्पकारों को सम्मान, पहचान और बाजार उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। उन्होंने प्रयागराजवासियों से महोत्सव में सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया। पीयूष ग्रामोद्योग सेवा समिति के सचिव दत्तात्रेय पाण्डेय ने कहा कि संस्था पिछले एक दशक से देश के विभिन्न क्षेत्रों के शिल्पकारों, लोक कलाकारों एवं ग्रामोद्योग से जुड़े उद्यमियों को एक मंच उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है। हमारा उद्देश्य पारंपरिक हुनर को केवल संरक्षित करना नहीं, बल्कि उसे आधुनिक बाजार और नई पीढ़ी से जोड़कर आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाना है। महोत्सव के सांस्कृतिक संयोजक अभिषेक सिंह ने बताया कि इस वर्ष देश के विभिन्न अंचलों की लोक संस्कृति एवं लोक कलाओं को विशेष स्थान दिया जाएगा। लोकगीत, लोकनृत्य एवं पारंपरिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से देश की विविध लोक परंपराओं को प्रयागराज के दर्शकों तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि महोत्सव कला, संस्कृति, शिल्प और स्वदेशी उत्पादों का ऐसा जीवंत संगम बनाने का प्रयास है, जिसमें हर आयु वर्ग की भागीदारी हो। उन्होंने बताया कि महोत्सव में विभिन्न क्षेत्रों के हस्तशिल्प, हस्तकला, ग्रामोद्योग उत्पाद, स्वदेशी वस्तुओं एवं पारंपरिक शिल्प की प्रदर्शनी एवं बिक्री के साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। इससे लोगों को देश के विभिन्न हिस्सों की कला, संस्कृति और पारंपरिक उत्पादों से सीधे जुड़ने का अवसर मिलेगा। आयोजक संस्था के प्रतिनिधियों ने कहा कि वर्तमान समय में स्थानीय उत्पादों एवं पारंपरिक हुनर को नए बाजार की आवश्यकता है। ऐसे आयोजन शिल्पकारों एवं ग्रामीण उद्यमियों के लिए महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध कराते हैं। महोत्सव के माध्यम से 'स्वदेशी अपनाएं, स्थानीय को प्रोत्साहन दें' की भावना को भी मजबूती प्रदान करने का प्रयास किया जाएगा। आयोजकों ने प्रयागराज वासियों, कला-संस्कृति प्रेमियों, स्वदेशी उत्पादों में रुचि रखने वाले नागरिकों एवं आमजन से महोत्सव में अधिकाधिक संख्या में सहभागिता करने की अपील की। उन्होंने कहा कि लोक कलाकारों एवं शिल्पकारों का उत्साहवर्धन हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखने और उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने की सामूहिक जिम्मेदारी है। इस अवसर पर महोत्सव के सांस्कृतिक सह-संयोजक आशीष शर्मा एवं नीतू राय सहित आयोजन समिति के सदस्य तथा सुप्रसिद्ध लोक गायक कृष्ण कुमार सत्यार्थी, वरिष्ठ कवि संतोष शुक्ला समर्थ, वरिष्ठ कवयित्री वन्दना शुक्ला, प्रतिमा मिश्रा, दिलीप चौधरी, सीमा त्रिपाठी, आयुषी पाण्डेय, आचार्य कुमकुम, विजय कनौजिया, गौरव त्रिपाठी, प्रदीप विश्वकर्मा, दयानन्द द्विवेदी एवं हरिमोहन पाण्डेय आदि उपस्थित रहे। पोस्टर विमोचन के साथ ही राष्ट्रीय ग्राम शिल्प महोत्सव-2026 की तैयारियों को औपचारिक रूप से गति मिल गई है। आयोजकों ने विश्वास व्यक्त किया कि यह महोत्सव लोक संस्कृति एवं पारंपरिक शिल्प के संरक्षण, शिल्पकारों के सम्मान, स्वदेशी उत्पादों के प्रोत्साहन तथा ग्रामोद्योग एवं ग्रामीण उद्यमिता को सशक्त बनाने की दिशा में प्रभावी पहल सिद्ध होगा।

विधवा पेंशन लाभार्थी 25 अगस्त तक उपलब्ध कराएं फैमिली आईडी/राशन कार्ड संख्या

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला प्रोबेशन

अधिकारी शक्ति त्रिपाठी ने बताया कि महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित पति की मृत्यु के उपरान्त निराश्रित महिला पेंशन (विधवा पेंशन) प्राप्त कर रही समस्त लाभार्थियों से अनुरोध है कि जिन लाभार्थियों का किसी कारणवश राशन कार्ड नहीं बन पाया है, वे जनसुविधा केन्द्र के माध्यम से फैमिली आईडी बनवाकर फैमिली आईडी/राशन कार्ड संख्या अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में 25 अगस्त 2026 तक अनिवार्य रूप से उपलब्ध करा दें।

उन्होंने बताया कि निर्धारित तिथि तक फैमिली आईडी/राशन कार्ड संख्या उपलब्ध न कराने की स्थिति में वित्तीय वर्ष 2026-27 की प्रथम तिमाही की पेंशन का भुगतान किया जाना संभव नहीं होगा।

इलाहाबाद हाईकोर्ट में 2 घंटे बताते रहे नगर आयुक्त,कोर्ट ने कहा- 24 घंटे में जलभराव खत्म करें, मास्टर प्लान बनाकर रिपोर्ट दें

प्रयागराज। संगमनगरी प्रयागराज में बारिश के बाद शहर में 5 फीट तक हुए जलभराव को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को सख्त रुख अपनाया। कोर्ट ने नगर आयुक्त सीलम साईं तेजा को निर्देश दिया कि अगले 24 घंटे में शहर के निचले इलाकों से जलभराव खत्म कराएं। जहां भी पानी भरा है, वहां पर्याप्त संख्या में वाटर पंप लगाकर तत्काल पानी निकाला जाए। कोर्ट ने नगर आयुक्त सीलम साईं तेजा से प्रभावित इलाकों की तत्काल कार्ययोजना तैयार कर अगली सुनवाई में पेश करने को कहा है। कोर्ट में सुनवाई के दौरान नगर आयुक्त करीब 2 घंटे तक सफाई देते रहे। हाईकोर्ट ने साफ किया कि फिलहाल जलभराव को दूर करें, लेकिन समस्या का समाधान केवल पंप लगाकर पानी निकालने तक सीमित नहीं रहेगा। कोर्ट ने जलनिकासी की स्थायी व्यवस्था पर भी रिपोर्ट मांगी है। मामले की अगली सुनवाई 25 अगस्त को दोपहर 2 बजे होगी।

अवैध कच्ची शराब के अड्डों पर आबकारी विभाग की दबिश, 28 लीटर शराब बरामद व दो अभियोग पंजीकृत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। आबकारी आयुक्त, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा समय-समय पर दिए गए निर्देशों के क्रम में विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका एवं पुलिस अधीक्षक रवि कुमार के आदेशानुसार जिला आबकारी अधिकारी के कुशल नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-3 की टीम द्वारा विभिन्न स्थानों पर दबिश की कार्रवाई की गई। आबकारी टीम द्वारा तहसील लालगंज के थाना खीरो एवं गुरुबख्शगंज अंतर्गत ग्राम रघुनाथ खेड़ा तथा भीतरगांव बाजार में अवैध कच्ची शराब बनाने के अड्डों एवं संदिग्ध घरों पर दबिश दी गई।

कार्रवाई के दौरान 28 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की गई तथा आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं में 02 अभियोग पंजीकृत किए गए।

जिले में अवैध शराब के निर्माण एवं बिक्री पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए इस प्रकार की प्रवर्तन कार्रवाई आगे भी निरंतर जारी रहेगी।

कृषि यंत्रों की ई-लॉटरी में 195 कृषि यंत्रों के लिए कृषकों का चयन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शुक्रवार को उप कृषि निदेशक हिमांशु पाण्डेय ने बताया कि जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति की उपस्थिति में कृषि भवन सभागार में दोपहर 12:00 बजे से 03:00 बजे तक कृषि यंत्रों की ई-लॉटरी सम्पन्न कराई गई। ई-लॉटरी में जनपद के समस्त विकास खण्डों से आए कृषकों ने प्रतिभाग किया तथा प्रक्रिया का लाइव सजीव प्रसारण भी देखा। ई-लॉटरी के माध्यम से दस हजार रुपये से अधिक अनुदान वाले कृषि यंत्रों, जिनमें कस्टम हायरिंग सेंटर, फार्म मशीनरी बैंक, कम्बाइन हार्वेस्टर विद सुपर स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम, मिनी राइस मिल, कृषि ड्रोन, रोटावेटर, मल्टीकॉप थ्रेसर, लेजर लैण्ड लेवलर, स्ट्रॉ रीपर, हैरो एवं सुपर सीडर आदि शामिल हैं, के लिए कुल 195 कृषि यंत्रों हेतु कृषकों का चयन किया गया। उप कृषि निदेशक हिमांशु पाण्डेय द्वारा चयनित कृषकों को समय से कृषि यंत्र क्रय कर बिल अपलोड करने के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई।

इस अवसर पर जिला कृषि अधिकारी अखिलेश पाण्डेय, जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा, अग्रणी जिला प्रबन्धक, भूमि संरक्षण अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक दरियापुर तथा नामित प्रगतिशील कृषक सहित संबंधित अधिकारी एवं कृषक उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी के निर्देश पर ग्राम ऐमापुर में अपर जिलाधिकारी ने सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शुक्रवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देश के क्रम में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव मिश्र द्वारा ग्राम ऐमापुर, मजरे ऐमापुर, परगना कुमरावां, तहसील महाराजगंज में पहुंचकर जलभराव एवं अन्य स्थानीय समस्याओं के संबंध में स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी द्वारा ग्रामवासियों से संवाद कर उनकी समस्याओं को सुना गया तथा मौके की स्थिति का जायजा लिया गया। ग्रामीणों द्वारा जलभराव, पेयजल एवं अन्य समस्याओं से अवगत कराया गया। अपर जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि शासन एवं जिला प्रशासन उनकी समस्याओं के समाधान के लिए पूरी संवेदनशीलता एवं तत्परता के साथ उनके साथ खड़ा है। जनहित से जुड़ी समस्याओं के निराकरण में किसी प्रकार की कमी नहीं होने दी जाएगी। अपर जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि मौके की निरंतर निगरानी रखी जाए। यदि किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न होती है तो तत्काल आवश्यक सहयोग एवं कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। साथ ही ग्राम प्रधान एवं कोटेदार के साथ समन्वय स्थापित करते हुए कार्य किया जाए, ताकि ग्रामीणों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

उन्होंने जल निकासी सहित अन्य समस्याओं के प्रभावी एवं समयबद्ध निराकरण हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा स्थिति पर लगातार निगरानी बनाए रखने को कहा।

ग्रामीणों ने प्रशासन द्वारा मौके पर पहुंचकर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुने जाने एवं समाधान का आश्वासन दिए जाने पर संतोष व्यक्त किया। इस मौके पर जिला आपदा विशेषज्ञ अंकित पाण्डेय भी साथ उपस्थित रहे।

ब्रांडेड के नाम पर बेच रहे थे नकली प्लाईवुड

प्रयागराज। प्रयागराज में नामी ब्रांड के नाम पर नकली प्लाई बेचने का मामला सामने आया है। सिविल लाइंस के स्टेनली रोड स्थित श्री श्याम प्लाई हाउस में कंपनी के अधिकृत प्रतिनिधि और पुलिस टीम ने छापा मारा। तलाशी के दौरान दुकान से ग्रीनवुड के नकली मार्का लगे 120 प्लाई बोर्ड बरामद हुए। कंपनी के प्रतिनिधि की शिकायत पर सिविल लाइंस पुलिस ने दुकान संचालक सुनील अग्रवाल के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।दिल्ली निवासी कृष्ण कुमार सिंह कोलकाता स्थित ग्रीनवुड कंपनी के वैधानिक प्रतिनिधि और तकनीकी विशेषज्ञ हैं। उन्हें कंपनी के नकली उत्पादों की पहचान करने का प्रशिक्षण मिला है।

लखनऊ-समेत 20 शहरों में बारिश, सड़कें लबालब,काशी के सभी घाट डूबे, बहराइच में मगरमच्छ

लखनऊ। यूपी में मानसून एक्टिव है। शनिवार सुबह से लखनऊ, संभल, बाराबंकी समेत 20 शहरों में रुक-रुककर बारिश हो रही है। शामली में

इतनी बारिश हुई कि सड़कें तालाब बन गईं। जौनपुर, कानपुर, गाजियाबाद समेत 30 से ज्यादा शहरों में बादल छाए हैं। लखनऊ में शुक्रवार को इस सीजन में सबसे ज्यादा रिकॉर्ड 56.4 मिमी बारिश हुई। इससे पहले 15 अगस्त को 40.9 मिमी बारिश हुई थी। मौसम विभाग ने आज 66 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें 29 जिलों में भारी बारिश की चेतावनी है। इधर, लगातार बारिश से नदियां उफान पर हैं। बाराबंकी-अयोध्या, गोंडा में घाघरा (सरयू), बदायूं-बलिया में गंगा, लखीमपुर में शारदा, प्रयागराज में टोंस, सोनभद्र में सोन और चित्रकूट में मंदाकिनी नदी खतरे के निशान के ऊपर बह रही हैं। 13 जिलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। करीब एक लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हैं। वाराणसी के सभी 84 घाट गंगा में डूब गए हैं। अस्सी घाट पर जहां दुकानें लगती थीं, वहां नावें चल रही हैं। दशाश्वमेध घाट पर होने वाली गंगा आरती भी छत पर कराई जा रही है। नमो घाट भी जलमग्न हो गया। बहराइच में घाघरा नदी का जलस्तर बढ़ने से सड़क पर मगरमच्छ आ गया। चित्रकूट में मंदाकिनी नदी का पानी बाजार तक पहुंच गया। सड़कों पर नावें चल रही हैं। गुप्त गोदावरी की दोनों गुफाएं पर्यटकों के लिए बंद कर दी गई हैं। प्रयागराज में गंगा-यमुना उफान पर हैं। रसूलाबाद से नागवासुकी मंदिर तक जाने वाली रिवर फ्रंट रोड डूब गई। गंगा का पानी 'लेटे हुए' हनुमान मंदिर कॉरिडोर तक पहुंच गया। लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया-'बंगाल की खाड़ी से नम हवा लगातार उत्तर प्रदेश की ओर चल रही है। इसके असर से प्रदेश में मानसून एक्टिव है। 25 अगस्त तक रुक-रुककर बारिश का सिलसिला जारी रहने का अनुमान है।' बहराइच के मिहींपुरवा में गोपियां बैराज जाने वाले रास्ते पर शुक्रवार रात मगरमच्छ सड़क पर आ गया। राहगीरों ने बाइक की रोशनी में उसे सड़क पार करते देखा और वीडियो भी बना लिया। बताया जा रहा है कि बाद में मगरमच्छ वापस पानी में चला गया। स्थानीय लोगों के मुताबिक, गोपियां बैराज के आसपास नहर और नदी का जलस्तर बढ़ा हुआ है। ऐसे में मगरमच्छ पानी से निकलकर सड़क तक पहुंचने की आशंका है।

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICI

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-
takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-

Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of India)

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement

मिर्जापुर में कुत्ते के काटने से भौंकने लगा लड़का हालत थी गंभीर पर..डॉक्टर बोले- कालकोठरी में छोड़ दीजिए, वह ठीक हुआ

मिर्जापुर। 16 मार्च को मिर्जापुर से 15 साल के एक लड़के का वीडियो सामने आया। लड़का कुत्ते की तरह भौंक रहा था।

लगातार लार टपक रही थी। पानी तक नहीं पी पा रहा था। यह सब इसलिए हो रहा था, क्योंकि लड़के को दिसंबर में एक कुत्ते ने काटा था। तब उसने रेबीज के इंजेक्शन नहीं लगवाए थे। डॉक्टर ने कह दिया- इसे कालकोठरी में बंद कर दो, 3-4 दिन में खत्म हो जाएगा। अपाहिज पिता यह सुनकर हिम्मत हार बैठे। इस घटना को 4 महीने बीत चुके हैं। अब करन पूरी तरह से स्वस्थ्य है, स्कूल पढ़ने जाता है। रेबीज की लास्ट स्टेज को मात देकर जिंदा बचने की यह यूपी की पहली घटना मानी जा रही है। दरअसल करन कहते हैं, '8 दिसंबर, 2025 को मेरे मामा कन्हैया लाल का निधन हो गया था। 20 दिसंबर को उनकी तेरहवीं थी। मैं मामा के घर वाराणसी के हरहुआ गया था। उनके पड़ोस में अनिल कुमार का घर है। रिश्ते

में वो भी मेरे मामा लगते हैं। उन्होंने देसी नस्ल का एक कुत्ता पाला हुआ है। 5-6 साल का बच्चा कुत्ते को कुछ खिला रहा था। मैंने बच्चे को अपनी तरफ खींचा, तो कुत्ते ने मेरे हाथ में काट लिया। शायद उसको लगा होगा कि मैं बच्चे को मार रहा हूं।'करन ने बताया, 'लोग मुझे डॉक्टर के पास ले गए। वहां टिटनेस का इंजेक्शन लगवाया। फिर मैं पापा के साथ घर चला आया। मैं रेबीज बीमारी के बारे में जानता था, इसलिए उसका इंजेक्शन लगवाने अस्पताल भी गया। लेकिन वहां बहुत भीड़ थी। अस्पताल में एक कर्मचारी ने दावा किया कि टिटनेस का इंजेक्शन लगवा चुके हो, तो रेबीज के इंजेक्शन की जरूरत नहीं है। उसकी बात मानकर मैं घर चला आया।' अचानक चक्कर आया और गिर गया, उठा तो भौंकने लगा-करन के पिता भाईलाल ने बताया, 'करीब 4 महीने तक मेरे बेटे पर रेबीज का कोई असर नहीं दिखा। हम गरीब लोग हैं, मुझे पैरालिसिस का अटैक पड़ चुका है। घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए करन कभी-कभी मजदूरी कर लेता था। 13 मार्च की शाम करन काम करके लौटा और घर के बाहर अचानक गिर गया। हमने उठाया, दवा दिलाई, इसके बाद ठीक हो गया। लेकिन अगली ही सुबह वह फिर से गिरा और भौंकने लगा। करन से कुछ भी पूछा जाए, तो वह बोल नहीं पा रहा था। यह सब देखकर मैं बहुत डर गया।' भाईलाल कहते हैं, 'बेटे की स्थिति देखकर लगा कि भूत-प्रेत का मामला है। हम कछवा बाजार में राम-जानकी मंदिर गए। वहां काफी देर तक पूजा-पाठ चलता रहा। धीरे-धीरे करन की तबीयत और खराब होने लगी। हम घबराकर पास के एक अस्पताल गए, वहां डॉक्टर ने कहा कि यहां हम इलाज नहीं कर पाएंगे। फिर कस्बे के कछवा क्रिश्चियन अस्पताल लेकर गए। वहां भर्ती किया, लेकिन थोड़ी देर बाद ही कहा गया कि इसे मिर्जापुर जिला अस्पताल लेकर जाइए। भाईलाल करन को लेकर मिर्जापुर जिला अस्पताल पहुंचे। वहां 1-2 इंजेक्शन लगाए गए और कहा गया कि यहां ठीक नहीं होगा, इसे वाराणसी लेकर जाइए। भाईलाल कहते हैं, 'तब तक रात हो गई थी। हम लोग करन को लेकर घर चले आए। रातभर वह ऐसे ही भौंकता रहा। हमने अगले दिन फिर से फोन किया, तब हमें वाराणसी के लिए एंबुलेंस मिली।' बीएचयू- के डॉक्टरों ने कहा- 'कालकोठरी में बंद कर दीजिए'- करन बीएचयू पहुंचने पर भी भौंक रहा था। कुछ बोल नहीं पा रहा था। हालांकि, वह सब समझ रहा था। करन बताता है, 'डॉक्टर बोले कि अब ये नहीं बचेगा। इसे ले जाकर किसी अंधेरी कोठरी में बंद कर दीजिए। अकेले में रखिए, किसी को छूने मत दीजिए। 3-4 दिन में यह खत्म हो जाएगा।' डॉक्टरों ने यह सब इसलिए कहा क्योंकि करन उस वक्त काटने दौड़ रहा था। वह रेबीज संक्रमण की लास्ट स्टेज पर था। भाईलाल कहते हैं, 'जब यह कहा गया कि कालकोठरी में बंद कर दीजिए, तब हमारी हिम्मत टूट गई। हम समझ नहीं पा रहे थे कि अब क्या करें। हम लोगों ने डॉक्टर से कह दिया कि करन भले ही न बचे, तब भी हम इसे अपने साथ ही लेकर जाएंगे। तब डॉक्टरों ने सुझाव दिया कि एक बार कबीर चौरा हॉस्पिटल में दिखा लीजिए। कबीर चौरा हॉस्पिटल में दो डॉक्टरों ने करन के ऊपर हल्का पानी छिड़का, करन कांपने लगा। पानी पीने को दिया, लेकिन वह पी नहीं पाया। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। हम वहां से फिर रामा सेंटर हॉस्पिटल लेकर गए। वहां भी डॉक्टरों ने कहा कि इसके बचने की उम्मीद नहीं है। इसे लेकर जाइए। करन के ठीक होने की कहानी-भाईलाल बताते हैं, 'जब हम लोग वाराणसी में सबको दिखाकर हार गए, तब अपने ससुराल फोन किया। साले के बेटे ने कहा कि उसे हरहुआ (वाराणसी का कस्बा) हमारे पास ले आइए। वहां रिश्तेदारी में ही सुमन नाम के व्यक्ति थे, जो हरहुआ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में थे, लेकिन रिटायर हो गए थे। उन्होंने करन को देखा और फिर अगले दिन सुबह रेबीज का एक टीका लगवाया। 3 दिन बाद फिर से एक टीका लगवा दिया। भाईलाल कहते हैं, 'एक हफ्ता बीतने पर तीसरा टीका लगाया। अगले दो हफ्तों में 2 और टीके लगाए गए। करीब 22 दिन में रेबीज के 5 टीके लगाए गए। करन ठीक होने लगा। हम उसे लेकर घर आए। एक महीने बाद फिर से दिक्कत होने लगी। हमने वहां डॉक्टर को फोन किया, तो उन्होंने फिर से बुलाया और 1-1 हफ्ते के अंतराल पर दो और टीके लगाए। अब करन एकदम ठीक है।

'ऑपरेशन शुद्धि' के तहत थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस एवं एसओजी/सर्विलांस टीम की संयुक्त कार्रवाई,अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करी गिरोह का भंडाफोड़, 03 शातिर गांजा तस्कर गिरफ्तार

उड़ीसा से वाराणसी ले जाया जा रहा 86 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद, अनुमानित कीमत रु43 लाख,तस्करी में प्रयुक्त बिना नम्बर प्लेट की किआ कार अनुमानित कीमत रु12 लाख, 03 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन एवं रु680/- नगद बरामद (कुल अनुमानित कीमत रु55 लाख)

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा के निर्देशन में 'ऑपरेशन शुद्धि' के तहत मादक पदार्थों की तस्करी एवं अवैध कारोबार में संलिप्त अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन ऋषभ रुणवाल, अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अनिल कुमार तथा क्षेत्राधिकारी नगर रणधीर कुमार मिश्रा के पर्यवेक्षण में एवं प्रभारी निरीक्षक थाना रॉबर्ट्सगंज के कुशल नेतृत्व में थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस एवं एसओजी/सर्विलांस टीम की संयुक्त पुलिस टीम को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। संयुक्त टीम द्वारा अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 03 शातिर गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से उड़ीसा से वाराणसी ले जाया जा रहा 86 किलोग्राम अवैध गांजा, जिसकी अनुमानित कीमत रु43 लाख है, तस्करी में प्रयुक्त बिना नम्बर प्लेट की किआ कार अनुमानित कीमत रु12 लाख, 03 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन एवं रु680/- नगद बरामद किए गए हैं। घटना का संक्षिप्त विवरण– दिनांक 20.08.2026 को थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस, चौकी लोढ़ी, चौकी चुर्क एवं एसओजी/सर्विलांस टीम द्वारा लोढ़ी टोल प्लाजा से पूर्व ईको प्वाइंट के पास संदिग्ध वाहनों एवं व्यक्तियों की चेकिंग की जा रही थी। इसी दौरान मुखबिर खास से सूचना प्राप्त हुई कि तीन व्यक्ति काले रंग की बिना नम्बर प्लेट की किआ कार से उड़ीसा से अवैध गांजा लेकर वाराणसी की ओर आ रहे हैं। मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम द्वारा तत्काल योजनाबद्ध तरीके से सघन चेकिंग प्रारम्भ की गई। कुछ समय बाद ईको प्वाइंट की ओर से आती हुई काले रंग की बिना नम्बर प्लेट की किआ कार को मुखबिर द्वारा चिन्हित किया गया। पुलिस टीम को देखकर कार सवार व्यक्तियों द्वारा कार को मोड़कर भागने का प्रयास किया गया, जिन्हें पुलिस टीम द्वारा तत्परता एवं घेराबंदी कर दिनांक 20.08.2026 को समय करीब 19:28 बजे बिना भागने का अवसर दिए पकड़ लिया गया।कृत कार्यवाही–पकड़े गए तीनों अभियुक्तों को उनके विधिक अधिकारों से अवगत कराते हुए नियमानुसार तलाशी की कार्रवाई क्षेत्राधिकारी नगर श्री रणधीर कुमार मिश्रा की उपस्थिति में कराई गई। कार की डिग्गी एवं सीट के पास से खाकी रंग के टेप से लिपटे कुल 35 बण्डल बरामद हुए। बण्डलों को खोलकर भौतिक परीक्षण एवं इलेक्ट्रॉनिक तराजू से वजन करने पर कुल 86 किलोग्राम अवैध गांजा पाया गया। बरामद गांजे को चार प्लास्टिक की बोरियों में क्रमशः पी-1, पी-2, पी-3 एवं पी-4 अंकित कर रखा गया, जिनका वजन क्रमशः 22 किलोग्राम, 22 किलोग्राम, 21 किलोग्राम एवं 21 किलोग्राम, कुल 86 किलोग्राम पाया गया। बरामद गांजे को नियमानुसार सील सर्वमुहर कर नमूना मोहर तैयार किया गया। अभियुक्तों की जामा तलाशी से 03 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन एवं कुल रु680/- नगद बरामद हुए। इसके अतिरिक्त अवैध गांजा परिवहन में प्रयुक्त काले रंग की बिना नम्बर प्लेट की किआ कार के आवश्यक कागजात प्रस्तुत न किए जाने पर उसे भी नियमानुसार कब्जा पुलिस में लिया गया। बरामदगी एवं गिरफ्तारी के आधार पर थाना रॉबर्ट्सगंज पर मु0अ0सं0-705/2026 धारा 8/20/27/29/60 एनडीपीएस एक्ट के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। पूछताछ का विवरण– गिरफ्तार अभियुक्तों से पूछताछ में ज्ञात हुआ कि वे फुलवानी, उड़ीसा से अवैध गांजा लेकर वाराणसी पहुंचाने जा रहे थे। पूछताछ में अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि जनपद भोजपुर (आरा) बिहार, निवासी द्वारा गांजा मंगाने के लिए धन एवं वाहन की व्यवस्था की जाती है तथा उनके द्वारा बताए गए स्थान पर गांजा पहुंचाने के लिए अभियुक्तों को भेजा जाता है। अभियुक्तों ने बताया कि गांजा की खेप पहुंचाने के एवज में उन्हें अलग-अलग रकम दी जाती है। कार चालक राजकुमार पासवान को लगभग रु30,000/-, बगल में बैठे विकास कुमार राय को रु25,000/- तथा पीछे बैठकर गांजा ले जाने वाले विनोद साव को लगभग रु15,000/- दिए जाने तय थे। रास्ते में होने वाले अन्य खर्चों की व्यवस्था भी जनपद भोजपुर (आरा) बिहार, निवासी द्वारा ही की जाती है तथा उनके द्वारा ही आगे-पीछे चलकर वाहन की लोकेशन एवं रास्ते की जानकारी दी जाती है। गांजा खरीदने के लिए ऑनलाइन माध्यम से धनराशि भी पहले भेजे जाने की बात प्रकाश में आई है। पूछताछ में प्रकाश में आए अन्य संबंधित व्यक्तियों की भूमिका की गहनता से जांच की जा रही है। बरामद मोबाइल फोन एवं अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करी नेटवर्क से जुड़े अन्य व्यक्तियों को चिन्हित कर आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्तों का विवरण– 1. राजकुमार पासवान, पुत्र स्व0 पंचानन्द पासवान, उम्र 35 वर्ष, निवासी रामशहर, थाना बड़हरा, जनपद भोजपुर (आरा), बिहार। 2. विकास कुमार राय, पुत्र सत्येन्द्र राय, उम्र 24 वर्ष, निवासी सुरंगापुर, थाना संदेश, जनपद भोजपुर (आरा), बिहार। 3. विनोद साव, पुत्र मन्नू साव, उम्र 35 वर्ष, निवासी मटुकपुर, थाना बड़हरा, जनपद भोजपुर (आरा), बिहार। बरामदगी का विवरण– 1. चार प्लास्टिक की बोरियों में (कुल 35 बण्डल) 86 किलोग्राम अवैध गांजा - अनुमानित कीमत रु43 लाख। 2. परिवहन में प्रयुक्त बिना नम्बर प्लेट की किआ कार (अनुमानित कीमत रु12 लाख)। 3. 03 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन। 4. रु680/- नगद। (कुल अनुमानित कीमत रु55 लाख) गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम–1. प्र0नि0 श्री रामस्वरूप वर्मा थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र। 2. निरीक्षक नागेश सिंह, एसओजी/सर्विलांस प्रभारी। 3. उ0नि0 उमाशंकर यादव, चौकी प्रभारी लोढ़ी थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र। 4. उ0नि0 धर्मनारायण भार्गव, चौकी प्रभारी चुर्क थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र। 5. हे0का0 राम सिंह, हे0का0 दिनेश कुमार, हे0का0 अमरजीत यादव, रि0का0 मशी अहमद थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र। 6. हे0का0 मनीष सिंह, का0 अजीत कुमार, का0 सत्यम पाण्डेय, का0 रितेश सिंह पटेल, का0 अजीत यादव एसओजी/सर्विलांस टीम।

विजयगढ़ दुर्ग के रामसरोवर पर श्रद्धालुओं की सुविधाओं के लिए व्यवस्थाएं सुदृढ़

कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देशन में कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं को सुगम, सुरक्षित एवं व्यवस्थित सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विजयगढ़ दुर्ग स्थित रामसरोवर एवं आसपास के क्षेत्रों में आवश्यक व्यवस्थाएं युद्धस्तर पर सुनिश्चित कराई जा रही हैं। रामसरोवर परिसर में साफ-सफाई, चेंजिंग रूम एवं विद्युतीकरण की व्यवस्था-जिला पंचायत राज अधिकारी द्वारा विजयगढ़ दुर्ग के ऊपर स्थित रामसरोवर के आसपास साफ-सफाई, चेंजिंग रूम एवं विद्युतीकरण सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराई गई हैं। वहीं अपर मुख्य जिला पंचायत राज अधिकारी द्वारा दुर्ग के पीछे के मार्ग पर भी विद्युतीकरण का कार्य कराया गया है, जिससे श्रद्धालुओं एवं कांवड़ियों को आवागमन के दौरान पर्याप्त प्रकाश की सुविधा मिल सके। जल लेकर शिवद्वार धाम जाने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा पर विशेष जोर-जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि विजयगढ़ दुर्ग स्थित रामसरोवर से जल लेकर शिवद्वार धाम जाने वाले श्रद्धालुओं एवं कांवड़ियों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं प्राथमिकता के आधार पर समय से पूर्ण कराई जाएं तथा मार्ग, प्रकाश, साफ-सफाई एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाए।निर्धारित स्थलों पर अधिकारियों की लगाई गई ड्यूटी-श्रद्धालुओं की सुविधा एवं सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन द्वारा संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की निर्धारित स्थलों पर ड्यूटी लगाई गई है। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने दायित्वों का पूरी जिम्मेदारी एवं संवेदनशीलता के साथ निर्वहन करने के निर्देश दिए हैं, ताकि कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

दुद्धीचुआ परियोजना के समीप वर्षा प्रभावित परिवारों की मदद में जुटा जिला प्रशासन, राहत एवं सहायता कार्य युद्धस्तर पर जारी,लगभग 120 प्रभावित परिवारों को दो समय पका भोजन एवं फूड पैकेट का नियमित वितरण

राहत शिविर लगाकर भंडारे के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा भोजन एवं आवश्यक खाद्य सामग्री,जलनिकासी के साथ जेसीबी जेसीबी से रास्तों एवं आवासीय परिसरों से मलबा और कीचड़ हटाने का कार्य जारी,एसडीएम एवं राजस्व टीम ने किया स्थलीय सर्वे, नुकसान का आकलन कर नियमानुसार अनुमन्य सहायता की होगी कार्रवाई,प्रभावित परिवारों को हरसंभव राहत एवं सहायता उपलब्ध कराना सर्वोच्च प्राथमिकता–जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र।जनपद में हुई भारी वर्षा के कारण दुद्धीचुआ परियोजना के समीपवर्ती रिहायशी क्षेत्र में अचानक अधिक मात्रा में पानी आने से प्रभावित परिवारों को राहत पहुंचाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा प्राथमिकता के आधार पर व्यापक राहत एवं सहायता कार्य किए जा रहे हैं। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देशन में प्रशासन एवं एनसीएल की टीमें मौके पर लगातार सक्रिय हैं और प्रभावित परिवारों की आवश्यकताओं के अनुरूप भोजन, खाद्य सामग्री सहित अन्य जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। भारी वर्षा के कारण दुद्धीचुआ परियोजना के समीप कई आवासीय परिसरों एवं रास्तों में पानी के साथ मिट्टी, मलबा एवं कीचड़ जमा हो गया था। स्थिति की जानकारी मिलते ही स्थानीय प्रशासन एवं एनसीएल प्रबंधन की संयुक्त टीमों द्वारा राहत कार्य प्रारंभ कराया गया। प्रभावित क्षेत्रों में जलनिकासी के साथ जेसीबी मशीनों की सहायता से रास्तों, आवासीय परिसरों एवं आसपास के क्षेत्रों से मिट्टी, मलबा एवं कीचड़ हटाने का कार्य युद्धस्तर पर जारी है।

120 परिवारों तक पहुंचाई जा रही राहत सामग्री-प्रशासन द्वारा प्रभावित लगभग 120 परिवारों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता पर लेते हुए भोजन एवं खाद्य सामग्री की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। प्रभावित परिवारों को दो समय पका हुआ भोजन एवं फूड पैकेट नियमित रूप से वितरित किए जा रहे हैं। प्रशासन एवं एनसीएल की टीमें मौके पर रहकर राहत सामग्री के वितरण एवं अन्य व्यवस्थाओं की लगातार निगरानी कर रही हैं।राहत शिविर में भंडारे की व्यवस्था-प्रभावित परिवारों एवं जरूरतमंद लोगों को तत्काल राहत पहुंचाने के उद्देश्य से क्षेत्र में राहत शिविर/कैंप स्थापित कर भंडारे के माध्यम से भोजन एवं आवश्यक खाद्य सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। जिला प्रशासन की निगरानी में राहत व्यवस्था संचालित की जा रही है, ताकि किसी भी प्रभावित परिवार को भोजन एवं आवश्यक सामग्री के लिए परेशानी का सामना न करना पड़े। एसडीएम एवं राजस्व टीम ने किया नुकसान का आकलन-घटना की सूचना मिलते ही उप जिलाधिकारी श्री मोहम्मद जफर, तहसीलदार ज्ञानेंद्र सिंह एवं राजस्व विभाग की टीम ने प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण एवं सर्वे किया। अधिकारियों ने प्रभावित परिवारों से संवाद कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी ली तथा वर्षा एवं अचानक आए पानी से हुई क्षति का आकलन किया। राजस्व टीम द्वारा तैयार की जा रही रिपोर्ट के आधार पर प्रभावित परिवारों को नियमानुसार अनुमन्य सहायता उपलब्ध कराने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। राहत कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही न हो–जिलाधिकारी-जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वर्षा प्रभावित परिवारों को राहत पहुंचाने में किसी भी स्तर पर शिथिलता न बरती जाए। प्रभावित परिवारों को भोजन, खाद्य सामग्री एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराते हुए राहत कार्यों की सतत निगरानी सुनिश्चित की जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि 'वर्षा से प्रभावित प्रत्येक परिवार तक समय से राहत एवं आवश्यक सहायता पहुंचाना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रभावित क्षेत्रों में प्रशासनिक टीमें लगातार सक्रिय रहें और जरूरतमंद परिवारों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराएं।' जिला प्रशासन एवं एनसीएल की टीमें प्रभावित क्षेत्र में लगातार निगरानी रखते हुए जलनिकासी, साफ-सफाई, मलबा एवं कीचड़ हटाने, भोजन तथा राहत सामग्री के वितरण सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर रही हैं। जनपद के वर्षा प्रभावित क्षेत्रों में राहत एवं सहायता कार्य निरंतर जारी हैं।

रोजगार मेला में कुल 105 अभ्यर्थियों का चयन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिला सेवायोजन कार्यालय, सोनभद्र द्वारा दिनांक 21.08.2026 को प्रातः 10:00 बजे से जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने) लोढी. राबर्ट्सगंज, सोनभद के परिसर में रोजगार मेला का आयोजन किया गया। मेला में लगभग 300 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। मेला में कुल 07 कम्पनियों ने प्रतिभाग किया, जिसमें मुख्यतः डिसस्ट द्वारा यूनो मिन्डा लिमिटेड, गुरूग्राम, माहिल आनन्द फिल्टर सिस्टम प्रा0लि0, गुरुग्राम, इण्डियन जापान लाईट, बावल, हरियाणा, यूनिवर्सल आडियल सेवा समिति, सोनभद्र, कैसपार माइक्रो क्रेडिट, सोनभद्र, सुलेरा इंडस्ट्रीज, सोनभद्र, वक्र्रा एल0ई0डी0, सोनभद्र इत्यादि रही। इस मेले में विभिन्न पदों पर कम्पनियों द्वारा कुल 105 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। इस अवसर पर जिला सेवायोजन अधिकारी श्री विवेक साहू, एवं सेवायोजन कार्यालय के श्री सच्चिदा नन्द, रोजगार मेला प्रभारी श्री पवन कुमार सोनकर, श्री प्रदीप सिंह, यंग प्रोफेशनल श्री सुरेन्द्र प्रजापति एवं कार्यालय के सभी स्टाफ उपस्थित रहे

थाना मांची पुलिस द्वारा हत्या के प्रयास सहित अन्य धाराओं में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा के निर्देशन में, अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन श्री ऋषभ रुणवाल के पर्यवेक्षण एवं क्षेत्राधिकारी सदर के कुशल निर्देशन में थाना मांची पुलिस द्वारा मु0अ0सं0-51/2026 धारा 109(1), 118(2) बीएनएस में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। दिनांक 21.08.2026 को थाना मांची पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना के आधार पर वांछित अभियुक्त सम्बोध पुत्र सोबन, निवासी ग्राम बांकी, थाना मांची, जनपद सोनभद्र, उम्र करीब 37 वर्ष को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-सम्बोध पुत्र सोबन निवासी - ग्राम बांकी, थाना मांची, जनपद सोनभद्र उम्र - करीब 37 वर्ष,गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम-1. उ0नि0 महेन्द्र कुमार यादव, चौकी प्रभारी सुअरसोत, थाना मांची, जनपद सोनभद्र। 2. हे0का0 अजय कुमार वर्मा, थाना मांची, जनपद सोनभद्र। 3. हे0का0 संतोष कुमार, थाना मांची, जनपद सोनभद्र।

खोडैला गांव में बनी सड़क कुछ महीनों में खराब,लोगो ने मरम्मत की मांग की

सोनभद्र। सोनभद्र के खोडैला गांव में कुछ महीने पहले बनी सड़क बारिश के बाद खराब होने लगी है। सड़क का एक किनारा मिट्टी कटने से टूट रहा है।ग्रामीणों के अनुसार, बारिश के पानी के तेज बहाव के कारण सड़क का किनारा लगातार कट रहा है। यदि समय रहते इसकी मरम्मत नहीं की गई, तो क्षतिग्रस्त हिस्सा और बढ़ सकता है, जिससे आने वाले दिनों में आवागमन प्रभावित होने की आशंका है। ग्रामीणों ने संबंधित विभाग से सड़क की स्थिति का निरीक्षण कर आवश्यक मरम्मत कराने की मांग की है। उनका कहना है कि इससे सड़क को और अधिक नुकसान होने से बचाया जा सकेगा।

स्पोर्ट्स

सचिन की बराबरी पर पहुंचे रूट, 68वां टेस्ट अर्धशतक लगायाःपाकिस्तान के खिलाफ बनाया रिकॉर्ड

स्पोर्ट डेस्क। इंग्लैंड के कप्तान जो रूट ने सचिन तेंदुलकर के टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा फिफ्टी के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। 35 साल के रूट ने पाकिस्तान के खिलाफ लीड्स में चल रहे पहले टेस्ट के दूसरे दिन 66 रन की पारी खेली। उन्होंने 68वां टेस्ट अर्धशतक लगाया। सबसे ज्यादा टेस्ट फिफ्टी के मामले में रूट और सचिन के बाद वेस्टइंडीज के शिवनारायण चंद्रपॉल का नाम आता है। उनके नाम 66 टेस्ट फिफ्टी हैं। राहुल द्रविड़ और ऑस्ट्रेलिया के एलन बॉर्डर 63-63 फिफ्टी के साथ संयुक्त चौथे नंबर पर हैं। 50 प्लस स्कोर बनाने वाले कप्तानों में 5वें स्थान पर रूट-रूट टेस्ट में कप्तान के तौर पर सबसे ज्यादा 50 प्लस स्कोर बनाने

वालों की सूची में भी पांचवें स्थान पर पहुंच गए हैं। पूर्व साउथ अफ्रीकी कप्तान ग्रीम स्मिथ 61 स्कोर के साथ शीर्ष पर हैं। रिकी पोंटिंग 54 स्कोर के साथ दूसरे, बॉर्डर 51 के साथ तीसरे और पाकिस्तान के मिस्बाह-उल-हक 43 स्कोर के साथ चौथे स्थान पर हैं। स्टोक्स के संन्यास के बाद रूट फिर कप्तान बने:-बेन स्टोक्स के संन्यास के बाद जो रूट इंग्लैंड के कप्तान के तौर पर वापस लौटे हैं। रूट पहली बार फरवरी 2017 में इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान बने थे। एलिस्टर कुक के इस्तीफे के बाद वे इंग्लैंड 80वें कप्तान बने थे। अप्रैल 2022 में उन्होंने कप्तानी छोड़ दी थी। उसके बाद बेन स्टोक्स को कप्तान बनाया गया था। बेन स्टोक्स ने जुलाई 2026 में रिटायरमेंट ले लिया था। टेस्ट में सचिन के सबसे ज्यादा शतक-टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक का रिकॉर्ड सचिन तेंदुलकर के नाम है। उन्होंने 51 शतक लगाए हैं। साउथ अफ्रीका के पूर्व कप्तान जैक कैलिस 45 शतक के साथ दूसरे और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कैप्टन रिकी पोंटिंग 41 सेंचुरी के साथ तीसरे स्थान पर हैं। इंग्लैंड ने पाकिस्तान पर बढ़त बनाई-इंग्लैंड ने दूसरे दिन स्टंप्स तक 8 विकेट पर 366 रन बना लिए हैं। उसने पाकिस्तान पर 195 रन की बढ़त हासिल कर ली है। जैमी स्मिथ और जोफ्रा आर्चर नाबाद हैं। हैरी ब्रूक ने 91, जॉर्डन कॉस्ट ने 73 और डॉन ड्वारेंस ने 51 रन की अर्धशतकीय पारियां खेली। पाकिस्तान के उस्मान अली को 5 विकेट मिले।

बारिश में बढ़ते डेंगू-मलेरिया के केसेज,घर में इन जगहों पर छिपे हो सकते हैं मच्छर, जानें कैसे करें बचाव

मुंबई। इन दिनों डेंगू के केसेज काफी बढ़ रहे हैं। पिछले दिनों एक्ट्रेस स्वरा भास्कर, श्वेता तिवारी और अविका गोर के डेंगू पॉजिटिव होने की खबर आई थी। हर साल बारिश के मौसम में डेंगू, मलेरिया जैसी मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों के मामले तेजी से बढ़ते हैं। 'नेशनल सेंटर फॉर वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल' (एनसीवी बीडीसी) के मुताबिक, भारत में साल 2024 में डेंगू के कुल 2,33,519 केस दर्ज हुए। इनमें से 297 लोगों की मृत्यु हो गई। वहीं साल 2024 में देश में मलेरिया के 2.55 लाख से ज्यादा मामले सामने आए। इनमें करीब 86 लोगों की मौत हुई। साल 2022 में 'नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन' में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, मानसून में मच्छरों को पनपने के लिए अनुकूल माहौल मिलता है। इस कारण मच्छर जनित बीमारियों के केस बढ़ जाते हैं। इसलिए, आज 'जरूरत की खबर' में डेंगू-मलेरिया के बारे में विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- डेंगू-मलेरिया के लक्षण क्या हैं? इससे बचने के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. संदीप दोशी, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मानसून में डेंगू और मलेरिया ज्यादा क्यों फैलता है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- बारिश के दौरान जगह-जगह पानी जमा हो जाता है। जमा पानी में मच्छर तेजी से पैदा होते हैं। नमी और तापमान मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल माहौल बनाते हैं। पानी की खराब निकासी और आसपास जमा गंदगी संक्रमण का रिस्क बढ़ाते हैं। सवाल- किन जगहों पर इनके मच्छर पनपने का रिस्क सबसे ज्यादा है? जवाब- इन जगहों पर मच्छर पनपने का रिस्क ज्यादा होता है- 1. घर के अंदर-कूलर, एसी ट्रे और फ्रिज की ट्रे में जमा पानी। टब या खुले कंटेनर। फूलदान, गमलों की प्लेट। बाथरूम में लंबे समय तक जमा पानी। 2. आउटडोर एरिया-छत पर जमा बारिश का पानी। पुराने टायर, बोतल, डिब्बे या कबाड़। पानी के खुले टैंक। नालियां और ड्रेनेज सिस्टम, जहां पानी रुकता है। कंस्ट्रक्शन साइट्स पर जमा पानी। 3. सोसाइटी/कॉलोनी एरिया-पार्क या गार्डन में पानी भरे गड्ढे। खराब स्ट्रीट ड्रेनेज। खाली प्लॉट में जमा बारिश का पानी। कचरे के ढेर में फंसा पानी। सवाल- क्या घर के अंदर भी डेंगू और मलेरिया के मच्छर पैदा हो सकते हैं? जवाब- हां, डेंगू फैलाने वाले एडीस एजिप्टी मच्छर साफ और रुके हुए पानी में अंडे देते हैं। वहीं मलेरिया फैलाने वाले एनोफेलीज मच्छर गंदे या ठहरे पानी में पनपते हैं। घर के अंदर जमा थोड़ा-सा पानी भी इन मच्छरों के लिए पर्याप्त होता है। फ्रिज की ड्रिप ट्रे, कूलर में जमा पानी, गमलों पौधों की ट्रे, आसपास पानी की टंकी, बाथरूम, कोने खुले ड्रेनेज/ नालियां बालकनी में जमा पानी

खुले में जमा कबाड़। सवाल- डेंगू-मलेरिया के लक्षण क्या हैं? जवाब- दोनों ही मच्छरों के काटने से होने वाली बीमारियां हैं। इनके शुरुआती लक्षण अक्सर सामान्य बुखार जैसे लगते हैं। हालांकि इसमें कुछ अंतर होते हैं। डेंगूः-अचानक तेज बुखार, तेज सिरदर्द, आंखों के पीछे दर्द, जॉइंट्स, मसल्स पेन, जी मिचलाना, स्किन रैशेज, कमजोरी, थकान, प्लेटलेट्स गिरना, नाक / मसूड़ों से खून आना.मलेरियाः- ठंड के साथ बुखार, सिरदर्द, उल्टी और मतली, शरीर में दर्द, गंभीर मामलों, सांस लेने में कमजोरी, बेहोशी, तकलीफ। सवाल- डेंगू-मलेरिया का पता कैसे चलता है? जवाब- इसके लिए डॉक्टर ब्लड टेस्ट कराते हैं। हर टेस्ट बीमारी के अलग फेज और गंभीरता को समझने में मदद करता है। डेंगू के टेस्ट-एनएस1 एंटीजन टेस्टः शुरुआती 1-5 दिनों में वायरस की पहचान करता है। IgM/IgG एंटीबॉडी टेस्टः 5 दिन बाद संक्रमण की पुष्टि करता है। सीबीसी (कम्प्लीट ब्लड काउंट)ः प्लेटलेट्स और अन्य ब्लड पैरामीटर्स की जानकारी देता है। मलेरिया के टेस्ट-मलेरिया पैरासाइट टेस्टः ब्लड में मलेरिया पैरासाइट की पहचान करता है। रैपिड डायग्नोस्टिक टेस्ट (आरडीटी)ः 15-20 मिनट में रिजल्ट देता है। सीबीसी (कम्प्लीट ब्लड काउंट)ः बीमारी की गंभीरता का अंदाजा लगाने में मदद करता है। सवाल- डेंगू-मलेरिया का इलाज क्या है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- डेंगू का इलाज-इसकी कोई खास एंटीवायरल दवा नहीं होती। पैरासिटामोल से बुखार और दर्द कंट्रोल किया जाता है। पर्याप्त पानी, ओआरस, जूस जैसे फ्लुइड देना जरूरी है। प्लेटलेट काउंट मॉनिटर किया जाता है। गंभीर मामलों में अस्पताल में भर्ती और जरूरत पड़ने पर प्लेटलेट ट्रांसफ्यूजन की जरूरत पड़ सकती है। मलेरिया का इलाज-डॉक्टर की सलाह से एंटी-मलेरियल दवाएं दी जाती हैं। बुखार और दर्द के लिए सपोर्टिव ट्रीटमेंट दिया जाता है। समय पर पूरा दवा कोर्स करना बहुत जरूरी है। गंभीर केस में अस्पताल में भर्ती होना पड़ सकता है। बारिश के मौसम में डेंगू, मलेरिया का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए बुखार को सामान्य समझकर इग्नोर न करें। लक्षण दिखते ही डॉक्टर से सलाह लें सही समय पर इलाज से बीमारी को गंभीर होने से रोका जा सकता है। सवाल- कब डॉक्टर को दिखाना जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में तुरंत डॉक्टर के पास जाएं- 1-2 दिन से ज्यादा तेज बुखार (102°F या इससे ज्यादा) रहे। ठंड के साथ बुखार आए। बुखार के साथ बेहोशी, भ्रम या ज्यादा सुस्ती लगे। लगातार उल्टी हो। कमजोरी महसूस हो या चक्कर आए। शरीर पर लाल चकत्ते दिखें। नाक या मसूड़े से खून आए। तेज पेट दर्द हो। सांस लेने में परेशानी हो। सवाल- किन लोगों को रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- डेंगू-मलेरिया किसी को भी हो सकता है, लेकिन कुछ लोगों में ये ज्यादा गंभीर हो सकता है, जैसेकि- जिनकी इम्यूनिटी कमजोर है। जिन्हें क्रॉनिक डिजीज है। जिन्हें पहले डेंगू हो चुका है। जो मच्छर-प्रभावित इलाकों में रहते हैं। बच्चे और बुजुर्ग। गर्भवती महिलाएं। सवाल- डेंगू-मलेरिया से बचने के लिए क्या करें? जवाब- थोड़ी-सी सावधानी से इन बीमारियों से काफी हद तक बचा जा सकता है। आसपास पानी न ठहरने दें। कूलर का पानी रोज बदलें। नालियां, ड्रेनेज साफ रखें। फ्रिज ट्रे साफ रखें। खिड़की-दरवाजों में जाली लगाएं। मच्छरदानी लगाकर सोएं। घर में सफाई रखें। कचरा इकट्ठा न होने दें। फुल स्लीव्स कपड़े पहनें। पानी की टंकी ढककर रखें। मॉस्किटो रिपेलेंट लगाएं। सवाल- मच्छर भगाने के घरेलू उपाय क्या हैं? जवाब- पॉइंटर्स से समझिए- नीम का धुआंः सूखी नीम की पत्तियां जलाने से मच्छर दूर भागते हैं। कपूरः कमरे में कपूर जलाने या रख देने से मच्छर कम होते हैं। नीम का तेलः स्किन पर लगाने से नेचुरल रिपेलेंट का काम करता है। लहसुन का स्प्रेः पानी में लहसुन उबालकर छिड़काव करने से मच्छर कम आते हैं। तुलसी का पौधाः घर के आसपास तुलसी लगाने से मच्छरों की संख्या कम होती है। लेमनग्रास/सिट्रोनेला ऑयलः इसकी खुशबू मच्छरों को पसंद नहीं होती है। लौंग और नींबूः नींबू में लौंग लगाकर कमरे में रखने से इसकी खुशबू से भी मच्छर दूर रहते हैं। सवाल- अगर डेंगू-मलेरिया हो जाए तो क्या करें? जवाब- ऐसी स्थिति में समय पर सही इलाज और देखभाल जरूरी है। इसलिए ग्राफिक में दी गई कुछ बातों का खास ख्याल रखें- बॉडी को आराम दें। पर्याप्त पानी पिएं। पर्याप्त नींद लें। दवा का कोर्स पूरा करें। बिल्कुल मेहनत न करें। सभी दवाएं समय पर लें। नारियल पानी, ओआरएस, जूस लें। डेंगू-मलेरिया से जुड़े कुछ कॉमन सवाल और जवाब- सवाल- क्या डेंगू-मलेरिया संक्रामक बीमारी है? जवाब- नहीं, डेंगू और मलेरिया सीधे एक व्यक्ति से दूसरे में नहीं फैलते हैं। ये बीमारियां संक्रमित मच्छर के काटने से फैलती हैं। सवाल- क्या एक बार डेंगू होने के बाद दोबारा नहीं होता? जवाब- नहीं, इसके 4 अलग-अलग प्रकार (सीरोटाइप) होते हैं। इसलिए एक बार होने के बाद भी दूसरी बार संक्रमण का रिस्क रहता है। दूसरी बार यह ज्यादा गंभीर भी हो सकता है। सवाल- डेंगू-मलेरिया होने पर क्या गलतियां नहीं करनी चाहिए? लक्षणों को इग्नोर न करें। बुखार में काम न करें। खुद से एंटीबायोटिक न लें। खुद से पेनकिलर्स न लें। ब्लड टेस्ट डिले न करें। सवाल- डेंगू-मलेरिया में क्या खाना-पीना चाहिए और क्या नहीं? जवाब- डेंगू-मलेरिया होने पर खानपान को लेकर सावधानियां बरतनी चाहिए-क्या लें? हल्का और सुपाच्य खाना (खिचड़ी, दलिया)। पानी, ओआरएस, नारियल पानी, सूप। फल जैसे पपीता, सेब, अनार। क्या न लें? तला-भुना और मसालेदार खाना। जंक फूड और पैकेज्ड ड्रिंक्स। शराब और ज्यादा कैफीन। सवाल- बच्चों और बुजुर्गों को मच्छरों से बचाने के लिए क्या अतिरिक्त सावधानी रखें? जवाब- पॉइंटर्स से समझिए- दिन और रात दोनों समय मच्छरदानी का यूज करें। फुल स्लीव कपड़े पहनाएं। मच्छर भगाने वाले सुरक्षित रिपेलेंट लगाएं। हल्के लक्षण दिखते ही तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

दोस्त स्वार्थी थे, मुझे यूज करते थे, मैंने टॉक्सिक दोस्ती तोड़ दी, लेकिन अब बहुत अकेलापन महसूस होता है, क्या करूं

नयी दिल्ली। ऐसा समय सबके जीवन में आता हैं पर इसका ये मतलब नहीं की हताश हो जाये सवाल- मेरी उम्र 33 साल है। मेरी कुछ बहुत पुरानी दोस्तियां थीं। हम सालों से साथ थे, लेकिन धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि ये रिश्ते सिर्फ उनकी

जरूरत और स्वार्थ के हैं। जब उन्हें मदद की जरूरत होती तो मैं सबसे पहले याद आता, लेकिन मेरी जरूरत के समय उनके पास हमेशा कोई-न-कोई बहाना होता था। कई बार मेरी निजी बातें भी दूसरों तक पहुंच जाती थीं। बहुत सोचने के बाद मैंने उनसे दूरी बना ली और धीरे-धीरे सारे रिश्ते खत्म कर दिए। शुरू में राहत महसूस हुई। लेकिन अब करीब छह महीने बाद मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है। फोन में कोई मैसेज नहीं आता। वीकेंड पर कहीं जाने के लिए कोई दोस्त नहीं होता। क्या टॉक्सिक दोस्ती खत्म करने के बाद भी अकेलापन महसूस होता है? क्या सिर्फ इस अकेलेपन से बचने के लिए पुराने टॉक्सिक रिश्तों में लौटना ठीक होगा? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। हां, टॉक्सिक दोस्ती खत्म करने के बाद भी अकेलापन महसूस हो सकता है। कई बार उस अकेलेपन के कारण पुरानी टॉक्सिक दोस्ती में लौटने की इच्छा भी हो सकती है। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि रिश्ता खत्म करके आपने कोई गलती की। कई बार हम किसी रिश्ते से इसलिए नहीं जुड़े रहते क्योंकि हमें उसमें खुशी मिलती है। हम इसलिए जुड़े रहते हैं क्योंकि वह पुराना है, जाना-पहचाना है और हमारी जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। टॉक्सिक रिश्ते खत्म करने के बाद ऐसा हो सकता है कि बहुत अकेलापन लगे, अपने साथ रहना मुश्किल हो। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि टॉक्सिक रिश्ते को खत्म करने और उससे बाहर निकलने का फैसला गलत था। टॉक्सिक रिश्तों के साथ हम क्या खोते हैं? टॉक्सिक रिश्ता खत्म होने के बाद भी सिर्फ एक व्यक्ति नहीं जाता। उसके साथ हमारी रोज की बातचीत, वीकेंड की योजनाएं, साझी यादें और जिंदगी का एक पूरा हिस्सा भी खाली हो जाता है। इसलिए ऐसा हो सकता है कि टॉक्सिक दोस्ती खत्म करने के बाद राहत और अकेलापन, दोनों एक साथ महसूस हों। दुख रिश्ता बहुत पुराना था। गिल्ट क्या मैंने सही फैसला किया? डर अब मेरे पास कोई नहीं है। राहत टॉक्सिसिटी से बचने की खुशी। अकेलापन अब कोई दोस्त नहीं है। याद साथ में अच्छी यादें भी थीं। टॉक्सिक दोस्ती क्या है? टॉक्सिक दोस्ती का मतलब क्या है। टॉक्सिक दोस्ती कोई मेडिकल कंडीशन या मानसिक बीमारी नहीं है। इसे यूं समझिए कि- हर खराब दोस्ती टॉक्सिक नहीं होती। हर झगड़ा टॉक्सिक नहीं होता। हर असहमति भी टॉक्सिक नहीं होती। किसी दोस्ती, रिश्ते या व्यक्ति को टॉक्सिक या नुकसानदेह बताने वाली सिर्फ एक घटना नहीं होती। इसके पीछे लंबा अनुभव और बार-बार दोहराया जाने वाला एक पैटर्न होता है। मसलन– आपकी सीमाओं का लगातार अनादर होना। आपकी निजी बातें दूसरों से साझा करना। बार-बार आपका इस्तेमाल करना। जरूरत पड़ने पर ही आपको याद करना। आपकी भावनाओं को छोटा या महत्वहीन बताना। 'न' कहने पर आपको अपराधबोध देना। आपकी दूसरी दोस्तियों से परेशानी होना। गलती के बाद जिम्मेदारी न लेना। आपको लगातार तनाव, अपराधबोध या थकान महसूस होना। किसी दोस्ती को सिर्फ इसलिए टॉक्सिक नहीं कहा जा सकता कि उसमें कभी दुख पहुंचा या मतभेद हुआ। असली सवाल यह है कि क्या टॉक्सिक व्यवहार बार-बार हो रहा है और बातचीत के बाद भी उसमें सुधार नहीं आता। हम 'टॉक्सिक' दोस्ती में क्यों लौटते हैं? यहां सबसे जरूरी सवाल ये है कि 'मैं ऐसे रिश्ते में वापस क्यों जाना चाहता हूं, जिसने मुझे चोट पहुंचाई?' इसका जवाब हमेशा यह नहीं होता कि हमें वह व्यक्ति बहुत याद आ रहा है। कई बार इसके पीछे हमारी अपनी कोई मनोवैज्ञानिक जरूरत होती है। 1. अकेलापन ज्यादा डरावना-अकेलापन डराता है। खासकर तब, जब हमें लगता है कि नए दोस्त बनाना मुश्किल है। ऐसे में पुराना दोस्त भले ही हमें दुख दे, लेकिन वह जाना-पहचाना लगता है। हमें पता है कि उससे क्या उम्मीद करनी है। हमारा दिमाग कई बार परिचित तकलीफ को अनजान स्थिति से ज्यादा सुरक्षित मान लेता है। इसलिए मन कह सकता है कि– 'जो भी था, कम-से-कम कुछ तो था। अब तो कोई भी नहीं है।' 2. आपकी पहचान 'मदद करने वाले' की कुछ रिश्तों में एक व्यक्ति हमेशा समस्या सुलझाने वाला बन जाता है। दोस्त को परेशानी हुई - आप मौजूद। उसका किसी से झगड़ा हुआ - आप सलाह देने लगे। उसे पैसे, समय या इमोशनल सहारे की जरूरत हुई - आपने मदद की। ऐसे में धीरे-धीरे मन में एक विश्वास बन सकता है कि-'उन्हें मेरी जरूरत है, इसलिए मैं महत्वपूर्ण हूं।' यहां खतरा यह है कि आप अपने महत्व को दूसरे से जोड़कर देखने लगते हैं। ऐसे में जब रिश्ता खत्म होता है तो सिर्फ दोस्त नहीं जाता, आपके महत्वपूर्ण होने का एहसास भी चला जाता है। 3. बुरे अनुभवों को ढकती अच्छे पलों की याद- किसी भी लंबे रिश्ते में सिर्फ बुरे पल ही नहीं होते।आप साथ में हंसे होंगे। घूमे होंगे। नाचे-गाए होंगे। खुश हुए होंगे। मुश्किल समय देखा होगा। निजी बातें साझा की होंगी। रिश्ता खत्म होने के बाद दिमाग अक्सर उन अच्छे पलों को याद करता है। लेकिन उन अच्छे पलों को पूरी दोस्ती का प्रमाण मत बनाइए। यह देखिए कि ज्यादातर समय वह रिश्ता आपको कैसा महसूस कराता था। असली सवाल यही है कि क्या आपकी जरूरत के समय वे मौजूद थे। इसलिए आगे बढ़ने से पहले खुद से ये छह सवाल जरूर पूछिए- खुद से पूछें 6 सवालः- क्या रिश्ता बराबरी का था? क्या मेरी बात सुनी जाती थी? क्या मदद दोतरफा होती थी? क्या वहां मेरी सीमाओं का सम्मान था? क्या मेरी निजता का सम्मान था? क्या उस दोस्ती में मुझे सुकून था? 4. पुरानी दोस्ती के साथ अपराधबोध भी जुड़ा होता है-हमारे समाज में दोस्ती को निभाने की बहुत अहमियत है। हमें सिखाया जाता है- 'मुश्किल समय में दोस्त का साथ नहीं छोड़ते।' यह बात खूबसूरत है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि दोस्ती में हम अपनी गरिमा छोड़ दें। वफादारी और आत्म-उपेक्षा एक चीज नहीं हैं। क्या आपकी दोस्ती टॉक्सिक है? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। पिछले तीन महीने को ध्यान में रखकर नीचे दिए सवालों का जवाब दें। नीचे ग्राफिक्स में कुल 10 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हमेशा' है तो 3 नंबर दें। अंत में टोटल स्कोर की एनालिसिस करें और अपना स्कोर इंटरप्रिटेशन आगे देखें। टेस्ट के सवालः-मेरी बाउंड्रीज इग्नोर की जाती है? मोटिवेट करने से ज्यादा मेरा मजाक उड़ाया जाता है? मुझे छोटा दिखाया जाता है, आलोचना की जाती है।? मैं जितनी हेल्प करता हूं, मुझे उतनी हेल्प? मेरे दूसरी सर्कल बने तो दोस्त को परेशानी होती है।? मेरे दूसरी सर्कल बने तो दोस्त को परेशानी होती है।? मेरी निजी बातें दूसरों तक पहुंच जाती हैं।? दोस्त कभी अपनी गलती स्वीकार नहीं करता है।? उसका व्यवहार कभी बहुत प्यारा, कभी बहुत ठंडा होता है।? मुझे उसके सामने बहुत संभलकर रहना पड़ता है।? उससे बात करके मैं बेचैन, थका हुआ महसूस करता हूं।? इस रिश्ते का असर मेरे काम, नींद, परिवार पर पड़ता है।? समस्या पर बात करने से स्थिति और खराब होती है।? एसेसमेंट टेस्ट का स्कोर इंटरप्रिटेशनः-0-8ः दोस्ती में

सामान्य तनाव हो सकता है। कोई स्पेसिफिक समस्या हो तो उस पर ध्यान दें। 9-17ः रिश्ते में असंतुलन है। सीमाएं तय करें, सामने वाले की प्रतिक्रिया नोटिस करें। 18-26ः लंबे समय से चल रहा नुकसानदेह पैटर्न हो सकता है। दूरी बनाना उचित है। 27-36ः मेंटल हेल्थ को गंभीर नुकसान हो सकता है। भरोसेमंद व्यक्ति से बात करें या मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट की मदद लें। नोटः यह कोई मेडिकल टेस्ट या बीमारी का निदान नहीं है।

यह सिर्फ अपने रिश्ते को समझने का एक तरीका है। अगर रिश्ते में धमकी, पीछा करना, हिंसा, यौन दबाव या आर्थिक शोषण हो, तो सिर्फ स्कोर देखकर फैसला न करें। अपनी सेफ्टी को प्राथमिकता दें।

आगे का कदम क्या हो? दोस्ती में वापस न जाकर खुद को वापस कैसे पाएं? टॉक्सिक दोस्ती को खत्म करना पहला कदम था। अब दूसरा कदम है, उस खाली जगह को हेल्दी फ्रेंडशिप से भरना। 1. अपनी फीलिंग्स को आइडेंटीफाई करें- जब भी पुराने दोस्त को फोन करने का मन करे, तो उन पुरानी घटनाओं और उसके पैटर्न को एक डायरी में लिखिए। जब आप दोस्त थे तो उसका बिहेवियर क्या होता था।

घटना- दोस्त का फोन आया, उसे हेल्प मांगी। विचार- 'अगर मैंने मदद नहीं की तो मैं स्वार्थी हूं। ' भावना- अपराधबोध महसूस हुआ। मेरा व्यवहार- अपना काम छोड़कर तुरंत मदद की। तुरंत मिला फायदा- महसूस हुआ कि मैं अच्छा और जरूरी हूं।

बाद की फीलिंग्स- बाद में गुस्सा आया, थकान महसूस हुई। 2. अपनी पुरानी धारणाओं को चुनौती दें-आप दोस्त हैं। आप किसी के इमरजेंसी सर्विस सेंटर नहीं हैं। इसलिए अगर आपका मन कहता है- 'मेरा महत्व तभी है, जब मैं दूसरों की समस्याएं हल करूं।' तो इसे बदलकर खुद से कहें-'मदद करना मेरी खूबी है। लेकिन मेरी महत्व इस बात पर निर्भर नहीं करता कि कितने लोग मुझ पर निर्भर हैं।' 3. 'नो' कहने की शुरुआत करें-सीधे बड़े बदलावों की जरूरत नहीं है। इसलिए छोटे-छोटे प्रयोग करें। इस सप्ताह ये छोटे कदम उठाएं– किसी गैरजरूरी डिमांड का जवाब तुरंत न दें। एक बार सम्मानपूर्वक 'नो' कहें। किसी दोस्त से छोटी-सी मदद मांगें। एक बार अपनी जरूरत सामने रखें। फिर देखें कि सामने वाला क्या करता है। याद रखें-एक स्वस्थ दोस्त आपकी हर बात से सहमत नहीं होगा। लेकिन वह आपकी सीमा का सम्मान करेगा। अब नए दोस्त कैसे बनेंगे? यहीं सबसे ज्यादा धैर्य की जरूरत है। अकेलेपन का इलाज पुराने खराब रिश्ते में वापस लौटना नहीं है। उसका बेहतर रास्ता है, नए और स्वस्थ सामाजिक रिश्ते बनाना। लेकिन ऐसा नहीं है कि पहली मुलाकात में ही कोई आपका अच्छा दोस्त बन जाएगा। दोस्ती अचानक नहीं बनती। वह बार-बार मिलने, बात करने, चीजें शेयर करने और साझे अनुभवों से बनती है। 2. वहां बार-बार जाएं। एक-दो बार नहीं। लगातार जाएं। 1. एक जगह चुनें। योग, वॉकिंग, बुक्स, म्यूजिक, स्पोर्ट्स,क्लास। 4. धीरे-धीरे छोटी पहल करें। 'कभी कॉफी पीने चलेंगे?' 'अगले रविवार साथ वॉक करें?' 3. हर बार बातचीत करें। 'आप यहां कब से आ रहे हैं?' 'यह किताब कैसी लगी?' 'आप भी वीकेंड पर वॉक करते हैं?' पुराने दोस्त वापस आ जाएं तो क्या करें? उनसे जुड़ा कोई फैसला सिर्फ इस आधार पर न लें कि आप अब अकेले हैं।

इसके बजाय ये सवाल पूछें–पुराने और नए वक्त में क्या बदला है?क्या उन्होंने अपने पुराने व्यवहार की जिम्मेदारी ली है? क्या उन्होंने आपकी निजता का सम्मान करना शुरू किया है? क्या वे आपकी जरूरत के समय भी मौजूद हैं?

क्या वह आपकी सीमाओं को स्वीकार करते हैं? क्या माफी मांगने के साथ उनके व्यवहार में भी बदलाव आया है? याद रखें- माफी मांगना और खुद को बदलना दो अलग चीजें हैं। प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? अगर अकेलापन, चिंता, उदासी या अपराधबोध लगातार बना हुआ है और रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित कर रहा है तो मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट से बात करना मददगार हो सकता है।

अंतिम बात-दोस्ती खत्म होने के बाद पैदा हुए खालीपन को तुरंत भरने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय यह समझना चाहिए कि वास्तव में किस चीज की कमी महसूस हो रही है।

अगर आप बार-बार ऐसे रिश्तों में फंसते हैं, जहां आपको अपनी जरूरतों से ज्यादा दूसरे व्यक्ति की जरूरतों की चिंता रहती है, तो इस पैटर्न को भी समझना बहुत जरूरी है।

जीवन का मकसद सिर्फ एक टॉक्सिक दोस्ती के लूप से बाहर निकलना नहीं, बल्कि ओवरऑल स्वस्थ, सुंदर रिश्ते बनाना है।

पीड़िता को ही कठघरे में खड़ा करने की आदत हमें क्या बताती है?

2014 में तरुण तेजपाल यौन उत्पीड़न मामले के दौरान प्रकाशित एक लेख में उलटे पीड़िता पर ही लांछन लगाने के लिए 'बबलगम फेमिनिज्म' शब्द का इस्तेमाल

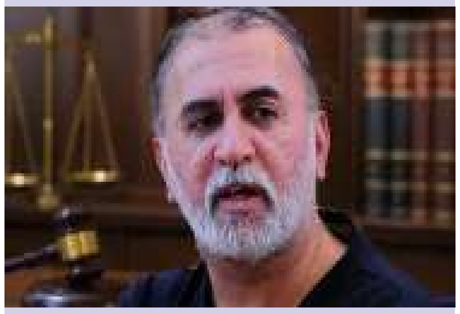

किया गया था। वह वाक्य मेरे जेहन में रह गया। इसलिए नहीं कि उसमें कोई खास चतुराई थी। बल्कि इसलिए कि इसमें एक खास किस्म की विडम्बना थी- यह कि बुद्धिजीवियों का एक वर्ग नारीवाद को ही बबलगम कहकर खारिज कर रहा था, जबकि ऐसा करते समय खुद मानक आचरण का उदाहरण नहीं पेश कर रहा था। तरुण तेजपाल कोई गुमनाम नागरिक नहीं थे। वे तहलका के संस्थापक और प्रधान संपादक थे तथा भारत के सबसे चर्चित खोजी पत्रकारों में से एक थे। उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा शक्तिशाली लोगों और संस्थाओं को बेनकाब करने पर बनी थी। इसलिए भी उनके खिलाफ लगे आरोपों की खासतौर पर कठोर जांच की अपेक्षा थी। लेकिन इसके बजाय, सार्वजनिक विमर्श का एक बड़ा हिस्सा उस महिला की पड़ताल में बदल गया, जिसने आरोप लगाया था। उसके मैसेजेस चेक किए गए। उसके आचरण का परीक्षण किया जाने लगा। तेजपाल और उनके परिवार से उसके संबंधों की भी तफ्तीश हुई। उसकी विश्वसनीयता को परखा गया। उसके व्यवहार में पाई गई किसी भी अस्पष्टता को उनके आरोपों की सच्चाई पर संदेह करने का अवसर बना लिया गया।इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी पीड़िता के बयान को जांच-पड़ताल से परे मान लिया जाना चाहिए। पत्रकारिता कोई एक्टिविज्म नहीं है। आरोपों की जांच होनी चाहिए। साक्ष्य मायने रखते हैं। आरोप लगाने वाले के व्यक्तित्व के विरोधाभासों का भी मुआयना किया जाता है। फिर आरोपी के भी कुछ अधिकार होते हैं और कानूनी प्रक्रियाएं महत्वपूर्ण हैं। लेकिन किसके व्यवहार पर पूछताछ की जाता है और किसकी प्रतिष्ठा की रक्षा की जाती है- यह भी अपने आप में पत्रकारिता के मूल्यों से जुड़ा सवाल है। मी-टू आंदोलन के दौरान मैंने ऐसे कई लोगों को सार्वजनिक रूप से सवालों के दायरे में रखा, जो मेरे दोस्तों में शुमार थे। ये अमीर और शक्तिशाली लोग थे। ऐसा करने की मुझे कीमत चुकानी पड़ी। कुछ लोगों ने मुझसे बात करना बंद कर दिया। कुछ ने मुझे काम देना बंद कर दिया। मैंने दोस्त खोए, पेशेवर रिश्ते खोए। लेकिन मेरा मानना था कि दोस्ती सिद्धांतों से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकती। दिलचस्प बात यह है कि उनमें से कुछ लोग आखिरकार वापस लौटकर आए और उन्हें वास्तव में अपने किए पर पछतावा था। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने अपने व्यवहार में बदलाव किया है। वे यह समझने लगे थे कि उनके पालन-पोषण या पेशेवर माहौल में जिन चीजों को सामान्य मान लिया गया था, वह जरूरी नहीं था कि वे स्वीकार्य भी हों। उन्होंने माना कि जिस व्यवहार को वे सामान्य समझते थे, वह वास्तव में यौन उत्पीड़न की श्रेणी में आ सकता है। मेरे लिए जवाबदेही का यही मतलब है। और अगर मेरे जैसा कोई व्यक्ति दोस्ती को एक तरफ रख सकता है, तो उन शक्तिशाली संस्थानों के पास क्या बहाना है, जो दशकों से खुद को नारीवाद, समानता और जवाबदेही के पैरोकार के रूप में पेश करते रहे हैं? जब शक्तिशाली व्यक्ति कोई दोस्त, सहकर्मी, मार्गदर्शक हो, तो सत्ता के सामने सच बोलने का सिद्धांत समझौते का विषय क्यों बन जाता है? क्योंकि किसी पीड़िता से सवाल करना और सत्ता से सवाल करना, दोनों में फर्क है। जो लगातार पहले विकल्प को चुनते हैं और दूसरे से बचते हैं, उन्हें साहसी नहीं कहा जा सकता। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,मेघना पंत)

चुनाव लड़ना ज्यादा जरूरी है या देश में कोई बदलाव लाना?

क्या सीजेपी को अब एक राजनीतिक दल बन जाना चाहिए? इसके पक्ष में कई तर्क दिए जा रहे हैं। उसके साथ युवाओं का व्यापक समर्थन और

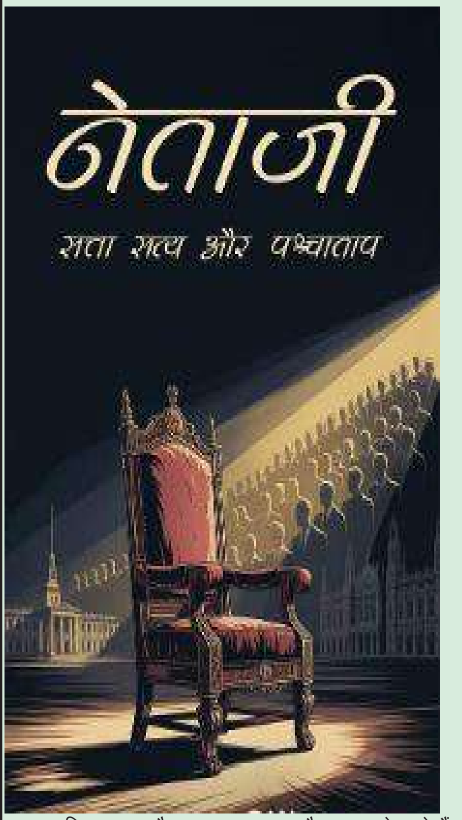

लगाव दिख रहा है। वह प्रतिरोध की नई भाषा के लिए जानी जा रही है। यही नहीं, मौजूदा पीढ़ी का जिस व्यवस्था से मोहभंग है, उसके दायरे में पुराने दल भी शामिल हैं। फिर लोकतंत्र में किसी जन-संगठन को वास्तविक और वैध राजनीति से क्यों परहेज होना चाहिए? अंततः सारे बदलाव राजनीति से ही संचालित होते हैं।सतह पर ये तर्क सही दिखते हैं। लेकिन इनके प्रतितर्क भी हैं। अण्णा आंदोलन के बाद आम आदमी पार्टी लगभग इन्हीं तर्कों के साथ गठित की गई थी। जल्द ही वह अपनी क्रांतिकारी ऊर्जा गंवाकर राजनीति की यथास्थितिवादी धारा में शामिल हो गई। यानी जैसे ही आप राजनीति में उतरते हैं, आपको कई मजबूरियां घेर लेती हैं। चुनाव लड़ने के लिए धन चाहिए- तो आप पूंजीपतियों के प्रति नरम हो उठते हैं। वोट पाने के लिए लोकप्रिय नारे गढ़ने होते हैं तो अप्रचलित विचारों या क्रांतिकारी धारणाओं से आप परहेज करने लगते हैं। धीरे-धीरे आप समझौतापरस्त हो उठते हैं और आपकी सारी लड़ाई चुनाव जीतने और सरकार बनाने तक सीमित रह जाती है। आप कहीं जातिवाद का संरक्षण करते हैं तो कहीं सांप्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। लेकिन अण्णा आंदोलन से निकली आप हो या जंतर-मंतर से निकली सीजेपी- वह अगर चुनाव नहीं लड़ेगी तो क्या होगा? अण्णा आंदोलन से आक्रोश की जो ऊर्जा फूटी, उसने राष्ट्रीय स्तर पर बीजेपी को प्रक्षेपित कर दिया। अगर आप गठित न हुई होती तो दिल्ली भी शायद उन्हीं दिनों बीजेपी की हो चुकी होती। मगर फिर वही प्रश्न है- सरकार बनाना महत्वपूर्ण है या बदलाव की बयार बनाना? लोकतंत्र को सिर्फ राजनीतिक दलों ही नहीं, ऐसे सामाजिक संगठनों, ऐसे दबाव-समूहों की जरूरत भी पड़ती है, जो राजनीति की धारा मोड़ सकें, राजनीतिक दलों को मजबूर कर सकें कि वे उसके सुझाए मुद्दों की बात करें। यह जंतर-मंतर और झारखंड के मूलतः गैर-राजनीतिक आंदोलनों का ही असर है कि शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षा और नियुक्तियों का जो भ्रष्टाचार दशकों से चला आ रहा था, वह अचानक एक ज्वलंत मुद्दा बन गया। इसी तरह अचानक सभी राजनीतिक दलों को एहसास हुआ कि जेन-जी और जेन-अल्फा से जुड़ना, उनसे संवाद करना जरूरी है। देश को वैकल्पिक राजनीति की जरूरत है। लेकिन इस वैकल्पिक राजनीति के नाम पर जो दल बने, वे खुद लोकतंत्र पर बोझ ही बने। इन दिनों चिंताजनक बात यह भी है कि लोकतंत्र बिल्कुल चुनावी जीत का संसदीय बहुमत का पर्याय बना दिया गया है, जबकि किसी भी आदर्श और स्वस्थ लोकतंत्र में बहुत सारी संवैधानिक और सामाजिक संस्थाओं की जरूरत पड़ती है।

हमारे यहां भी ऐसी संस्थाएं हैं, लेकिन जैसे वे अपनी तेजस्विता, अपनी धार और संसदीय राजनीति के आगे अपनी प्रतिरोध-क्षमता खो रही हैं। बाकी सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन बिल्कुल अप्रासंगिक बन गए हैं। न लेखकों की आवाज बची है न दूसरे अनुशासनों से जुड़े बुद्धिजीवियों की।

इनकी भरपाई किसी अहम मुद्दे पर फिल्मी सितारों या क्रिकेटरों की राय लेकर कर ली जाती है। तो एक बहुत बड़ा बौद्धिक शून्य है, जिसे भरे जाने के लिए राजनीतिक कम, गैर-राजनीतिक प्रयत्न ज्यादा जरूरी हैं।

अच्छी बात यह है कि अभिजीत दिपके ने कहा है कि वे सीजेपी को दबाव-समूह ही बनाए रखना चाहते हैं- लेकिन इसे फिर अपना सामाजिक-बौद्धिक विस्तार भी करना होगा। तभी वह सार्थक और वास्तविक विकल्प की राह बना पाएगा- राजनीतिक दलों को मजबूर कर सकेगा कि वे जरूरी मुद्दे उठाएं और सही दिशा में बढ़ें।

लोकतंत्र को सिर्फ राजनीतिक दलों ही नहीं, ऐसे सामाजिक संगठनों, ऐसे प्रेशर-ग्रुप्स की जरूरत भी पड़ती है, जो राजनीति की धारा मोड़ सकें और राजनीतिक दलों को मजबूर कर सकें कि वे उसके सुझाए मुद्दों पर बात करें। (ये लेखक के अपने विचार हैं,प्रियदर्शन)

स्वतंत्रता दिवस विशेष लेख-स्वतंत्रताःकेवल उत्सव नहीं, एक सतत् संकल्प

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) 15 अगस्त केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है। यह भारत की आत्मा के जागरण का दिवस है–वह पावन दिन जब अनगिनत वीरों के त्याग, तपस्या, संघर्ष और बलिदान ने देश को पराधीनता की लंबी रात से निकालकर स्वतंत्रता का सूर्योदय दिखाया। आज जब हम तिरंगे को आकाश में लहराते देखते हैं और राष्ट्रगान की धुन पर गर्व से खड़े होते हैं, तब हमें उन असंख्य ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करना चाहिए जिन्होंने अपने वर्तमान को राष्ट्र के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया। किसी ने जेल की यातनाएँ सहीं, किसी ने अपना सर्वस्व त्याग दिया और किसी ने हँसते-हँसते मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर कर दिए। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ-स्वतंत्रता का अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है। सच्ची स्वतंत्रता तब है जब प्रत्येक नागरिक भय, भेदभाव, अज्ञान, गरीबी और अन्याय से मुक्त होकर सम्मानपूर्वक जीवन जी सके। आज हमारे सामने चुनौती यह है कि हम स्वतंत्रता को केवल उत्सव तक सीमित न रखें। तिरंगे को सलाम करने के साथ-साथ हमें उन मूल्यों को भी अपने जीवन में उतारना होगा जिनके लिए हमारे पूर्वजों ने संघर्ष किया था–सत्य, न्याय, समानता, कर्तव्य और राष्ट्रप्रेम। आज का भारत, कल का संकल्प-आज भारत विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, अंतरिक्ष, डिजिटल प्रगति और वैश्विक मंच पर अपनी बढ़ती भूमिका के साथ नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है। लेकिन किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति केवल उसकी आर्थिक या तकनीकी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के चरित्र और सामाजिक एकता में होती है। हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी विविधता में निहित एकता है। अलग-अलग भाषाएँ, संस्कृतियाँ, परंपराएँ और जीवन-पद्धतियाँ होते हुए भी हम एक राष्ट्र हैं। यही भारत की विशेषता है और यही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी भी। युवाओं के नाम एक संदेश-भारत का भविष्य उसके युवाओं के हाथों में है। आज का युवा केवल रोजगार पाने वाला नागरिक नहीं, बल्कि राष्ट्र के निर्माण का सहभागी है। ज्ञान, कौशल, अनुशासन, नवाचार और नैतिकता के माध्यम से युवा भारत को नई दिशा दे सकते हैं। यदि प्रत्येक युवा यह संकल्प ले कि वह अपने कार्य को ईमानदारी से करेगा, समाज के प्रति संवेदनशील रहेगा, प्रकृति की रक्षा करेगा और देश की एकता एवं गरिमा को सर्वोपरि रखेगा, तो स्वतंत्रता दिवस का उत्सव वास्तव में सार्थक हो जाएगा। आइए, स्वतंत्रता को जिम्मेदारी में बदलें-इस स्वतंत्रता दिवस पर हमें स्वयं से एक प्रश्न पूछना चाहिए–देश ने हमें क्या दिया, यह पूछने से पहले हमने देश को क्या दिया? हम अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें। हम अपने आसपास स्वच्छता और सद्भाव बनाए रखें। हम किसी के अधिकारों का हनन न करें। हम शिक्षा और ज्ञान को आगे बढ़ाएँ। हम भारतीय संस्कृति और प्रकृति का सम्मान करें। और सबसे बढ़कर, हम भारत की एकता, अखंडता और गरिमा को अपने आचरण में जीवित रखें। स्वतंत्रता हमें अधिकार देती है, लेकिन उसके साथ कर्तव्य भी देती है। राष्ट्र केवल सरकार से नहीं बनता; राष्ट्र उसके करोड़ों नागरिकों के चरित्र, श्रम और संकल्प से बनता है। समापन-आइए, इस 15 अगस्त को केवल तिरंगा फहराकर और देशभक्ति के गीत गाकर न मनाएँ, बल्कि अपने भीतर एक नया भारत गढ़ने का संकल्प लें। ऐसा भारत जो ज्ञान में अग्रणी हो, चरित्र में महान हो, विज्ञान में समर्थ हो, संस्कृति में समृद्ध हो और मानवता के प्रति करुणामय हो।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का सर्वोच्च सम्मान यही होगा कि हम उनके बलिदान को स्मरण करने के साथ-साथ उनके सपनों के भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

तिरंगा केवल हमारे हाथ में नहीं, हमारे हृदय में भी लहराना चाहिए। वंदे मातरम्। जय हिन्द!

अंतर ध्वजारोहण या झंडा फहराने में

क्या आप जानते हैं कि भारत में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के दिन देश के प्रधानमंत्री

ध्वजारोहण करके देश को संबोधित करते हैं, जबकि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के दिन देश के राष्ट्रपति तिरंगा फहराते हैं । लेकिन आप समझते हैं कि आखिर ध्वजारोहण और झंडा फहराने में अंतर क्या होता, है नहीं जानते तो आईए जानते हैं । 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस होता है, यह दोनों हमारे देश के राष्ट्रीय पर्व हैं इन दोनों राष्ट्रीय पर्वों को हमारे देश में बड़े ही उत्साह और सम्मान के साथ मनाया जाता है । इन दोनों दिवसों पर तिरंगा फहराया जाता है और पूरे भारत देश में देशभक्ति का माहौल दिखाई देता है ।लेकिन 15 अगस्त और 26 जनवरी को झंडा फहराने की प्रक्रिया एक जैसी नहीं होती है । हम आपस में बातचीत के दौरान दोनों को झंडा फहराना कह देते हैं जबकि 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा झंडा खंभे के नीचे बंधा होता है देश के प्रधानमंत्री द्वारा रस्सी खींचकर झंडे को नीचे से ऊपर तक ले जाया जाता है और फिर उसे खोलते हैं जिसके बाद तिरंगा लहराने लगता है इस पूरी प्रक्रिया को ध्वजारोहण कहा जाता है । इस पूरी प्रक्रिया को इस बात का प्रतीक माना जाता है कि भारत ने लंबी गुलामी के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में दुनिया के सामने खड़ा हुआ । इसी प्रकार 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर झंडा पहले से ही खंभे के ऊपर बंधा रहता है देश के राष्ट्रपति केवल रस्सी खींचकर उसे खोलते हैं और झंडा लहराने लगता है इस प्रक्रिया को झंडा फहराना कहते हैं । इसका अर्थ यह होता है कि भारत पहले से ही स्वतंत्र देश था वह अब अपने संविधान के लागू होने के बाद गणराज्य बना । इन दोनों प्रक्रियाओं में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की भूमिका अलग होती है, 15 अगस्त 1947 को भारत देश आजाद हुआ था लेकिन उस समय संविधान लागू नहीं हुआ था इसलिए स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण करने के बाद देश का नेतृत्व प्रधानमंत्री करते हैं, वहीं 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ और भारत एक गणराज्य बना । इसके बाद राष्ट्रपति देश के संवैधानिक प्रमुख बने, इसलिए गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति झंडा फहराते हैं । स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस समारोह का स्थान भी अलग-अलग होता है, स्वतंत्रता दिवस का मुख्य आयोजन लाल किला दिल्ली में संपन्न होता है यहां प्रधानमंत्री देश को संबोधित करते हैं । जबकि गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह कर्तव्य पथ नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है । आयोजन में सेना की परेड और सांस्कृतिक झांकियां निकाली जाती हैं ।

जिनके द्वारा देश के अलग-अलग राज्यों के विभिन्न सुंदर दृश्य देखने को मिलते हैं, राज्यों की झांकियां अपनी संस्कृति और सभ्यताओं का परिचय देती हैं, हर एक राज्य अपनी अलौकिक सुंदरता को प्रस्तुत कर यह बता जाता है कि हमारा भारत देश बहुत खूबसूरत है और हम सभी को भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए।

क्या शिया ईरान के खिलाफ सुन्नी गठजोड़ बनाया गया है?

तुर्किये, सऊदी अरब, पाकिस्तान के बीच मक्का में हुए समझौते को 'मुस्लिम नाटो' बताया जा रहा है। समझौते में

कहा गया है कि किसी एक पर हमला तीनों पर हमले जैसा माना जाएगा। यह नाटो के अनुच्छेद-5 जैसा है, लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं है कि हमले के बाद किस प्रकार की सैन्य सहायता दी जाएगी। हो सकता है यह अस्पष्टता जानबूझकर रखी गई हो। इन तीनों देशों की रणनीतिक ताकत अलग-अलग है। सऊदी अरब की ताकत धन, तेल और उसकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति है। पाकिस्तान मुस्लिम जगत का एकमात्र परमाणु-हथियार सम्पन्न राष्ट्र है। तुर्किये के पास ताकतवर सेना और उन्नत रक्षा उद्योग है। तीनों की समझौते की वजहें भी अलग हैं। सऊदी अरब सुरक्षा का भरोसा चाहता है। पाकिस्तान रणनीतिक हैसियत में ऊंचा दर्जा चाहता है।तुर्किये रणनीतिक प्रभाव बढ़ाना चाहता है। हाल के घटनाक्रम से सऊदी अरब के लिए खतरे सामने आए हैं। ऐसे में यह समझौता उसके लिए अतिरिक्त सुरक्षा कवच जैसा है। इस समझौते से पाकिस्तान को सबसे बड़ा तात्कालिक लाभ मिलता दिखता है। सुरक्षा को लेकर उसकी सोच भारत, अफगानिस्तान, आतंकवाद और आंतरिक चुनौतियों के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है। यह समझौता उसे दक्षिण एशिया से आगे भी एक व्यापक सुरक्षा ढांचे में भूमिका प्रदान करता है। लेकिन अगर ईरान सऊदी अरब पर हमला करता है तो क्या समझौते के तहत पाकिस्तान युद्ध में शामिल होगा? सऊदी अरब और ईरान, दोनों से पाकिस्तान के हित जुड़े हैं तो उसके लिए किसी एक के खिलाफ दूसरे को चुनना आसान नहीं होगा। यानी इस समझौते से पाकिस्तान की प्रासंगिकता के साथ ही उसकी दुविधा भी बढ़ती है। तुर्किये नाटो, रूस, ईरान, खाड़ी देशों, पाकिस्तान, मध्य एशिया के साथ संबंध बनाए हुए है। लेकिन सीरिया, इराक, कॉकेशस क्षेत्र में भी उसके महत्वपूर्ण हित हैं, जहां उसका ईरान से सामंजस्य जरूरी है। अगर ईरान सऊदी अरब पर हमला करता है तो तुर्किये क्या करेगा? इंटेलिजेंस, हवाई रक्षा, नौसैनिक सहायता, लड़ाकू विमान देने जैसी मदद करेगा या ईरान के खिलाफ सीधी सैन्य कार्रवाई करेगा? वहीं यदि सीरिया या इराक को लेकर तुर्किये का ईरान से टकराव होता है तो क्या सऊदी और पाकिस्तान भी युद्ध में उतरेंगे? गठबंधन आक्रमण को तो रोकते हैं, लेकिन वे एक-दूसरे के लिए उलझन-भरी स्थिति भी पैदा कर सकते हैं। तुर्किये की नाटो सदस्यता इस समीकरण को और जटिल बना देती है। इसलिए शायद अनुच्छेद-5 जैसा प्रावधान जानबूझकर अस्पष्ट रखा गया होगा। यानी हमले के प्रति मजबूत प्रतिरोध का संकेत, लेकिन अनिवार्य तौर पर युद्ध में उतरने की बाध्यता नहीं। एक सवाल यह भी सामने आता है कि क्या यह ईरान के खिलाफ सुन्नी समझौता है? इसके सांप्रदायिक गणित को अनदेखा नहीं किया जा सकता। तीनों सुन्नी-बहुल देश हैं और ईरान एक प्रमुख शिया ताकत, फिर भी ऐसा कहना एक सरल-सा निष्कर्ष होगा। यह समझौता आधिकारिक रूप से रक्षात्मक है और सऊदी अरब ईरान के साथ संबंध सुधारने के लिए भी काम कर भी चुका है। फिर भी ईरान इस समझौते पर नजर रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बाहरी ताकत होगा। अमेरिका भी शायद इसे अच्छा कदम माने कि क्षेत्रीय साझेदार सुरक्षा की अधिक जिम्मेदारी खुद उठा रहे हैं। मक्का समझौता, अब्राहम समझौते को भी अनिवार्य तौर पर समाप्त नहीं करता। यह सऊदी अरब को एक और रणनीतिक विकल्प देता है और उसकी मोलभाव की ताकत को बढ़ाता है। वह अमेरिका के साथ अपने रक्षा संबंध बरकरार रखते हुए तुर्किये और पाकिस्तान के साथ रक्षा सहयोग बढ़ा सकता है और इजराइल के साथ रिश्ते सामान्य करने की संभावना भी खुली रख सकता है। मक्का समझौते के सांप्रदायिक गणित को अनदेखा नहीं किया जा सकता। सऊदी, तुर्किये और पाकिस्तान- तीनों सुन्नी-बहुल देश हैं और ईरान एक प्रमुख शिया ताकत। फिर भी ऐसा कहना शायद एक सरल-सा निष्कर्ष होगा। (ये लेखक के अपने विचार हैं,सैयद अता हसनैन)

जेन-जी को संघ के समर्थन में एक सबक है

संघ के सौ साल पूरे होने के साथ ही संघ प्रमुख मोहन भागवत भी अपनी छवि में नाटकीय परिवर्तन लाए हैं। उन्होंने अपने समर्थकों और आलोचकों को भी उलझन में डाल दिया है। कुछ लोगों को लग रहा है कि वे जो उदारवादी रुख अपना रहे हैं, उसके कारण संघ के ठोस वैचारिक आधार से किनारा किया जा रहा है। इसके कारण एक ऐसा समूह उभरा है, जो पुराने रूढ़िवाद और राष्ट्रवाद से चिपका है और मानता है कि भागवत के नेतृत्व में संघ इस विचार से अलग हो रहा है। उदारवादी जमात में कुछ ऐसे भी हैं, जिन्हें भागवत ने राहत दी है। क्या यह बदलाव की बयार है? क्या वे सरकार को चेता रहे हैं? क्या वे संघ की विश्वदृष्टि को मध्यमार्ग के करीब ला रहे हैं? यहां मैं स्पष्ट कर दूं कि संघ की मूल विचारधारा में कोई बदलाव नहीं होने जा रहा है। जो कुछ दिख रहा है, वह सत्ता के 13वें साल में राजनीतिक व्यावहारिकता का प्रदर्शन है। पिछले करीब पांच साल से, भागवत कई प्रमुख मसलों पर संघ के रुख में बदलाव को उजागर करते रहे हैं या उसके रुख को अलग तरह से प्रस्तुत करते रहे हैं। वे कई बार कह चुके हैं कि भारत (बल्कि इस पूरे उपमहादेश) के हर व्यक्ति का 'डीएनए' समान है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस धर्म का है। वे यह भी कह चुके हैं कि हरेक मस्जिद के नीचे शिवलिंग खोजना बंद कीजिए। वे, और उनके उत्तराधिकारी माने जा रहे दत्तात्रेय होसबले भी कह चुके हैं कि भारत को पाकिस्तान के साथ रिश्ता बनाए रखना चाहिए। इसे वे दोनों देशों की जनता के बीच संपर्क वाला रिश्ता कह सकते हैं, लेकिन यह सरकारी रुख से एक कदम आगे वाला रिश्ता है। यह सब बदलाव को दर्शाता है, जिसने कट्टरपंथियों को नाराज किया है, तो उदारवादियों को उत्साहित किया है। इन्हीं वजहों से पांच प्रमुख मुस्लिम हस्तियों ने 22 अगस्त 2022 को भागवत से संपर्क किया था और संवाद करने की इच्छा जाहिर की थी। अगर उदारवादी समुदाय सहायता के लिए संघ नेतृत्व की ओर देखता है तो कहा जा सकता है कि भारत ने आगे की तरफ कुछ कदम बढ़ाया है। आप इसे संशय की नजर से भी देख सकते हैं, और उम्मीद भरी नजर से भी। यह भी मुमकिन है कि जब सरकार खास तौर से मुश्किल में फंस जाए- जैसे कि जंतर-मंतर प्रकरण- तब वे अच्छे रक्षक की भूमिका में आ जाएं। जिस मंत्री को इस्तीफा दिलवाना पड़ा, वे संघ की भी प्रमुख हस्ती थे।पहले यह देखना चाहिए कि इससे पहले क्या-क्या कहा गया। भाजपा सांसद और अभिनेत्री कंगना रनौत ने जेन-जी को 'जेन गटर' बता दिया था। 30 जुलाई को संघ के संयुक्त महासचिव अतुल लिमये ने महाराष्ट्र के में अभाविप कार्यकर्ताओं को भाषण देते हुए कहा कि जंतर-मंतर पर राष्ट्र विरोधी नारे लगाए गए। उन्होंने कहा कि इस आंदोलन में वामपंथियों की वैकल्पिक राजनीति के विचार की अच्छी परीक्षा हो गई और ऐसी अराजकतावादी शक्तियां घातक हैं।

जाहिर है, भागवत इस सब पर नजर रखे हुए थे और सरकार के खिलाफ युवाओं के आक्रोश को लेकर चिंतित थे। इसीलिए उन्होंने भारत के 'इंटरनेशनल मूवमेंट टु यूनाइटेड नेशन्स' की ओर से 'जेन-जी और जेन-अल्फा' के साथ सवाल-जवाब के आयोजन में भाग लेने का न्योता कबूल किया। इसमें भागवत ने सबसे पहला काम तो यह किया कि जेन-जी के आंदोलनकारियों को राष्ट्र-विरोधी बताने वाली आलोचनाओं को सिरे से खारिज कर दिया।

उन्होंने कहा, मुझे जेन-जी पर पूरा भरोसा है। विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है, यह राष्ट्र-विरोधी काम नहीं है।

एक्सपर्ट डेबी के मुताबिक बदसूरती को सौंदर्य मानने लगे लोग,कुर्सी आराम नहीं देती, इमारतें संवाद नहीं करतीं, सोशल मीडिया के लिए बन रहे डिजाइन

टाइम.न्यूयॉर्क। 'मैं जब सुबह की सैर पर निकलती, तो शांत और हरे-भरे मोहल्ले में एक पुराना, खूबसूरत सा घर हमेशा मेरा ध्यान खींचता था। लेकिन एकाएक अचानक वह घर गायब हो गया। उसकी जगह कंक्रीट के विशाल ढांचे ने ले ली, जिसे देखकर लगता था मानो उसने अपनी ही जमीन को निगल लिया हो। न कोई खुला बगीचा, न हरियाली...जमीन के आखिरी छोर तक सिर्फ दीवारें ही दीवारें। वह घर नहीं, बल्कि अंतरिक्ष में फैला हुआ विशालकाय बॉक्स लग रहा था। सहसा मन में सवाल कौंधा... क्या हमारी दुनिया पहले से कहीं ज्यादा बदसूरत होती जा रही है? आसपास नजरें दौड़ाईं, तो यह बीमारी हर जगह फैली दिखी। सड़कें चौड़ी थीं, लेकिन उन पर दौड़ने वाली गाड़ियां किसी युद्ध के हथियार जैसी आक्रामक, भारी-भरकम और चौकोर हो चुकी थीं- जैसे टेस्ला का 'साइबरट्रक', जिसे देखकर लगे कि वह किसी अनजान बहस को जीतने निकला है। फैशन की दुनिया में कदम रखा तो देखा कि युवा पीढ़ी ऐसे बेढंगे, बड़े-बड़े जूते और अत्यधिक ढीले कपड़े पहन रही है, जो सुंदरता के पारंपरिक नियमों को सीधे चुनौती देते हैं। सवाल सिर्फ यह नहीं है कि लोगों की पसंद बदल रही है। सुंदरता हमेशा से व्यक्तिगत और समय के साथ बदलने वाली रही है। असली समस्या है 'रेशियो' और 'संदर्भ' का खो जाना। अच्छा डिजाइन अपने माहौल से संवाद करता है। कुर्सी आराम दे, किताब का फॉन्ट आंखों को न चुभे और इमारत आसपास के सौंदर्य में सहजता से घुल जाए...। लेकिन आज की 'अटेंशन इकोनॉमी' में उद्देश्य उपयोगिता नहीं, बल्कि तुरंत ध्यान खींचना बन गया है। वही चीज सफल मानी जाती है जो स्क्रीन पर चौंकाए और तुरंत साझा की जा सके।

रेस्त्रां स्वाद से ज्यादा सोशल मीडिया की तस्वीरों के लिए डिजाइन हो रहे हैं। हर उत्पाद, स्थान और दृश्य दूसरों से अलग दिखने की होड़ में है, मानो अपनी मौजूदगी साबित करने के लिए लगातार शोर मचा रहे हों। फैशन में बदसूरती का प्रयोग नया नहीं है। प्राडा का 'अग्ली चिक' कलेक्शन इसका चर्चित उदाहरण रहा। अजीब कपड़े या जूते पहनना कलात्मक विद्रोह हो सकता है, क्योंकि उन्हें बदला जा सकता है।

जयपुर में सीजेपी प्रवक्ता आशुतोष रांका को पीटकर खदेड़ा,स्कूल का निरीक्षण करने पहुंचे थे, भाजपा कार्यकर्ताओं पर हमले का आरोप

जयपुर। राजस्थान में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के स्कूलों का दौरा करने का विरोध शुरू हो गया है। जयपुर में शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे बगरू के राजकीय प्राथमिक स्कूल रामपुरा कंवरपुरा का निरीक्षण करने पहुंचे सीजेपी के प्रवक्ता आशुतोष रांका और उनके साथियों को ग्रामीणों ने पीट-पीटकर खदेड़ दिया। उन पर पथराव भी किया गया। सीजेपी का जयपुर में दो सरकारी स्कूलों का दौरे का प्लान है। इसी क्रम में सीजेपी के कुछ कार्यकर्ता सुबह 8 बजे रामपुरा कंवरपुरा पहुंचे। यहां के स्कूल को जर्जर बिल्डिंग के कारण बंद कर दिया है। बच्चों को पास ही एक बाड़े में पढ़ाया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक लोगों ने सीजेपी कार्यकर्ताओं को पहले बाहर निकाला। फिर सीजेपी के विरोध में नारे लगाते हुए सरकारी स्कूल के बाहर धरने पर बैठ गए। गांव के मुख्य रास्ते को ट्रैक्टर ट्रॉली अड़ाकर रोक दिया। ग्रामीणों और भाजपा कार्यकर्ताओं का कहना है, 'हम इस स्कूल को अपने स्तर पर ठीक करवा लेंगे। सरकार ने 12.50 लाख रुपए स्वीकृत भी कर दिए हैं। हम किसी भी बाहरी व्यक्ति को यहां नहीं आने देंगे। कॉकरोच यहां आकर गंदगी करना चाहते हैं, जिसे हम किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेंगे।' वहीं, सीजेपी ने एक्स पर लिखा, 'स्कूलों में बेहतरी की मांग पर हमारी टीम पर हमला हुआ। राजस्थान पुलिस ऐसी गुंडागर्दी की परमिशन कैसे दे रही है? भाजपा के गुंडे खुलेआम गुंडागर्दी कर रहे हैं। राजस्थान पुलिस इसकी अनदेखी कर रही है। नतीजा सामने है। राजस्थान में कोई कानून-व्यवस्था नहीं है।' जर्जर बिल्डिंग के कारण स्कूल बंद, टीनशेड के नीचे पढ़ रहे बच्चे-रामपुरा गांव के सरकारी स्कूल की बिल्डिंग जर्जर अवस्था में है। स्कूल को बच्चों के लिए बंद कर दिया गया है। पट्टियां टूट चुकी थीं। उनके नीचे लोहे के एंगल लगाए गए हैं। स्कूल को 50 मीटर दूर एक बाड़े में शिफ्ट कर दिया गया है। बच्चे टीनशेड के नीचे पढ़ाई कर रहे हैं।बच्चे जहां पढ़ रहे हैं, उसके पास पशुओं को चारा भरा है। दीवार की ईंटें गिरी हुई हैं। जर्जर बिल्डिंग के कारण स्कूल बंद, टीनशेड के नीचे पढ़ रहे बच्चे-रामपुरा गांव के सरकारी स्कूल की बिल्डिंग जर्जर हो गई है। स्कूल को बच्चों के लिए बंद कर दिया गया है।छत पर लोहे के एंगल लगाए गए हैं।

स्कूल को 50 मीटर दूर एक बाड़े में शिफ्ट कर दिया गया है। बच्चे टीनशेड के नीचे पढ़ाई कर रहे हैं। बच्चे जहां पढ़ रहे हैं, उसके पास पशुओं का चारा भरा है। दीवारों की ईंटें गिर गई हैं।

पीएम मोदी की केंद्रीय सचिवों के साथ बैठक,कहा- युवाओं से जुड़ें, ताकि नीतियां बनाने में नए आइडिया मिले

नई दिल्ली। पीएम मोदी ने गुरुवार को केंद्रीय सचिवों के साथ बैठक की। पीएमओ के बयान के मुताबिक, मोदी ने अधिकारियों से कहा कि वे यूनिवर्सिटी और युवाओं से जुड़ें।

ताकि नीतियां बनाने में नए आइडिया मिल सकें।

पिछले महीने दिल्ली के जंतर-मंतर में नीट पेपर लीक को लेकर छात्रों के प्रदर्शन के बाद सरकार युवाओं को तरजीह दे रही है।

पीएम ने इंस्टाग्राम पर रील्स के जरिए छात्रों से संवाद भी किया।

यही नहीं पीएम मंत्रियों से भी सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने की बात कह चुके हैं।

मोदी ने एक्स पर बताया कि सचिवों के साथ बैठक में बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी, सुरक्षा और विदेश मामलों से जुड़े मंत्रालयों के काम पर चर्चा हुई।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सचिवों को आज की समस्याओं और आंकड़ों पर ध्यान देने के साथ देश के भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिए। पीएम ने 10 मुद्दों पर चर्चा की; कहा- एआई की निगरानी जरूरी, इनोवेशन बढ़े:-1. शिक्षा और युवा: सरकार, यूनिवर्सिटी और युवाओं के बीच ज्यादा संवाद हो, ताकि नीतियों में नए और अलग विचार शामिल किए जा सकें। 2. इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी: मंत्रालयों के बीच बेहतर तालमेल के साथ भविष्य की जरूरतों के हिसाब से इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी पर काम करने को कहा।

3. सुरक्षा और विदेश नीति: सुरक्षा और विदेश मामलों से जुड़े मंत्रालयों के लिए आगे की कार्ययोजना पर चर्चा की।

4. डेटा और एआई डेटा और एआई का बेहतर इस्तेमाल करने पर जोर दिया।

एआई में मानवीय निगरानी और निर्णय को जरूरी बताया।

5. रिसर्च और इनोवेशन: सभी क्षेत्रों, खासकर डिफेंस सेक्टर, में रिसर्च और इनोवेशन बढ़ाने की बात कही।

6. डिफेंस: रक्षा क्षेत्र में रिसर्च बढ़ाकर भारत को वैश्विक स्तर पर ज्यादा प्रतिस्पर्धी बनाने पर जोर दिया। 7. मैरिटाइम सेक्टर: समुद्री क्षेत्र को मजबूत करने के लिए व्यापक रणनीति बनाने की जरूरत बताई।

8. शिपबिल्डिंग: शिपबिल्डिंग को इंफ्रास्ट्रक्चर का दर्जा मिलने के बाद यह देखने को कहा कि इससे तय लक्ष्य पूरे हो रहे हैं या नहीं।

9. पोर्ट्स: सिर्फ पोर्ट बनाने के बजाय 'पोर्ट-लेड डेवलपमेंट' पर फोकस करने की बात कही। 10. मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपोर्ट: मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स और एक्सपोर्ट यूनिट्स को बेहतर कनेक्टिविटी देने पर जोर दिया।

इमरान खान अस्पताल से फिर जेल भेजे गए, देर रात हॉस्पिटल में भर्ती किया था, पूर्व पीएम को जेल में रखना सुरक्षित-डॉक्टर

इस्लामाबाद। चौधरी के मुताबिक, उन्हें इमरान खान से अवमानना याचिका और पावर ऑफ अटॉर्नी पर उनके हस्ताक्षर कराने थे, लेकिन जेल प्रशासन

ने उन्हें मिलने की अनुमति नहीं दी। वकील ने आरोप लगाया कि उन्हें इमरान से मिलने से रोकने का मकसद सुप्रीम कोर्ट में उनके इलाज को लेकर अवमानना याचिका दाखिल करने से रोकना है। हम फिर भी सुप्रीम कोर्ट में अवमानना याचिका दाखिल करेंगे। मेडिकल रिपोर्ट में इमरान की सेहत को लेकर चिंता-कोर्ट में पेश की गई मेडिकल रिपोर्ट में इमरान खान की सेहत को लेकर चिंता जताई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, उनके ब्लड प्रेशर में उतार-चढ़ाव, दिल की धड़कन तेज होने और काफी मानसिक तनाव की समस्या सामने आई। इमरान का हालिया ब्लड प्रेशर 140/80 दर्ज किया गया, जबकि उनकी नब्ज 54 बार प्रति मिनट थी। फरवरी में उनका ब्लड प्रेशर 120/80 था, जो सामान्य माना जाता है। इमरान के इलाज के लिए मेडिकल बोर्ड बनेगा-सुप्रीम कोर्ट ने इमरान खान की सेहत की जांच के लिए मेडिकल बोर्ड बनाने का आदेश दिया है। कोर्ट ने इमरान की बहन डॉ. उजमा खान और उनके निजी डॉक्टर को भी मेडिकल बोर्ड में शामिल करने को कहा है। मेडिकल बोर्ड में कई विशेषज्ञ डॉक्टर होंगे। वे मिलकर इमरान की पूरी जांच करेंगे और पुरानी मेडिकल रिपोर्ट भी देखेंगे। इसके बाद डॉक्टर पता लगाएंगे कि उन्हें क्या परेशानी है, ब्लड क्लॉट क्यों बन रहा है और आगे कोई खतरा तो नहीं है। जांच के बाद बोर्ड बताएगा कि इमरान को किस इलाज की जरूरत है और उनका इलाज जेल में हो सकता है या अस्पताल में भर्ती कराना जरूरी है। अगस्त 2023 से जेल में हैं इमरान-73 साल के इमरान खान अगस्त 2023 से जेल में हैं। उन्हें सबसे पहले तोशाखाना मामले में 3 साल की सजा मिलने के बाद गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद उन पर सिफर, अल-कादिर ट्रस्ट और इद्दत निकाह समेत कई मामले दर्ज हुए। बाद में सिफर और इद्दत निकाह मामलों में उन्हें अदालत से राहत मिल गई। तोशाखाना मामले में भी उनकी एक सजा रोक दी गई। इसके बावजूद दूसरे मामलों के चलते वह अभी जेल में हैं। इमरान खान और उनकी पार्टी पीटीआई का कहना है कि 2022 में प्रधानमंत्री पद से हटने के बाद उनके खिलाफ मामले राजनीतिक वजहों से दर्ज किए गए। उनका आरोप है कि उन्हें राजनीति और चुनाव से दूर रखने के लिए ऐसा किया गया। वहीं, पाकिस्तान सरकार और जांच एजेंसियां इन आरोपों को खारिज करती हैं और कहती हैं कि ये मामले कानूनी प्रक्रिया के तहत चल रहे हैं। तोशाखाना क्या है और इमरान खान का मामला क्या है?तोशाखाना पाकिस्तान सरकार का सरकारी भंडार है। यहां प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मंत्री और दूसरे सरकारी अधिकारियों को विदेशों से मिले कीमती तोहफे जमा किए जाते हैं। इनमें घड़ियां, गहने, पेंटिंग जैसी चीजें शामिल होती हैं। इमरान खान से जुड़े विवाद-इमरान खान 2018 से 2022 तक पाकिस्तान के प्रधानमंत्री रहे। इस दौरान उन्हें कई महंगे विदेशी तोहफे मिले। आरोप है कि कुछ तोहफों की जानकारी और उनकी बिक्री से मिली रकम की पूरी जानकारी नहीं दी गई। इससे जुड़े तीन मामले-1. तोहफों की जानकारी छिपाने का आरोप-2022 में पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने इमरान को तोहफों की जानकारी गलत तरीके से घोषित करने का दोषी माना और उन्हें अयोग्य ठहराया। 2. तोशाखाना का पहला मामला-इमरान पर आरोप था कि उन्होंने कुछ महंगे तोहफे तय कीमत देकर अपने पास रखे और बाद में बेच दिए। अगस्त 2023 में उन्हें 3 साल की सजा सुनाई गई। बाद में सजा निलंबित हो गई। 3. तोशाखाना-2 मामला-इसमें 2021 में सऊदी क्राउन प्रिंस से मिले बुल्गारी ज्वेलरी सेट का मामला है। अभियोजन के मुताबिक इसकी कीमत करीब 8 करोड़ पाकिस्तानी रुपए थी, जबकि इसे करीब 29 लाख रुपए में रखने का आरोप है। इमरान खान के प्रमुख केस की वर्तमान स्थिति-1. तोशाखाना केस-2023 में इमरान खान को तोशाखाना मामले में 3 साल की सजा हुई थी। बाद में यह सजा निलंबित हुई। हालांकि, बाद में तोशाखाना से जुड़े एक अन्य मामले में दिसंबर 2025 में इमरान खान और बुशरा बीबी को 17-17 साल की सजा सुनाई गई। यह सजा महंगे सरकारी तोहफों की कथित कम कीमत पर खरीद से जुड़े मामले में है।2. साइफर केस-इमरान खान को साइफर/स्टेट सीक्रेट्स केस में मिली 10 साल की सजा हाईकोर्ट ने पलट दी थी। जून 2024 में उन्हें इस मामले में बरी कर दिया गया। 3. इद्दत निकाह केस-फरवरी 2024 में इमरान खान और बुशरा बीबी को 7-7 साल की सजा मिली थी। जुलाई 2024 में दोनों को इस मामले में बरी कर दिया गया। 4. अल-कादिर ट्रस्ट/£190 मिलियन केस-यह मामला इमरान खान के प्रधानमंत्री रहते हुए ब्रिटेन से पाकिस्तान लौटाए गए करीब £190 मिलियन और उससे जुड़े कथित भ्रष्टाचार से संबंधित है।

17 जनवरी 2025 को इमरान खान को 14 साल और बुशरा बीबी को 7 साल की सजा सुनाई गई। मई 2026 में इस सजा को निलंबित करने की उनकी याचिका इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने खारिज कर दी। उनकी मुख्य अपील पर सुनवाई जारी है।

क्या जम्मू-कश्मीर पर भारत के पाले में अमेरिका, अमेरिकी राजदूत सर्जियो बोले- ये भारत का ख़ास हिस्सा,ट्रम्प का असली मकसद क्या

नयी दिल्ली। 19 अगस्त 2026 को भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर जम्मू-कश्मीर में सीएम उमर अब्दुल्ला से मिले। उन्होंने वहीं से बयान दिया- 'जम्मू-कश्मीर भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैं यहां पहली बार आया। ये बहुत खूबसूरत जगह है।' इस पर भड़के पाकिस्तान ने कहा कि ये गैर-जिम्मेदाराना बयान जम्मू-कश्मीर पर अमेरिका के पुराने रुख के खिलाफ है। जम्मू-कश्मीर मुद्दे पर अमेरिका का रुख क्या रहा है? जम्मू-कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच 1947 से ही विवाद चला आ रहा है। इसको लेकर अब तक अमेरिका का रुख तीन फेज में बदला है-1. 1947-1965: पाकिस्तान का समर्थन, कश्मीर को विवादित इलाका कहा- 1947 में कश्मीर मुद्दे पर भारत-पाकिस्तान जंग छिड़ी, तो अमेरिका का कहना था कि इस मुद्दे को दोनों देशों को मिलकर हल करना चाहिए। हालांकि जब ये मुद्दा संयुक्त राष्ट्र पहुंचा, तो अमेरिका और ब्रिटेन ने पाकिस्तान के इस रुख पर सहमति जताई कि कश्मीर एक विवादित इलाका है। पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र में इस पर जनमत संग्रह की मांग करता रहा, और अमेरिका ने पाकिस्तान का समर्थन किया। 1962 के भारत-चीन युद्ध में अमेरिका ने भारत को सैन्य मदद दी और बदले में दबाव डाला कि कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ बातचीत करे। छह दौर की बातचीत हुई, लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका। इसकी वजह थी अमेरिका और सोवियत रूस के बीच जारी शीत युद्ध। पाकिस्तान अपनी भौगोलिक स्थिति के चलते अमेरिका के लिए जरूरी था। अमेरिका उसकी मदद से अफगानिस्तान में सोवियत रूस की सेना, चीन के इलाके और ईरान की खाड़ी में नजर रख सकता था। 2. 1965-1972: कम दखल, शिमला समझौते के बाद द्विपक्षीय मामला माना-1955 के बाद अमेरिका-वियतनाम जंग शुरू हो गई थी। 1965 में अमेरिका ने वियतनाम में जमीनी सेना भी उतार दी। और दक्षिण एशिया में अपनी भूमिका कम कर दी। 1971 की भारत-पाकिस्तान जंग के बाद 1972 में शिमला समझौता हुआ। इसमें कहा गया कि दोनों देश आपस में द्विपक्षीय रूप से मामले हल करेंगे और कश्मीर में लाइन ऑफ कंट्रोल का सम्मान किया जाएगा। अमेरिका ने इस पर सहमति जताई कि कश्मीर द्विपक्षीय मामला है। इसके बाद अमेरिका ने जम्मू-कश्मीर पर जनमत संग्रह की मांग के लिए समर्थन देना बंद कर दिया। 1999 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने कारगिल जंग को लेकर पाकिस्तान को दोषी ठहराया। 2000 में क्लिंटन भारत आए और 5 दिन रुके, जबकि पाकिस्तान में महज कुछ घंटे रुके। उन्होंने कहा, 'मैं कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता करने के लिए

दक्षिण एशिया नहीं आया हूं। भारत और पाकिस्तान ही अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। मैं जनरल परवेज मुशर्रफ से भी यही कहूंगा।' तब से भारत और अमेरिका के रिश्ते मजबूत हुए। अमेरिका का रुख यही रहा कि कश्मीर मुद्दे को दोनों देशों को आपस में मिलकर सुलझाना चाहिए।3. 2019: ट्रम्प ने पहली बार मध्यस्थता की पेशकश कीजुलाई 2019 में ट्रंप ने तब के पाकिस्तानी राष्ट्रपति इमरान खान से मुलाकात के दौरान कहा कि अगर दोनों देश चाहें, तो वे कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता करने के लिए तैयार हैं। भारत ने इसे खारिज कर दिया और कहा कि यह एक द्विपक्षीय मुद्दा है। 2019 में जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाए जाने के बाद अमेरिकी संसद के एक दस्तावेज में कहा गया, 'कश्मीर पर अमेरिका का पुराना रुख ये है कि कश्मीरी लोगों की मर्जी को ध्यान में रखते हुए दोनों देशो को बातचीत से इस मुद्दे का निपटारा करना चाहिए।' हालांकि 20 अगस्त को अमेरिकी डिफेंस सेक्रेटरी टी. एस्पर और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बीच बात हुई। इसमें अमेरिका की तरफ से टी. एस्पर ने पहली बार कहा था कि जम्मू और कश्मीर में हाल का घटनाक्रम भारत का अंदरूनी मामला है। तो क्या अब ट्रम्प और अमेरिका भारत के पाले में आ गए हैं? जवाब: सर्जियो ट्रंप के करीबी हैं और जनवरी 2026 में पद संभालने के बाद से ही एक खास अंदाज में एक्टिव हैं। ट्रम्प ने उन्हें भारत के राजदूत के अलावा साउथ और सेंट्रल एशिया के कुल 11 देशों का विशेष दूत भी बनाया है। इसलिए भी सर्जियो का बयान अहम है। हालांकि इसे लेकर एक्सपर्ट्स की राय मिली-जुली है-कई देशों में भारत के राजदूत रहे महेश सचदेव कहते हैं, 'गोर ने बिना विदेश विभाग की मर्जी के ये दौरा नहीं किया होगा। उनका बयान शिमला समझौते, आर्टिकल 370 या पाकिस्तान के किसी और मुद्दे से नहीं जुड़ा है। ये खुद में पर्याप्त है। इसे जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर अमेरिका की नई पॉलिसी की झलक की तरह देखना चाहिए। अगर उन्होंने कहा होता, कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, तो और स्पष्ट बयान होता, लेकिन ये बदलाव धीरे-धीरे होते हैं। मुझे उम्मीद है कि ये जल्द होगा।' जेनएयू में स्ट्रैटेजिक स्टडीज के प्रोफेसर राजन कुमार कहते हैं, 'अमेरिका, रूस की तरह आधिकारिक तौर पर जम्मू-कश्मीर को भारत का हिस्सा मानने से इनकार करता है। सर्जियो अहम पद पर हैं, इसलिए अभी ये देखना होगा कि क्या अमेरिका ने जम्मू-कश्मीर को लेकर अपनी ऑफिशियल पॉलिसी भी बदल दी है।' स्ट्रैटेजिक एनालिस्ट ब्रह्म चेलानी भी कहते हैं, 'अमेरिकी राजदूत अपने मैसेज अपनी तैनाती के देशों के मुताबिक, बदलते रहते हैं, लेकिन उनके विदेश विभाग की आधिकारिक नीति नहीं बदलती। 2022 में पाकिस्तान में अमेरिकी राजदूत डोनाल्ड ब्लोम ने पीओके को आजाद जम्मू-कश्मीर कहा और उसे पाकिस्तान की संस्कृति का प्रतीक बताया। इसे ऐसे देखा गया कि अमेरिका, पाकिस्तान के कब्जे को वैधता दे रहा है। इस पर भारत ने आपत्ति जताई थी।' सवाल-3: सर्जियो के इन बयानों के पीछे अमेरिका का असली मकसद क्या है?जवाब: 2 बड़े मकसद हैं-1. भारत-अमेरिका के रिश्ते बेहतर करना-अमेरिकी जियो-पॉलिटिकल स्ट्रैटेजिस्ट अल मेसन कहते हैं, 'आज इंडो-पेसिफिक रीजन ग्लोबल स्ट्रैटजी तय कर रहा है और भारत इसमें अहम भूमिका में है। ऐसे समय में ट्रम्प सर्जियो को दिल्ली भेजा। उनके बयान को भारत से रिश्ते बेहतर करने की ट्रम्प की कोशिश के तौर पर देखना चाहिए।' ब्रह्म चेलानी के मुताबिक, 'ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में, अमेरिका-भारत रिश्ते सबसे निचले स्तर पर चले गए हैं। गोर इन्हें सुधारने की कोशिश कर रहे हैं।' 2. अमेरिकी एजेंडे को मजबूत करके फायदा उठाना-भारतीय थिंकटैंक ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, ओआरएफ में स्ट्रैटेजिक स्टडीज प्रोग्राम के डिप्टी डायरेक्टर विवेक मिश्र कहते हैं, 'सर्जियो का एजेंडा अमेरिकी हितों को प्राथमिकता देना है। उनका मकसद है कि भारतीय कंपनियां अमेरिका में निवेश करें। हाल ही में भारतीय कंपनियों ने अमेरिका में 20 बिलियन डॉलर के इन्वेस्टमेंट का ऐलान भी किया है। साथ ही सर्जियो चाहते हैं कि जल्द से जल्द भारत-अमेरिका ट्रेड डील साइन हो, जिसमें अमेरिका फायदा मिले।' सवाल-4: क्या इससे भारत को भी कुछ फायदा होगा?जवाब: सर्जियो का बयान, जम्मू-कश्मीर को लेकर अमेरिका की ऑफिशियल पॉलिसी भले न हो, लेकिन जानकार मानते हैं, इससे जो मैसेज गया है, वो भारत के फायदे का है-रिटायर्ड कैप्टन अनिल गौर कहते हैं, 'सर्जियो के बयान ने इस असलियत पर मोहर लगा दी है कि आज पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में अशांति फैली है।लोग पाकिस्तान के साथ नहीं रहना चाहते और भारत में शामिल होना चाहते हैं। स्ट्रैटेजिक एक्सपर्ट सुशांत सरीन कहते हैं, 'सर्जियों का बयान भारत के लिए अच्छी खबर है। अमेरिका और अन्य देश अब इस असलियत को मानने लगे हैं कि कश्मीर भारत का अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा है।हालांकि ब्रह्म चेलानी कहते हैं, 'कथनी और करनी में अंतर होता है। ट्रम्प ने ऑपरेशन सिंदूर के पीछे की असली वजह- सीमा पार आतंकवाद पर चुप्पी साध रखी है। जबकि वो बार-बार कश्मीर को विवाद के मुख्य मुद्दे की तरह देखते रहे हैं। पाकिस्तान इसी मुद्दे को अपने आतंकवादी अभियानों के लिए आड़ की तरह इस्तेमाल करता है।'

हो सकती है सस्ती चीनी,आयात टैक्स फ्री हुआ,इथेनॉल में सप्लाई डाइवर्ट होने से चीनी महंगी, एक किलो के दाम रु55 के करीब पहुंचे

नई दिल्ली। आने वाले दिनों में चीनी सस्ती हो सकती है। केंद्र सरकार ने इसके आयात को टैक्स फ्री कर दिया है। पिछले एक महीने में चीनी के दाम करीब 10फीसदी बढ़कर रिकॉर्ड हाई पर पहुंच गए हैं। इस तेजी की सबसे बड़ी वजह गन्ने के रस और सिरप को बड़े पैमाने पर 'इथेनॉल' बनाने में डाइवर्ट करना है, जिससे घरेलू बाजार में चीनी की सप्लाई टाइट हो गई है। इस बीच त्योहारी सीजन की मांग बढ़ने से चीनी के दाम और बढ़ रहे हैं। लगातार बढ़ते दामों को ध्यान में रखते हुए ही सरकार ने ये फैसला लिया है। ये छूट 31 अक्टूबर तक रहेगी। अभी चीनी रिटेल में रु55 प्रति किलो के करीब बिक रही है। अमेरिका-ईरान जंग के बाद खाने-पीने की चीजों के दाम बढ़े। सवाल 1. चीनी की कीमतों में अचानक तेजी क्यों आ रही है? जवाब: मुख्य वजह देश में चीनी की सप्लाई का टाइट होना है। रेटिंग एजेंसी आईसीआरए के मुताबिक, 2025-26 में भारत का ग्रॉस चीनी प्रोडक्शन लगभग 3.11 करोड़ टन रहने का अनुमान है। हालांकि, इसमें से करीब 31 लाख टन चीनी इथेनॉल बनाने में डायवर्ट हो जाएगी। इस तरह नेट चीनी उत्पादन लगभग 2.80 करोड़ टन ही रह जाएगा।सवाल 2. देश में चीनी की खपत और मांग का क्या गणित है? जवाब: भारत में घरेलू स्तर पर सालाना करीब 2.83 करोड़ टन चीनी की खपत होती है। इसके अलावा चालू सीजन में भारत पहले ही 7 लाख टन चीनी एक्सपोर्ट कर चुका है। ऐसे में ताजा उत्पादन घरेलू जरूरत और एक्सपोर्ट दोनों को पूरा करने के लिए काफी नहीं है। सवाल 3. क्या देश में चीनी का बफर स्टॉक कम हो रहा है? जवाब: हां। आईसीआरए के अनुमान के अनुसार, सितंबर 2026 तक देश में क्लोजिंग चीनी स्टॉक घटकर करीब 43 लाख टन रह जाएगा। एक साल पहले

यह 53 लाख टन था। 43 लाख टन का यह बफर स्टॉक केवल दो महीने की घरेलू खपत के बराबर है। यानी चीनी खत्म तो नहीं हो रही, लेकिन इमरजेंसी सिस्टम में बैकअप कम हो गया है। सवाल 4. त्योहारी सीजन का चीनी के दामों पर क्या असर पड़ रहा है? जवाब: अगस्त से नवंबर के बीच रक्षाबंधन, गणेश चतुर्थी, दिवाली और छठ पूजा जैसे त्योहारों के कारण चीनी की मांग काफी बढ़ जाती है। बिस्किट, मिठाई और कोल्ड ड्रिंक बनाने वाली बड़ी कंपनियां (बल्क बायर्स) त्योहारों से पहले एडवांस में स्टॉक जमा करती हैं। घटती सप्लाई और बढ़ती त्योहार की मांग के कारण ही कीमतें 1 महीने में 10फीसदी चढ़ गई हैं। सवाल 5. चीनी मिलों और उनके शेयरों पर महंगी चीनी का क्या असर पड़ा?जवाब: चीनी महंगी बिकने से चीनी मिलों का मार्जिन और मुनाफा बढ़ने की उम्मीद है। यही वजह है कि शेयर बाजार में बलरामपुर चीनी, धामपुर शुगर, द्वारिकेश शुगर और बजाज हिंदुस्तान जैसी कंपनियों के शेयर एक ही दिन में 10-10फीसदी तक चढ़ गए हैं। सवाल 6. चीनी के दाम बढ़ने से सरकार की चिंता क्यों बढ़ गई है? जवाब: चीनी एक आवश्यक खाद्य वस्तु है। इसके दाम बढ़ने से देश में खाद्य महंगाई बढ़ सकती है। इसीलिए सरकार कीमतों को काबू में रखने के लिए कड़े कदम उठा रही है। सवाल 7. सरकार ने कीमतें नियंत्रित करने के लिए क्या नियम बनाए हैं? जवाब: सरकार ने चीनी व्यापारियों और डीलरों पर स्टॉक रखने की सीमा लागू कर दी है। नए नियमों के तहत महीने में 10 मीट्रिक टन से अधिक चीनी का कारोबार करने वाले डीलर 15 दिन से अधिक की खपत का स्टॉक जमा करके नहीं रख सकते। इसके अलावा केंद्र सरकार ने दो और कदम उठाए हैं-चीनी के आयात को टैक्स फ्री भी कर दिया है। निर्यात पर 30 सितंबर 2026 तक रोक लगा दी है। सवाल 8. चीनी की इस पूरी कहानी में 'इथेनॉल' की क्या भूमिका है? जवाब: इथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम के तहत सरकार पेट्रोल में इथेनॉल मिला रही है। 2024-25 में 19.24फीसदी ब्लेंडिंग हासिल की गई थी, जबकि 2025-26 के लिए 20फीसदी का लक्ष्य है। चीनी मिलें गन्ने और सिरप का इस्तेमाल इथेनॉल बनाने में कर रही हैं, जिससे हर साल लगभग 30 से 40 लाख टन चीनी इथेनॉल में चली जाती है और घरेलू बाजार में चीनी की सप्लाई कम हो जाती है। सवाल 9. क्या इथेनॉल उत्पादन से चीनी मिलों को कोई बड़ा फायदा है? जवाब: हां। इथेनॉल से चीनी मिलों को कमाई का एक स्थायी और नया जरिया मिल गया है। अब वे सिर्फ चीनी बेचने पर निर्भर नहीं हैं। बलरामपुर चीनी और त्रिवेणी इंजीनियरिंग जैसी कंपनियों ने अपनी डिस्टिलरी क्षमता काफी बढ़ा ली है, जिससे उनकी वित्तीय स्थिति मजबूत हुई है। सवाल 10. चीनी शेयरों में पैसा लगाने वाले निवेशकों के लिए क्या रिस्क है? जवाब: सबसे बड़ा रिस्क 'सरकारी दखल' है। चीनी के दाम जितने ज्यादा बढ़ेंगे, सरकार कीमतें घटाने के सख्त कदम उठाएगी। इससे मिलों का मार्जिन अचानक घट सकता है। अगर कंपनियों का मार्जिन घटेगा तो शेयरों में आई तेजी गिरावट में बदल सकती है।

रेणुका शहाणे कास्टिंग काउच से जूझीं, फिल्में छोड़ीं, एक्स्ट्रा-मैरिटल अफेयर वाली महिला का रोल किया, लोग बोले- उम्मीद नहीं थी

मुंबई। रेणुका शहाणे का नाम आते ही लोगों के जेहन में 'हम आपके हैं कौन' की संस्कारी भाभी पूजा और 'सुरभि' का सहज चेहरा उभरता है। लेकिन उनकी कहानी सिर्फ एक सुपरहिट फिल्म और लोकप्रिय

टीवी शो तक सीमित नहीं है। मनोविज्ञान की पढ़ाई से लेकर थिएटर, टीवी, फिल्मों और निर्देशन तक रेणुका ने हर पड़ाव पर अपनी शर्तों पर काम किया। सफलता के बाद भी उन्होंने लोकप्रियता के बजाय ऐसे किरदार चुने, जिनसे उन्हें कुछ नया सीखने को मिले। इसी सोच के कारण उन्होंने कई फिल्मी ऑफर्स ठुकराए और टीवी को प्राथमिकता दी। लेकिन टीवी पर उन्होंने एक ऐसा किरदार निभाया, जो दर्शकों के लिए चौंकाने वाला था। रेणुका ने साबित किया कि लोकप्रिय छवि के पीछे एक बहुआयामी अभिनेत्री भी मौजूद है। उनके लिए स्टारडम से ज्यादा जरूरी हमेशा अच्छा काम रहा। मनोविज्ञान पढ़ रही थीं, लेकिन एक नाटक ने जिंदगी की दिशा बदल दी-7 अक्टूबर 1966 को मुंबई में जन्मीं रेणुका शहाणे ऐसे परिवार में पली-बढ़ीं, जहां कला और साहित्य का माहौल था। उनके पिता विजय कुमार शहाणे भारतीय नौसेना में अधिकारी थे, जबकि मां शांता गोखले जानी-मानी लेखिका, थिएटर से जुड़ी शख्सियत और फिल्म समीक्षक हैं। रेणुका के भाई गिरिश शहाणे भी लेखक और कला समीक्षक हैं। रेणुका शहाणे ने सेंट जेवियर्स कॉलेज से मनोविज्ञान की पढ़ाई की। कॉलेज के सेकंड ईयर में 'अंधेर नगरी' नाटक का मंचन होना था। नाटक में करीब 14 गाने थे और रेणुका संगीत मंडल का हिस्सा थीं। बैकग्राउंड वोकल्स के सिलसिले में वह नाटक की पूरी प्रक्रिया से जुड़ गईं। स्क्रिप्ट से स्टेज तक का सफर देखकर उन्हें थिएटर की ताकत महसूस हुई। वह कहती हैं, 'उस समय मैंने यह नहीं सोचा था कि मुझे अभिनेत्री बनना है, लेकिन यह जरूर तय किया कि मुझे थिएटर का हिस्सा बनना है।' यहीं से उनके भीतर अभिनय के प्रति नया जुनून पैदा हुआ। मां के दोस्त सत्यदेव दुबे ने पूछा- अभिनय करोगी? इस बार जवाब 'हां' था-रेणुका की मां शांता गोखले के करीबी दोस्त और दिग्गज थिएटर निर्देशक सत्यदेव दुबे अक्सर उनके घर आते थे। वह रेणुका से बार-बार पूछते थे कि क्या वह अभिनय करेंगी। शुरुआत में वह पढ़ाई को प्राथमिकता देते हुए मना कर देती थीं। लेकिन 'अंधेर नगरी' के अनुभव के बाद उनका नजरिया बदल चुका था।अगली बार सत्यदेव दुबे ने वही सवाल पूछा तो रेणुका ने हामी भर दी। इसके बाद उन्होंने उनके साथ वर्कशॉप्स कीं और मराठी थिएटर की संस्था 'अंतरनाट्य' के साथ एक्सपेरिमेंटल थिएटर किया। उन्होंने अभिनय के साथ सेट, मेकअप, कॉस्ट्यूम और लाइटिंग जैसे काम भी सीखे। यही उनकी असली ट्रेनिंग बनी। एक्टिंग करियर नहीं, शौक था; फिर 'सर्कस' ने बदल दी सोच-थिएटर करते-करते रेणुका की मुलाकात उस दुनिया से हुई, जिसे वह शुरू में करियर नहीं मानती थीं। उन्होंने टीवी शो 'पीसी और मौसी' से स्क्रीन पर शुरुआत की और इसके बाद 'सर्कस' में काम किया। शाहरुख खान स्टारर 'सर्कस' उनके लिए निर्णायक मोड़ साबित हुआ। निर्देशक अजीज मिर्जा ने उन्हें अभिनय को गंभीरता से लेने की सलाह दी। उस समय रेणुका क्लिनिकल साइकोलॉजी में एमए कर चुकी थीं और पीएचडी करने के बारे में सोच रही थीं। लेकिन अजीज मिर्जा ने उन्हें समझाया कि अभिनय में हुनर है तो इसे पेशे के रूप में आजमाना चाहिए। रेणुका ने पहली बार महसूस किया कि थिएटर का शौक अब उनका प्रोफेशन बन सकता है। पीएचडी का सपना छोड़कर चुना अभिनय, फिर 'सुरभि' ने घर-घर पहुंचाया-'सर्कस' के बाद रेणुका की जिंदगी में 'सुरभि' आई। सिद्धार्थ काक के साथ इस कार्यक्रम ने उन्हें देशभर में पहचान दिलाई। छोटे बाल, साड़ी और सहज अंदाज में नजर आने वाली रेणुका का व्यक्तित्व दर्शकों को पसंद आया। लेकिन इस मुकाम से पहले उन्होंने करियर की दिशा बदलने का बड़ा फैसला लिया था। रेणुका कहती हैं, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे अभिनेत्री बनना है। शुरुआत में तो सिर्फ थिएटर का हिस्सा बनना चाहती थी। लेकिन धीरे-धीरे एक्टिंग मेरा पैशन बन गया और फिर यही मेरा प्रोफेशन बन गया।' 'सुरभि' की सफलता ने उन्हें सिर्फ अभिनेत्री नहीं, बल्कि दर्शकों से सीधे जुड़ने वाला चेहरा बना दिया। 'हम आपके हैं कौन' की पूजा बनने से पहले ही मिल गई थी चेतावनी-1994 में सूरज बड़जात्या की फिल्म 'हम आपके हैं कौन' रिलीज हुई और रेणुका शहाणे का किरदार पूजा घर-घर में पहचान बन गया। वह माधुरी दीक्षित की बड़ी बहन और सलमान खान की भाभी बनी थीं। लेकिन रोल स्वीकार करने से पहले उन्हें एक चेतावनी दी गई थी। राजकुमार बड़जात्या ने उन्हें बताया था कि भाभी का किरदार करने के बाद इंडस्ट्री उन्हें इसी तरह के रोल में देखने लग सकती है। फिर भी रेणुका ने फिल्म की। उनकी प्राथमिकता हीरोइन बनना नहीं, बल्कि अच्छा किरदार निभाना था। फिल्म की जबरदस्त सफलता के बाद यही चेतावनी सच साबित हुई और उनके सामने नई चुनौती खड़ी हो गई। फिल्म हिट हुई तो ऑफर्स बढ़े, लेकिन किरदार वही रहे-'हम आपके हैं कौन' के बाद रेणुका के पास फिल्मों के ऑफर्स की कमी नहीं थी। परेशानी यह थी कि ज्यादातर ऑफर्स में किरदार नहीं बदल रहे थे। उन्हें बार-बार हीरो की बहन, भाभी या 'अच्छी भारतीय लड़की' के रोल दिए जा रहे थे। रेणुका ने महसूस किया कि फिल्मों में उनकी पहचान एक ही तरह के किरदार में सीमित की जा रही है। दूसरी तरफ टेलीविजन पर उन्हें ज्यादा मजबूत और चुनौतीपूर्ण भूमिकाएं मिल रही थीं। इसलिए उन्होंने फिल्मों से दूरी बनाकर टीवी को प्राथमिकता दी। उनके लिए सिर्फ फिल्म में काम करना उपलब्धि नहीं था। वह ऐसा काम करना चाहती थीं, जिसमें अभिनेत्री के तौर पर खुद को साबित करने की गुंजाइश हो। 'फिल्म नहीं, अच्छा किरदार चाहिए'- यही सोच उन्हें बाकी कलाकारों से अलग करती रही-फिल्मों को मना करने के फैसले के पीछे रेणुका की महत्वाकांक्षा का अलग नजरिया था। वह किसी खास मुकाम तक पहुंचने की दौड़ में शामिल नहीं थीं। उन्होंने कहा, 'मेरी महत्वाकांक्षा यह नहीं थी कि मुझे किसी खास मुकाम तक पहुंचना है। इसलिए मुझे जो भी मिल रहा था, वह मेरे लिए एक अतिरिक्त खुशी थी।' थिएटर की ट्रेनिंग ने उन्हें सिखाया था कि काम की गुणवत्ता लोकप्रियता से ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह बताती हैं कि थिएटर में सामने पांच दर्शक हों या सौ, कलाकार उतनी ही शिद्दत से काम करता था। यही अनुशासन उन्होंने फिल्मों और टीवी में भी अपनाया। इसलिए सफलता के बावजूद उन्होंने सिर्फ नाम के लिए काम स्वीकार नहीं किया। टीवी पर किया ऐसा रोल, जिसे देखकर दर्शकों ने कहा- 'आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी' 'सुरभि' के बाद रेणुका ने 'सैलाब', 'जुनून', 'घुटन', '9 मालाबार हिल' और 'कोरा कागज' जैसे कई टीवी प्रोजेक्ट्स किए। यहां उन्हें अपनी 'भाभी' वाली छवि से बिल्कुल अलग किरदार निभाने का मौका मिला। 'सैलाब' में उन्होंने ऐसी महिला का किरदार निभाया था, जिसका एक्स्ट्रा-मैरिटल अफेयर था। दर्शकों के लिए यह भूमिका चौंकाने वाली थी, क्योंकि उनके मन में रेणुका की छवि संस्कारी और सहज महिला की बन चुकी थी। खुद रेणुका ने बताया कि लोग उनसे कहते थे, 'आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।' इस दौर में उन्होंने साबित किया कि लोकप्रिय छवि के पीछे एक बहुआयामी अभिनेत्री भी मौजूद है। करियर में स्ट्रगल? रेणुका का जवाब सुनकर कहानी का पूरा नजरिया बदल जाता है- रेणुका की कहानी में स्ट्रगल का सवाल भी दिलचस्प है। वह मानती हैं कि उन्हें बहुत ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा। इसकी एक वजह उनका मुंबई में जन्म और परिवार का मजबूत सपोर्ट था। ऑडिशन में काम नहीं मिलता था तो भी उनके पास घर और परिवार था। वह कहती हैं, 'जब भी मुझे कोई किरदार नहीं मिलता था या मैं ऑडिशन देकर आती थी, तो मेरे पास अपना घर और परिवार था। सिर पर छत थी और खाने-पीने की कोई परेशानी नहीं थी।' वह मानती हैं कि आर्थिक सुरक्षा ने उन्हें अपने मन का काम चुनने की आजादी दी। इसलिए वह खुद को संघर्ष से ज्यादा 'ब्लेस्ड' मानती हैं। पहली शादी टूटी, लेकिन रेणुका ने रिश्तों से उम्मीद नहीं छोड़ी-रेणुका की निजी जिंदगी भी हमेशा आसान नहीं रही। उनकी पहली शादी मराठी थिएटर लेखक और निर्देशक विजय केंकरे से हुई थी, लेकिन रिश्ता ज्यादा लंबा नहीं चला और दोनों का तलाक हो गया। इस अनुभव का असर इसलिए भी गहरा था क्योंकि बचपन में उन्होंने अपने माता-पिता का अलगाव भी देखा था। रेणुका ने बताया था कि जब उनके माता-पिता अलग हुए, तब वह सिर्फ आठ साल की थीं। कुछ लोग अपने बच्चों को उनसे खेलने से रोकते थे और कहते थे कि वह 'टूटे हुए परिवार' से आती हैं। आगे चलकर परिवार और रिश्तों की जटिलताएं उनकी रचनात्मक सोच का हिस्सा बनीं। 34-35 की उम्र में फिर प्यार हुआ, आशुतोष राणा के साथ शुरू हुई नई कहानी-पहली शादी टूटने के बाद रेणुका ने दोबारा शादी को लेकर जल्दबाजी नहीं की। फिर उनकी जिंदगी में अभिनेता आशुतोष राणा आए। दोनों ने करीब तीन साल डेट करने के बाद 25 मई 2001 को शादी की। यह रिश्ता खास था, क्योंकि रेणुका लोकप्रिय अभिनेत्री थीं, जबकि आशुतोष राणा अपने दमदार विलेन किरदारों के लिए पहचाने जाते थे। पहली शादी के अनुभव के बाद रेणुका का रिश्ते और शादी को लेकर नजरिया ज्यादा परिपक्व हो चुका था। दोनों के दो बेटे हैं- शौर्यमान और सत्येंद्र। लंबे वैवाहिक जीवन के बावजूद दोनों ने पर्दे पर साथ में बहुत कम काम किया। कास्टिंग काउच का ऑफर आया तो रेणुका ने काम से ज्यादा अपनी शर्तों को चुना-रेणुका के करियर का एक कड़वा अनुभव भी रहा, जिसके बारे में उन्होंने काफी समय बाद खुलकर बात की। 2025 में उन्होंने जूम चैनल को दिए इंटरव्यू में बताया था कि शुरुआती दिनों में एक शादीशुदा निर्माता उनके घर आया

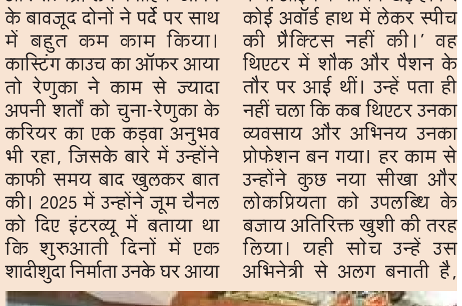

था। उसने साड़ी कंपनी का ब्रांड एंबेसडर बनाने का प्रस्ताव दिया, लेकिन साथ में ऐसा निजी प्रस्ताव रखा जिसे रेणुका ने स्वीकार नहीं किया। निर्माता ने उनके साथ रहने के बदले हर महीने स्टाइपेंड देने की बात कही थी। रेणुका और उनकी मां इस प्रस्ताव से हैरान रह गईं। उन्होंने साफ इनकार कर दिया। यह घटना उनके लिए सिर्फ एक गलत प्रस्ताव नहीं थी, बल्कि उस माहौल की हकीकत भी थी, जहां गलत लोगों को मना करने की कीमत करियर में चुकानी पड़ सकती थी। 'ना' कहने की कीमत पता थी, फिर भी समझौता नहीं किया-कास्टिंग काउच के अनुभव को बताते हुए रेणुका ने कहा कि इंडस्ट्री में किसी प्रभावशाली व्यक्ति के गलत प्रस्ताव को ठुकराने के बाद बदले की कार्रवाई का खतरा रहता है। किसी प्रोजेक्ट से निकालना या काम से दूर रखना जैसी स्थितियां पैदा हो सकती हैं। लेकिन उन्होंने करियर की कीमत पर भी अपनी सीमाओं से समझौता नहीं किया। यही बात उनकी पूरी यात्रा में दिखाई देती है। चाहे 'हम आपके हैं कौन' में भाभी का रोल स्वीकार करना हो, उसके बाद उसी तरह के रोल से दूरी बनानी हो या गलत प्रस्ताव ठुकराना- रेणुका ने हर बार वही चुना, जो उन्हें सही लगा। अभिनेत्री से निर्देशक बनीं, मां की कहानी को पर्दे पर उतारा- अभिनय के साथ रेणुका के भीतर निर्देशन की इच्छा भी लंबे समय से थी। 'लाइफलाइन' में उन्होंने असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम किया था। बाद में उन्होंने मराठी फिल्म 'रीटा' से निर्देशन की शुरुआत की। यह फिल्म उनकी मां शांता गोखले के उपन्यास 'रीटा वेलिंगकर' पर आधारित थी। इसके बाद 2021 में उन्होंने हिंदी फिल्म 'त्रिभंगा' का निर्देशन किया, जिसमें काजोल, तन्वी आजमी और मिथिला पालकर नजर आईं। फिल्म में मां-बेटी के रिश्ते, परिवार, महत्वाकांक्षा और अलगाव की जटिलताओं को दिखाया गया। जिस निजी अनुभव को उन्होंने बचपन में महसूस किया था, वही आगे चलकर उनकी रचनात्मक दुनिया का हिस्सा बना। हाल ही में रेणुका ने 'तर्पण' नाम की शॉर्ट फिल्म बनाई है, जिसमें पहली बार अपने पति आशुतोष राणा को डायरेक्ट किया। आज पीछे मुड़कर देखती हैं तो कोई मलाल नहीं, कहती हैं- 'मुझे बहुत कुछ मिला है'-रेणुका शहाणे से जब पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि जिंदगी में कुछ छोटा रह गया या कुछ और हासिल करना बाकी था, तो उनका जवाब उनकी पूरी यात्रा का सार है। वह कहती हैं, 'नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचती। क्योंकि जो मुझे मिला है, वह बहुत मिला है। मैंने तो कभी इसकी मांग भी नहीं की थी।' वह मानती हैं कि किसी अभिनेत्री के लिए अच्छी भूमिका मिलना ही बड़ी बात है और उन्हें एक नहीं, बल्कि कई ऐसी भूमिकाएं मिलीं, जिन्होंने इतिहास रचा। वह इसे उपलब्धि से ज्यादा 'कृपा और ब्लेसिंग' मानती हैं। यही वजह है कि सफलता के इतने साल बाद भी उनमें अधूरेपन का भाव नहीं है। 'मैंने कभी अवॉर्ड लेकर स्पीच की प्रैक्टिस नहीं की'- रेणुका की सफलता का असली मंत्र-रेणुका की सफलता की कहानी का सबसे दिलचस्प पहलू यही है कि उन्होंने कभी सफलता को लक्ष्य बनाकर काम नहीं किया। वह कहती हैं, 'मैंने कभी आईने के सामने खड़े होकर कोई अवॉर्ड हाथ में लेकर स्पीच की प्रैक्टिस नहीं की।' वह थिएटर में शौक और पैशन के तौर पर आई थीं। उन्हें पता ही नहीं चला कि कब थिएटर उनका व्यवसाय और अभिनय उनका प्रोफेशन बन गया। हर काम से उन्होंने कुछ नया सीखा और लोकप्रियता को उपलब्धि के बजाय अतिरिक्त खुशी की तरह लिया। यही सोच उन्हें उस अभिनेत्री से अलग बनाती है, जिसने सफलता के बाद भी अपनी शर्तों पर काम करना नहीं छोड़ा। रेणुका की कहानी में सबसे बड़ी जीत स्टारडम नहीं, अपने फैसलों पर कायम रहना है-रेणुका शहाणे की कहानी को सिर्फ 'सुरभि' या 'हम आपके हैं कौन' की सफलता से समझना अधूरा होगा। उनकी असली कहानी उन फैसलों में छिपी है, जो उन्होंने लोकप्रियता के बावजूद लिए।

फिल्मों में एक जैसी भूमिकाएं मिलीं तो टीवी चुना, निजी जिंदगी में रिश्ते टूटे तो खुद को संभाला, गलत प्रस्ताव आया तो मना किया और अभिनय के बाद निर्देशन में भी कदम रखा।

वह खुद कहती हैं, 'मुझे बहुत कुछ मिला है।' शायद यही उनकी सफलता का सबसे सच्चा पैमाना है- उन्होंने कभी यह तय नहीं किया कि उन्हें कितना बड़ा बनना है, लेकिन जो काम मिला, उसे ईमानदारी से किया। इसी सफर ने उन्हें दर्शकों की यादों में हमेशा के लिए जगह दे दी।

पत्नी को छोड़कर दूसरी शादी करने वाले थे गोविंदा, सुनीता बोलीं- इसलिए तलाक का केस लिया वापस, सोचो बीवी होकर मुझे कैसा लगता है

मुंबई। गोविंदा से अनबन के बीच पत्नी सुनीता ने 19 अगस्त को बांद्रा फैमिली कोर्ट पहुंचकर तलाक का केस वापस ले लिया है। अब सुनीता की मानें तो गोविंदा, गर्लफ्रेंड कोमल से दूसरी शादी का

प्लान बना रहे थे, यही वजह है कि सुनीता ने विरोध करते हुए तलाक का केस वापस ले लिया है। दरअसल, हाल ही में राखी सावंत को मुंबई में स्पॉट किया गया। फोटोग्राफर्स से बातचीत के दौरान राखी ने गोविंदा की पत्नी को कॉल मिलाकर स्पीकर ऑन कर बात की। इस दौरान सुनीता को यह कहते सुना गया, 'गोविंदा और कोमल शादी करने वाले थे।' राखी ने कॉल पर कहा- 'आपने जो भी किया अच्छा किया।' जवाब में सुनीता बोलीं- 'मेरे सपोर्ट में तुम लोगों को बोलना चाहिए। तुम लोगों को सारी कहानी मालूम है। राखी ने कहा- 'सुनीता जी, मैंने हमेशा बोला है कि घर का दाल-चावल घर का होता है। बाहर का चिकन टिक्का खाने से कोई फायदा नहीं है।' इस पर सुनीता ने कहा- 'वो (गोविंदा) उसे एयरपोर्ट ले गया है। उसे मेरी जगह दे रहा है। लोगों के मुझे कॉल

आ रहे हैं। बताओ बीवी होकर मुझे कैसा लगेगा।' ये सुनकर राखी ने कहा- 'आप ये सब छोड़ो, 200 करोड़ पर ध्यान दो। दूसरी, तीसरी कोई आ जाएगी, तो ये 200 करोड़ ले जाएगी। पहले अपने नाम पर कर लो सब, फिर ये सब करना।' आगे सुनीता ने कहा- 'मैंने कल ये केस वापस ले लिया, क्योंकि ये दोनों शादी करने के प्लान में थे।' 19 अगस्त को तलाक का केस वापस लिया-सुनीता आहूजा 19 अगस्त को मुंबई के बांद्रा फैमिली कोर्ट पहुंचीं। बेटे यशवर्धन भी उनके साथ थे। कोर्ट पहुंचने पर तलाक की अटकलें तेज हो गईं, हालांकि बाद में गोविंदा के मैनेजर शशि सिन्हा ने दैनिक भास्कर से बातचीत में कन्फर्म किया कि सुनीता ने तलाक का केस वापस ले लिया है, जो उन्होंने दिसंबर 2024 में दायर किया था। गोविंदा के मैनेजर बोले- तमाशा बनाने की क्या जरुरत थी-वहीं दूसरी तरफ मैनेजर ने सुनीता के इस रवैये पर नाराजगी जताते हुए कहा कि वो परिवार का तमाशा बना रही हैं। एनडीटीवी को दिए इंटरव्यू में मैनेजर शशि सिन्हा ने कहा, 'अदालत जाने की कोई जरूरत नहीं थी। घर की बातें घर में रहकर, बैठकर बात करके सुलझ सकती हैं। जब आज याचिका वापस ही लेनी थी, तो फिर केस किया ही क्यों था? मुझे इस बात का बहुत दुख है कि बिना वजह हम सब तमाशा बन गए।' 'दो साल से मीडिया में छवि खराब हुई'- मैनेजर मैनेजर ने बताया कि दोनों के बीच का विवाद पिछले लगभग डेढ़ से दो साल से मीडिया में चल रहा था। इससे गोविंदा और उनके परिवार की साख को काफी नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि हर शादीशुदा जिंदगी में पति-पत्नी के बीच मतभेद होते हैं, यह आम बात है। लेकिन जब मामला कोर्ट और मीडिया तक पहुंच जाता है, तो बात सार्वजनिक हो जाती है। इस पूरे मामले में तमाशा बनने से आसानी से बचा जा सकता था। दिसंबर 2024 में किया था तलाक का केस-गौरतलब है कि सुनीता आहूजा ने दिसंबर 2024 में गोविंदा के खिलाफ बांद्रा फैमिली कोर्ट में तलाक की अर्जी दाखिल की थी। वहीं, यह खबर पिछले साल अगस्त के महीने में सामने आई थी, जब हॉटरफ्लाई ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि सुनीता ने हिंदू मैरिज एक्ट 1955 की धारा 13 (1) (i), (ia), (ib) के तहत तलाक के लिए अर्जी दी थी। याचिका में उन्होंने गोविंदा पर क्रूरता, बेवफाई और परित्याग जैसे गंभीर आरोप लगाए थे। रूमर्ड गर्लफ्रेंड के साथ पब्लिकली स्पॉट हुए गोविंदा- 'हाल ही में गोविंदा को उनकी अपकमिंग कमबैक फिल्म रूपा की को-एक्ट्रेस कोमल रानी स्वर्णकार के साथ स्पॉट किया गया। इस पर सुनीता ने कहा था, 'गोविंदा अपनी बेटी की उम्र की लड़की को लेकर घूम रहे हैं और उन्हें इस बात पर थोड़ी शर्म आनी चाहिए।' सुनीता आहूजा ने गोविंदा साथ दिखीं एक्ट्रेस कोमल के ड्रेसिंग सेंस पर भी टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि अगर सामने वाले का शुगर डैडी इतना अमीर है, तो कम से कम कपड़े तो ढंग के पहनने चाहिए। पत्नी के बयानों पर गोविंदा भड़क गए थे-वहीं, पत्नी सुनीता के आपत्तिजनक बयानों पर गोविंदा भड़क गए थे। गोविंदा ने चेतावनी देकर कहा था कि उन्हें हद में रहना चाहिए। साथ ही एक्टर ने को-स्टार का बचाव भी किया और कहा कि सुनीता उन्हें बदनाम करने की कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। गोविंदा ने कहा था:-'जो काम बाहर मिलता है, वो मैं करता नहीं हूं और जो मैं कर रहा हूं, उसमें आप हस्तक्षेप कर रही हैं। और जब अपना काम आप कर रही थीं, फिर चाहे वो कुकिंग शो (लाफ्टर शेफ) हो या लॉकअप हो, टीना (बेटी) से कहकर मुझे उसमें बुलवाया, मेरी सेवाएं लीं। खैर वो तो आपका हक है, लेकिन जिस वक्त मैंने फिल्म शुरू की है, आप एक भी कसर नहीं छोड़ रही हैं कि मैं लोगों के दिल से उतर जाऊं बदनाम हो जाऊं, या कुछ ऐसा हो जाए कि मेरा बिजनेस न हो।' वहीं, गोविंदा ने को-एक्ट्रेस रानी स्वर्णकर का बचाव करते हुए कहा था- 'कोई गरीब परिवार के लोग अगर फिल्म में आए हैं, तो उन्हें इस तरह बदनाम या लज्जित न कीजिए कि वो भाग जाएं। आप में क्षमता है, ताकत है, इज्जत, दौलत, शोहरत, सब दिया है ऊपर वाले ने।इसका मतलब ये नहीं कि जिसके पास ये नहीं है आप उसे जलील करें। ये आप पर शोभा नहीं देता।' बहुत ज्यादा मां-बहन की गालियां देने लगी हैं- गोविंदा। गोविंदा ने अपने वीडियो में यह भी कहा था कि मैं ये भी कहना चाहूंगा कि सुनीता जी आप बहुत मां-बहन की गालियां देने लगी हैं। ईश्वर को मनाइए कि अगर लोग आपसे प्रेरित हो गए तो आप कहां आइना देखेंगी। कहीं आपके साथ ही लोग मां-बहन की गालियां देना शुरू कर देंगे, तो हम सब बहुत लज्जित हो जाएंगे। ये ठीक नहीं है। बहुत सस्ता कर दिया है मां-बहन का नाम। आपसे उम्मीद नहीं है। सुनीता ने मिस मालिनी को दिए इंटरव्यू में गोविंदा के अफेयर रूमर्स पर बात करते हुए कहा था कि जवानी में गलतियां होती हैं, लेकिन 63 की उम्र में ये सब सुनना ठीक नहीं है। सुनीता ने कहा था, 'ये नाम थोड़ा गड़बड़ है। मुझे कोमल नाम से नफरत है। एक है कोमल, एक्स वाय जेड है कोई। मुझे उससे नफरत है।'

ईशा ने सनी देओल के लिए खरीदी ढाई-किलो की राखी,रक्षाबंधन के ऐड में रीक्रिएट किया 'दामिनी' फिल्म का डायलॉग

मुंबई। अभिनेत्री ईशा देओल रक्षाबंधन के मौके पर एक डिलीवरी ऐप के विज्ञापन में नजर आई हैं। इसमें उन्होंने अपने भाई और अभिनेता सनी देओल की फिल्म 'दामिनी' के मशहूर डायलॉग 'ढाई

किलो का हाथ' को रीक्रिएट किया है। वीडियो में ईशा इस डायलॉग में रक्षाबंधन का ट्विस्ट जोड़ते हुए भाई सनी के लिए 'ढाई किलो की राखी' मंगवाती दिख रही हैं। 'दामिनी' फिल्म के डायलॉग को रीक्रिएट किया-विज्ञापन में ईशा देओल कहती नजर आती हैं कि जब भैया का ढाई किलो का हाथ उठता है तो सब तालियां बजाने लगते हैं। इसके बाद वे मजाकिया अंदाज में पूछती हैं कि यह हाथ इतना लेजेंड्री क्यों है। वीडियो में इस डायलॉग पर एक छोटा एक्सपेरिमेंट करके दिखाया गया है। इसके बाद ईशा डिलीवरी ऐप के जरिए अपने भाई सनी देओल के लिए खास 'ढाई किलो की राखी' मंगवाती हैं और उसे खुशी से दिखाती हैं। सोशल मीडिया पर फैंस ने की बॉन्ड की तारीफ- सोशल मीडिया पर वीडियो देखने के बाद फैंस कमेंट सेक्शन में लगातार अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। यूजर्स ने इसे भाई-बहन के बीच का बहुत प्यारा रिश्ता बताया है। कुछ फैंस ने इसे 'तारा सिंह' के किरदार से जोड़ा, तो वहीं एक यूजर ने लिखा कि सनी पाजी का ढाई किलो का हाथ और ईशा की ढाई किलो की राखी ही असल विरासत है। सनी देओल की फिल्मों को हमेशा सपोर्ट करती हैं ईशा- ईशा देओल सौतेली बहन होने के बावजूद अपने भाइयों सनी और बॉबी देओल के काफी करीब हैं और उन्हें हमेशा सपोर्ट करती हैं। वे अक्सर उनकी फिल्मों के प्रमोशन और स्क्रीनिंग में शामिल होती हैं। हाल ही में उन्होंने सनी की फिल्म 'बंटवारा 1947' की तारीफ करते हुए लोगों से इसे देखने की अपील की थी। इसके अलावा वे फिल्म 'बॉर्डर 2' की स्पेशल स्क्रीनिंग में भी नजर आई थीं। बचपन से बांधती आई हैं राखी, परिवार के रिश्तों में आया सुधार- ईशा ने कई बार बताया है कि वे बचपन से ही सनी और बॉबी को राखी बांधती आ रही हैं। लोग उनके रिश्ते के बारे में जानना चाहते हैं, लेकिन वे इसे जाहिर करना जरूरी नहीं मानतीं।

शर्मिला ने कहा था- वंदे मातरम के 2 अंतरे अच्छे, शर्मिला टैगोर से कंगना बोलीं- हिंदू-मुस्लिम सोच से बाहर आइए,कला-कविता पर विचार इतने छोटे क्यों

मुंबई। एक्ट्रेस शर्मिला टैगोर की वंदे मातरम पर टिप्पणी के बाद कंगना रनोट ने प्रतिक्रिया दी है। कंगना ने सोशल मीडिया पर कहा कि हिंदू-मुस्लिम सोच से बाहर आइए। एक कलाकार के तौर पर मैं हैरान हूं कि कला और कविता को लेकर उनकी सोच इतनी छोटी और बनावटी कैसे हो सकती है। शर्मिला टैगोर ने कहा था कि वंदे मातरम के कुछ हिस्से एक ईश्वर को मानने वाले लोगों की आस्था से मेल नहीं खा सकते। गीत में कई देवताओं का जिक्र है। इस गीत के दो अंतरे ही अच्छे हैं। कंगना ने शर्मिला टैगोर के इंटरव्यू का वीडियो अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर शेयर किया। उन्होंने लिखा, 'मैं खुश हूं कि शर्मिला जी ने वंदे मातरम को लेकर अपनी आपत्ति के बारे में बात की। किसी भी कविता या गीत में शब्द रूपक होते हैं। कवि या कलाकार मनचाहा असर पैदा करने के लिए हर तरह की कल्पना करता है और असंभव लगने वाली समानताएं खींचता है। विवेकानंद ने कहा था कि मुझे ऐसे युवा चाहिए, जो लोहे जैसे बने हों, जिनकी हड्डियां फौलाद की हों और जिनकी नसों में बिजली दौड़ती हो। विवेकानंद मौसम का अनुमान नहीं बता रहे थे। वह केवल शक्ति को जगाने की मांग कर रहे थे। कृपया हिंदू-मुस्लिम सोच से बाहर आइए। भले ही हम एक ईश्वर में विश्वास करते हों, डॉक्टर भी ताकत को शक्ति कहते हैं। आइए, एक-दूसरे को अपनों की तरह अपनाएं। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं और उस जोरदार तरीके से गले मिलने से भी मुझे परेशानी नहीं है, जैसे आप हमेशा मिलती हैं।' शर्मिला ने कहा था- एक ईश्वर को मानने वालों के लिए मुश्किल-शर्मिला टैगोर ने न्यूज एजेंसी आईएएनएस के साथ बातचीत में कहा, 'बहुत से धार्मिक लोग एक ही ईश्वर में विश्वास करते हैं, कई ईश्वरों में नहीं। वंदे

मातरम में एक अंतरा है, जिसमें कई देवताओं का जिक्र है। जो लोग एक धर्म, एक ईश्वर में विश्वास करते हैं, उनके लिए 'वंदे काली, वंदे दुर्गा' कहना मुश्किल है। अगर हम भारत के सभी धार्मिक लोगों को साथ लेकर चलें तो वंदे मातरम पहले दो अंतरे बहुत अच्छे हैं।' हालांकि, शर्मिला टैगोर ने अब तक कंगना के कमेंट पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। कंगना के हाल में दिए 3 बयान चर्चा में- जेन-ज़ी गटर जनरेशन है- जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के प्रोटेस्ट में पहुंचे स्टूडेंट पर कंगना ने कहा था, 'मैंने अपनी जिंदगी में कभी एक जगह पर इतनी बदसूरती नहीं देखी। जेन-ज़ी के विरोध प्रदर्शनों की ये रील्स उल्टी लाने वाली हैं। जिस तरह से वे बात करते हैं और जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल करते हैं। मैंने अपनी जिंदगी में कभी भी हर एक फ्रेम में सब कुछ इतना खटकने वाला और इतना भद्दा एक साथ नहीं देखा। मैं उन्हें गटर जनरेशन कहती हूं। उनमें से कुछ के पास सिस्टम को देने के लिए कुछ भी नहीं है।' बयान पर विवाद बढ़ने के बाद कंगना ने कहा कि पूरे देश के युवाओं को 'गटरछाप' नहीं कहा था। उनका बयान जंतर-मंतर पर प्रदर्शन में मौजूद एक खास नस्ल को लेकर था। बाबा रामदेव मेरी जवानी के सपने न देखें- कंगना ने इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए बाबा रामदेव पर पलटवार करते हुए लिखा, 'बाबा जी, मेरी जवानी या बेडरूम के बारे में दिन में सपने मत देखिए। कम से कम मुझे कभी सुप्रीम कोर्ट से झूठे या फर्जी मेडिकल दावों को लेकर फटकार नहीं लगी। इसलिए मुझे चरित्र का पाठ मत पढ़ाइए। आपका चरित्र जैसा भी है, मेरा उससे कहीं बेहतर है।' बाबा रामदेव ने एक टीवी प्रोग्राम में कंगना को लेकर कहा था, 'उनका क्वालिफिकेशन क्या है? उनका बचपन कैसा रहा है? उनकी जवानी कैसी रही है? उनके पहले के कारनामे कैसे रहे हैं? मैं ऐसे लोगों के बारे में बात नहीं करना चाहता। ऐसे किसी भी देश के जवान को, जेन-ज़ी को गटर-पटर बोलना, ये बिगड़े हुए दिमाग की निशानी है।' कुछ महिलाएं यौन संबंधों को आजादी बताती हैं- कंगना ने पोस्ट में लिखा था, 'पश्चिमी सोच से प्रभावित भारतीय महिलाओं की एक नई पीढ़ी सामने आई है। इनमें से कुछ के पास समाज को देने के लिए कुछ नहीं है। वे अच्छी गृहिणी बनने के लिए भी सक्षम नहीं हैं। इसके बावजूद वे अपनी आजादी का दिखावा करती हैं। नशा, शराब और अनगिनत यौन संबंधों को अपनी आजादी बताती हैं।'

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।